किसान, खेतिहर। भिक्षा=(सं० जा०) भीख। कन्या=(सं० जा०) लड़की, बेटी। उत्तम=(विशे०) अच्छी। तले=(अव्य०) नीचे। समाधि लग गयी=ध्यान में मग्न हो गये। ईश्वरीय=(विशे०) ईश्वर का। ज्ञान=(सं० भा०) बोध, समझ। स्थान=(सं० भा०) जगह। वृक्ष=(सं० जा०) पेड़, दरख़्त।

(पृष्ठ ७)

पुनीत=(विशे०) पवित्र, पाक। यात्री=(सं० भा०) मुसाफ़िर, बटोही। दर्शन=देखना, भेंट। उपदेश=(सं० भा०) शिक्षा, नसीहत। सन्देश=(सं० भा०) समाचार, ख़बर, सँदेशा। सिद्धान्त=(सं० भा०) उसूल, मत। सीधासादा=(अव्य०) साधारण, सहल। बोध-गम्य=समझ में आजाने वाला। बन्धन=(सं० भा०) रुकावट, रोक, क़ैद। दमन=(क्रि० सकर्म०) रोकना, मारना। चक्कर=फेर, फेरा। फल=(सं० भा०) नतीजा। शुभ=(विशे०) अच्छे। अहिंसा=(सं० भा०) (अ+हिंसा= मारना) किसी को सताने की अरुचि। अन्य=और। प्रचलित= जारी। दृश्य=(सं० भा०) नज़ारा। शिकारी=(सं० जा०) जानवरों को मारने वाला, शिकार करने वाला। आखेट=(सं० जा०) शिकार। इष्ट=(विशे०) इच्छित, चाहा हुआ। कातर= (विशे०) अधीर, व्याकुल, भयभीत। कातर नेत्रों से दया की भिक्षा माँग रहा है=डर कर दया चाहता है। प्रभाव पड़ा= असर हुआ।

(पृष्ठ ८)

रुचि=(सं० भा०) इच्छा, चाह। अनुकूल=मुवाफ़िक़। शिष्य=(सं० जा०) चेला, शागिर्द। समान=(अव्य०) बराबर। सम्मिलित=शामिल, मिले हुए। भिक्षु=(सं० जा०) भिखारी। सत्कर्म = (सं० भा०) (सत्=अच्छे+कर्म) अच्छे काम। आजीवन=(क्रि० विशे०) तमाम आयु, उम्र भर। कीर्त्ति= (सं० भा०) बड़ाई, यश।

संन्यासी=(सं० जा०) चतुर्थ आश्रम में रहने वाला, त्यागी, यती। आश्रम चार हैं=ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास। [illegible]=(विशे०) दुःखी, अप्रसन्न। वास्तव में=असल में। ज्ञानी=(विशे०) समझदार। अनुभवी=(विशे०) जानकार। हर्ष=(सं० भा०) प्रसन्नता, ख़ुशी। आग्रह=(सं० भा०) हठ, ज़िद। दृष्टि (सं०भा०) नज़र। चाव=(सं० भा०) शौक़।

(पृष्ठ ६)

एक मात्र=(विशे०) अकेले, इकलौते। सदाचार=अच्छा चालचलन। अतिथि=(सं० जा०) (अ+तिथि=तारीख़)=जिसके आने की तारीख़ न हो, मेहमान, पाहुना। रत=लीन, तत्पर। विजय=(सं० भा०) जीत, जय। मर्म=(सं० भा०) भेद, सार। स्वर्गवास=(सं० भा०) मृत्यु, देवलोक। कल्याण=(सं० भा०) मौज, भलाई। निरन्तर=(अव्य०) (निर्=नहीं+अन्तर=फ़र्क़) हमेशा, सदा। उद्योग=(सं० भा०) उपाय, कोशिश। परिश्रम=(सं० भा०) मेहनत। इतिहास=(सं० जा०) तवारीख़। अजर=जो कभी वृद्ध न हो। अमर=(अ+मर) जो कभी न मरे। सर्वथा=(अव्य०) सब प्रकार से।

प्रश्नोत्तर।

प्रश्न (१)—बुद्ध का शैशव-काल में ऐसी कौनसी बात दिखाई देती थी, जिससे यह कहा जा सकता कि वे इतने महान पुरुष होंगे ?

उत्तर—वह थोड़े ही समय में शस्त्र और शास्त्र-विद्या में अति निपुण हो गये। इनका स्वभाव विचित्र था। वे एकान्त में रहना पसन्द करते थे राजसी ठाटबाट होने पर भी विषय-भोग की ओर मन न लगाते थे। वे सोचा करते थे कि यह राज्य, धन और यौवन तो अब

दीखता है नष्ट होनेवाला है और वह दुःख से छुटकारा पाने के उपाय सोचा करते थे।

प्रश्न (२)—महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का सार क्या था?

उत्तर—महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का सार यह है कि सत्य बोलकर, सदाचार का पालन कर, अतिथि की सेवा कर और सत्संगति आदि में रत रहकर मनुष्य अपने मन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और अन्त में मुक्त हो सकते हैं।

प्र० (३)—महात्मा बुद्ध की शिक्षाएँ क्यों इतनी लोक प्रिय हुईं।

उत्तर—इसलिए उनकी शिक्षायें लोक प्रिय हुईं; कि वह ऊँच नीच सभी प्रकार के मनुष्यों को एक समान समझते थे और साधारण बोलचाल में उपदेश देते थे। उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र राहुल तक को शिष्य बना लिया था।

(पृष्ठ १०)

प्र० (४)—प्रशंसा नहीं की जा सकती—का क्या अर्थ है।

उत्तर—उनका इतना अधिक यश है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

प्र० (५) एकान्तवास, विषय-भोग, विरक्ति, भिक्षु, शरीरपात, अहिंसा, आखेट, आजीवन से क्या समझते हो।

उत्तर—एकान्तवास=अकेला रहना। विषय-भोग=सांसारिक एशोआराम। विरक्त=वैराग्य,दुनिया के झगड़ों से अलग रहना। भिक्षु=बौद्ध मत के साधु और उपदेशक। शरीरपात=मृत्यु, मरजाना। अहिंसा=किसी जीव को न सताना। आखेट=शिकार। आजीवन=तमाम उम्र।

पाठ ३—सच्चा आनन्द।

कई·······शोक नहीं।

शब्दार्थ—पत्र=(सं ना०) वृक्ष के पत्ते। पतझड़=एक मौसम का नाम है, जिसमें वृक्षों के पत्ते पीले होकर गिर जाते हैं। यह मौसम माह और फागुन के महीनों में होता है। मारे मारे=इधर उधर। सोच=(सं० भा०) फ़िक्र, चिन्ता। निज=(सर्वनाम) अपना। कर्त्तव्य=काम। शोक=(सं भा०) रंज, दुःख।

गद्य—कई पत्र पतझड़ होने से नीचे आ आ गिरते थे। वे सब साथ छूट जाने से मारे-मारे फिरते थे। मैंने पूछा—'क्यों रे पत्तो! तुम्हें मृत्यु का सोच नहीं है?' वे बोले—'निज कर्त्तव्य पाल कर मरने में कहाँ शोक है?'

भावार्थ—कितने ही पत्ते पतझड़ का मौसम आने से नीचे आ आ कर गिरते थे और अपने साथियों से अलग हो जाने के कारण इधर उधर मारे मारे फिरते थे। मैंने उनसे पूछा कि क्यों रे पत्तो! क्या तुमको मृत्यु का सोच नहीं है, तब उन्होंने उत्तर दिया कि अपना कर्त्तव्य करके मरने में कहाँ शोक होता है अर्थात् नहीं होता है॥१॥

दलित·······प्रयाण।

शब्दार्थ—दलित=(विशे०) कुचला हुआ, ठुकराया हुआ। कुसुम=(सं० ना०) फूल। दर्शाकर=(पूर्व कालिक क्रि०) दिखलाकर। सहर्ष=(क्रि० विशे०) (स=सहित+हर्ष=खुशी) प्रसन्न होकर, खुशी से। पूर्ण=पूरा। प्रयाण=(सं० भा०) यात्रा, गमन।

गद्य—मैंने दलित कुसुम से दुःख दर्शाकर प्यार करके पूछा—"क्या तुम अपनी मृत्यु देखकर कुछ सोच विचार करते हो।" वह बोल उठा—"नहीं, नहीं, बस मैं सहर्ष प्राण दे दूँगा क्योंकि मैं पूर्ण कर्त्तव्य पालकर अब प्रयाण कर रहा हूँ।

पद्यार्थ—मैंने कुचले हुए फूल से दुःख प्रकट करके प्यार से पूछा कि तुम अपनी मृत्यु को देखकर क्या कुछ सोच करते हो ? तो वह (फूल) कहने लगा कि नहीं-नहीं मैं प्रसन्नता से अपने प्राण दे दूँगा। क्योंकि मैं कर्त्तव्य पूरा करके अब जारहा हूँ॥२॥

फले ········है काम।

शब्दार्थ—थके=(विशे०) हारे हुए। जनों=(सं० जा०) आदमी। विश्राम=(सं० भा०) आराम। आम्र=(विशे०) आम। विटप=(सं० जा०) पेड़, वृक्ष। तरु=(सं० जा०) वृक्ष। मूर्ख= बेवकूफ़।

गद्य—फले आम ने थके जनों को छाया दे विश्राम दिया। किन्तु उन्होंने फलों को तोड़ आम्र-विटप को काट दिया। मैं तरु से बोला—हे तरुवर, अब इन्हें विश्राम न देना। वह बोला—मूर्ख! यहाँ से हट, मेरा यही काम है।

पद्यार्थ—फले हुए आम के वृक्ष ने हारे थके मनुष्यों को छाया देकर आराम दिया। मगर उन्होंने (मनुष्यों ने) फल तोड़ कर आम के पेड़ को नष्ट कर दिया था। तब मैं उस वृक्ष से कहने लगा कि हे श्रेष्ठ वृक्षों! अब तुम इनको आराम न देना। वह कहने लगा कि अरे मूर्ख, तू यहाँ से चला जा, मेरा तो केवल यही एक काम है कि दूसरों को आराम दूँ॥३॥

मैं·········कर्त्तव्य।

शब्दार्थ—उद्योग=(सं० भा०) मिहनत, परिश्रम। तले=(अव्य०) नीचे। भोग=(सं० भा०) आराम, हर्ष।

(पृष्ठ ११)

तिरस्कार=अनादर। भवितव्य=होनेवाली बात, आगे आनेवाली बात। जग=(सं० जा०) संसार।

गद्य—मैं नन्हीं चींटी से बोला, क्यों उद्योग करती है। पाँव तले दब कर मर जायगी। इस का भोग न कर पायगी। वह तिरस्कार करती हुई बोली। कौन भवितव्य देख आया है। जग में आकर क्या भला किया जो पूरा कर्त्तव्य न किया।

पद्यार्थ—मैंने एक छोटीसी चींटी से कहा कि तू इस प्रकार क्यों मिहनत करती है। पैर के नीचे दब कर तू मर जायगी और इस परिश्रम का कुछ आराम न पा सकेगी। वह (चींटी) अनादर करती हुई बोली कि होनेवाली बात को कौन देख आया है इस संसार में आकर जिसने अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं किया है, भला उसने संसार में क्या किया अर्थात् कुछ नहीं किया।

अपना ········ किया।

शब्दार्थ—टुकरा कर=(पूर्व कालिक क्रिया) ठोकर खाकर। कूप=(सं० जा०) कुआँ। शिलाओं=(सं० जा०) पत्थर। एक मात्र=(अव्य०) केवल, सिर्फ़।

गद्य—एक घड़ा रस्सी में अपना गला बँधा पानी लाया उस बेचारे ने कूप शिलाओं से टकरा दुःख पाया; मैंने पूछा—मूर्ख घड़े! तूने इससे क्या लाभ लिया? वह बोला—छिः मैंने अपना एक मात्र कर्त्तव्य किया।

पद्यार्थ—एक घड़ा अपना गला रस्सी में बँधवा कर पानी लाया, परन्तु कुए के पत्थरों से टक्कर खाकर उस बेचारे को बड़ा कष्ट हुआ। तब मैंने उससे पूछा—अरे मूर्ख घड़े! इससे तूने क्या लाभ पाया? तब वह मुझसे घृणा करके बोला कि मैंने तो केवल अपना कर्त्तव्य-पालन किया है।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—इस पाठ से क्या शिक्षा मिलती? सच्चा आनन्द किस बात में है क्या कोई झूठा आनन्द भी है?

उत्तर—इस पाठ से हमको यह शिक्षा मिलती है कि चाहे कितना ही कष्ट पड़े अपना कर्त्तव्य पूरा करने के लिए उन्हें सहन करना चाहिए।

सच्चा आनन्द अपना कर्त्तव्य पूरा करने में आता है। झूठा आनन्द सांसारिक बन्धनों में होता है।

प्र० (२)—शोक, दलित, कुसुम, विटप, भवितव्य, सहर्ष शब्दों का प्रयोग कर छोटे-छोटे वाक्य बनाओ।

उत्तर—शोक—मनुष्य को चाहिए कि कभी शोक न करे।

दलित—श्रीरामचन्द्रजी ने रावण के घमण्ड को दलित किया।

कुसुम—सोहन की बग़ीची अनेक प्रकार के कुसुमों से भरी हुई है।

विटप—हमारे गाँव में एक बहुत पुराना नीम का विटप है।

भवितव्य—मनुष्य का भवितव्य किसी ने नहीं देखा है।

सहर्ष—महेश अपने माता पिता की आज्ञा सहर्ष पालन करता।

प्र० (३)—समझाओ कर्त्तव्य पालन में क्यों आनन्द मिलता है।

उत्तर—जब हम यह देखते हैं कि छोटे छोटे जानवर जैसे चींटी तक अपने कर्त्तव्य में दिनरात लगी रहती है और किसी पुरुष का दुःख न मान कर कार्य्य में तत्पर रहती है, तब फिर भला मनुष्य अपना कर्त्तव्य करने में क्यों न आनन्द पावेगा।

पाठ ४—उपयोगी पशु।

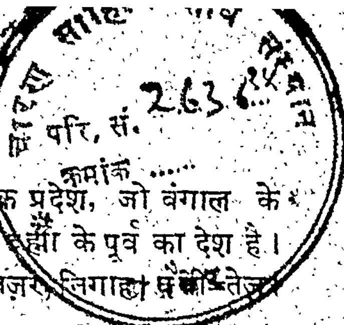
उपयोगी=(विशे०) लाभदायक, फ़ायदेमन्द। पशु=(सं० जा०) जानवर, चौपाये।

भिन्न-भिन्न=अलग-अलग। भाग=(सं० भा०) हिस्सा। निवास=रहना। विशिष्ट=(विशे०) उत्तम। सहायता=(सं० भा०) मदद। सन्देह=(सं० भा०) शक, संशय। याक=(सं० जा०) यह पहाड़ी जानवर बैल से मिलता-जुलता होता है और तिब्बत में अधिक पाया जाता है। ज़ेबरा=(सं० जा०) गर्म देश का जानवर होता है, दक्षिणी अफ्रीका में अधिक पाया जाता है। रेनडियर=(सं० जा०) यह बर्फ़ीले देश का जानवर है, जो बहुत ठण्डे देशों में पाया जाता है। यह बारहसिंगे से मिलता-जुलता है।

मरुभूमि=(तत्पु० समास) रेतीली ज़मीन, रेगिस्तान। ध्रुव=(विशे०) पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी सिरे कहलाते हैं। ध्रुव प्रदेश=(तत्पु० स०) ध्रुव के पास के मुल्क। बलिष्ठ=(विशे०) बलवान्, मज़बूत। परिश्रमी=(विशे०) मेहनती। मिश्र=(सं० व्यक्ति) अफ्रीका के महाद्वीप में एक देश का नाम है। प्रायः=बहुधा। सभ्य=शाइस्ता। प्रचार=रीति, रिवाज। उपयोगिता=(सं० भा०) लाभदायकता।

आदर=(सं० भा०) सत्कार, प्रतिष्ठा। प्राचीन=(विशे०) पुराना। श्रेष्ठ=(विशे०) उत्तम। चतुर=(विशे०) होशियार। स्वामि-भक्ति=(विशे०) स्वामी की सेवा करने वाला। मूल्य=क़ीमत। सन्तान=(सं० जा०) औलाद। मार्ग=(सं० जा०) रास्ता। सरलता से=आसानी से, सहज से।

अस्तित्व=(सं० भा०) होना। भारत=(सं० वि०) हिन्दुस्तान, आर्यावर्त।



(पृष्ठ १३)

ब्रह्मदेश=(सं० व्य०) भारत का एक प्रदेश, जो बंगाल के पूर्व में स्थित है। स्याम=(सं० व्या०) वहाँ के पूर्व का देश है। नेत्र=(सं० जा०) आँख। दृष्टि=(सं० जा०) नज़र, निगाह।

सिद्ध=(सं० भा०) साबित। लगातार=बेठहरे। यात्रा=सफ़र। निरी=केवल। निरन्तर=(अव्य०) हमेशा, सदैव। सस्ताये=आराम, ठहरे हुए। कूबड़=(सं० जा०) कुब्ब। लैपलैंड=एक देश का नाम है। शीत प्रधान=जहाँ जाड़ा अधिक हो, बहुत ठण्डा। ब्रुश=(सं० जा०) यह इङ्गलिश का शब्द है मगर अब आम भाषा में बोला जाता है, कपड़ा साफ़ करने की झाड़ू।

(पृष्ठ १४)

तम्बू=(सं० जा०) डेरा। वस्तुएँ=(सं० जा०) चीज़ें। खाद्य=(विशे०) खाने योग्य। पदार्थ=(सं० जा०) चीज़ें, वस्तुएँ। व्यवहृत=जो काम में लाया गया हो। चारापानी=(द्विगु० समास) दाना पानी। निर्वाह=गुज़र।

उच्चतम=(विशे०) सब से ऊँचा। लाभदायक=फ़ायदेमन्द। ऊबड़-खाबड़=(विशे०) ऊँचे नीचे।

विचित्र=(विशे०) अनोखी। महिमा=(सं० भा०) बड़ाई, गौरव। परिचय=जानकारी। विस्मित=अचम्भे, आश्चर्य में। सुभीते=(सं० भा०) आराम। उत्पन्न=(क्रि० सकर्म०) पैदा।

प्रश्नोत्तर

प्र० (१)—तुम्हारी समझ में सबसे उपयोगी कौनसा पशु है और क्यों ?

उत्तर—हमारी समझ में सबसे अधिक उपयोगी भैंस है क्योंकि वह तमाम देशों में पाई जाती है और दूध अधिक

देती है जिससे हमको घी दूध खाने को अधिक मिलता है।

प्र० (२)—तुम्हें सबसे अधिक बुद्धिमान कौनसा पशु मालूम पड़ता है और क्यों ?

उत्तर—सब जानवरों में घोड़ा सबसे अधिक बुद्धिमान होता है क्योंकि वह स्वामि-भक्त होता है।

प्र० (३)—मरुस्थल वालों को ऊँट से और लैंपलैंगड वालों को रेनडियर से क्या क्या लाभ होते हैं ?

उत्तर—ऊँट रेगिस्तान में ५-६ मन बोझ लादकर लगातार ५-६ दिन तक चलता रहता है और पानी तक रास्ते में नहीं पीता है और २४ घंटे तक बिना आराम किये हुए सवार को लेकर चला जाता है। लैंपलैंगड वालों को रेनडियर भी वैसा ही काम देता है जैसा ऊँट रेगिस्तान वालों को। रेनडियर १ घंटे में ६—१०मील चलता है दोनों के बाल और खाल भी मनुष्यों के बहुत काम आती है।

प्र० (४)—अफ्रीका के जङ्गलों में हाथियों की संख्या क्यों कम होगई थी, और कैसे रुकी ?

उत्तर—अफ्रीका के रहने वाले हाथी के दाँतों के लोभ से उनको मार डालते थे दूसरे वहाँ हाथी पाले नहीं जाते थे सरकार ने उनका वध करना बन्द करा दिया है।

प्र० (५)—अरबी ऊँट की क्या पहचान है मरुभूमि में ऊँट सबसे अधिक उपयोगी क्यों है ?

उत्तर—अरबी ऊँट की पहचान यह है कि उसके दो कूबड़ होते हैं औरों के एक ही कूबड़ होता है। रेगिस्तान में पानी बहुत कम पाया जाता है और ऊँट बिना पानी पिये

५-६ दिन तक बोझा लादे हुए चला जाता है और सवारी का ऊँट भी बिना आराम लिए २४ घंटे तक चलता रहता है। अन्य कोई जानवर रेगिस्तान में काम नहीं कर सकता है।

पाठ ५—जन्मभूमि।

जहाँ·········नाता।

शब्दार्थ—विधाता=ब्रह्मा, ईश्वर। ठौर=स्थान। मोद=(सं० भा०) आनन्द। बन्धु=(सं०.जा०) भाई। सत्यनाता=सच्चा प्रेम, सच्चा रिश्ता।

गद्य—विधाता हमें जहाँ जन्म देता है चित्त उसी ठौर में मोद पाता है। हमारे माता, पिता, बन्धु जहाँ हैं हमें उसी भूमि से सत्य नाता है।

पद्यार्थ— जहाँ ब्रह्मा हमको जन्म देता है उसी स्थान पर हृदय आनन्द पाता है। जिस जगह हमारे पिता, भाई और माता आदि हैं, उसी स्थान से हमारा सच्चा रिश्ता (प्रेम) है॥१॥

जहाँ·········रानी।

शब्दार्थ—वायु=हवा। जीवदानी=जीवन दान करने वाली। भिदा=भरा। सुवानी=अच्छी वाणी।

गद्य—जहाँ की जीव-दानी वायु मिली है (और) जहाँ का अन्न-पानी देह में भिदा (है) जहाँ की सुवानी जीभ में भरी है वह जन्म की भूमि भूमि-रानी है।

पद्यार्थ—जिस स्थान की हमको जीवन दान करने वाली हवा मिली है और जहाँ का शरीर में अन्न और पानी समाया

हुआ है और जीभ में जिस स्थान की सुन्दर वाणी भरी हुई है वही जन्मभूमि पृथ्वी की रानी है ॥ २ ॥

लगी·········होगी।

शब्दार्थ—न्यारी=अलग, पृथक्। निरोगी=रोग रहित, स्वस्थ। सुहाती=पसन्द होनी।

गद्य—जो धूल हमारी देह में लगी थी चित्त से कभी न्यारी न हो सकेगी जो देह को निरोगी बनाती रही (है) ऐसी धूल किसे न सुहाती होगी।

पद्यार्थ—जो धूल हमारी देह में लगी थी वह हमारे हृदय से कभी पृथक् न हो सकेगी जो हमारे शरीर को स्वस्थ (तन्दुरुस्त) बनाती रही है ऐसी धूल किस को पसन्द न होगी अर्थात् सबको पसन्द आवेगी ॥ ३ ॥

(पृष्ठ १६)

पिला·········सहारा।

शब्दार्थ—कष्ट=(सं० भा०) दुःख। टालती है=दूर करती है। भाँति=तरह। उदारा=(विशे०) दयालु, श्रेष्ठ। संकटों=दुःखों। सुतों=पुत्रों।

गद्य—माता हमें दूध पिला पालती है हमारे सभी कष्ट भी टालती है इसी भाँति जन्म की भू उदारा है संकटों में सदा सुतों का सहारा (है)।

पद्यार्थ—जिस तरह से माता हमको दूध पिलाकर पालती है और सब कष्टों को दूर करती है इसी प्रकार श्रेष्ठ जन्मभूमि है जो सदा अपने पुत्रों को दुःख में सहारा है ॥ ४ ॥

कहीं·········फूलती है।

शब्दार्थ—मही=पृथ्वी। मूर्ति=शक्ल, सूरत। छटा=शोभा। लोचनों=(सं० आ०) नेत्रों, आँखों। फूलती है=उपस्थित रहती है।

गद्य—कहाँ जा बसूँ (किन्तु) जी यही चाहता है जन्मको जो मही है (वह) सामने रहे। प्यारी मूर्ति कभी नहीं भूलती है (उसकी) छटा सदा लोचनों में झूलती है।

पद्यार्थ—चाहे हम किसी स्थान में जाकर रहें परन्तु हमारा हृदय यही चाहता रहता है कि हमारी जन्मभूमि हमारे सामने रहे। उसकी प्रिय मूर्त्ति हृदय से नहीं भूलती है और उसकी शोभा सदा आँखों में घूमती रहती है ॥ ५ ॥

यथा·······पसारा।

शब्दार्थ—तथा=जैसे। इष्ट=(विशे०) प्यारा। गेह=(सं० जा०) घर। पुरा=गाँव। पुरी=नगर। प्रान्त=सूबा। पसारा=फैलाव।

गद्य—यथा गेह इष्ट है त्यौंही पुरा है न एक अच्छा, न दूसरा बुरा है, यौं, पुरी, प्रान्त, देश भी हमारा है सभी ठौर जन्म-भू का पसारा है।

पद्यार्थ—जिस प्रकार हमको घर प्यारा है उसी तरह गाँव भी प्यारा है इन में से एक अच्छा है न दूसरा बुरा है अर्थात् दोनों समान प्रिय हैं। इसी प्रकार हमारा नगर, सूबा और सारा देश भी हमारा ही है और सभी जगह हमारी जन्मभूमि फैली हुई है ॥ ६ ॥

जिसे·······खिलेगा।

शब्दार्थ—भाती नहीं है=अच्छी नहीं लगती है। कृतघ्नी=गुनमेटा, अहसान फ़रामोश। खिलेगा=प्रसन्न होना।

गद्य—जिसे जन्म की भू नहीं भाती है जिसे देश की याद नहीं आती है ऐसा महा कृतघ्नी कौन मिलेगा क्या किसी का जी उसे देख खिलेगा।

पद्यार्थ—जिसको अपनी जन्मभूमि अच्छी नहीं लगती है और जिसे अपने देश की याद नहीं आती है, भला ऐसा गुन-

मेरा कौन मिलेगा और उसको देखकर किसका हृदय प्रसन्न होगा अर्थात् किसी का नहीं ॥ ७ ॥

धनी ········ भलाई।

शब्दार्थ—धनी=धनवान्। नामधारी=नाम वाला, यशस्वी। वृथा=फ़िज़ूल, व्यर्थ। मान=आदर, प्रतिष्ठा।

गद्य—बड़ा धनी या बड़ा नाम धारी हो जिसे जन्म की भू प्यारी नहीं है नीच ने मान-सम्पत्ति वृथा पाई, बुरे के बढ़े से क्या भलाई हुई है।

भावार्थ—कोई बड़ा नामवर हो अथवा कोई बड़ा यशस्वी हो और जिसे अपनी जन्मभूमि प्यारी नहीं है। उस नीच ने व्यर्थ ही प्रतिष्ठा और धन पाया है क्योंकि नीच के बढ़ने से क्या भला हुआ ॥ ८ ॥

जिन्हें ········ देशाभिमानी।

शब्दार्थ—मान=आदर, सत्कार।

(पृष्ठ १७)

जानी=पहचानी। देशाभिमानी=(देश+अभिमानी) देश पर अभिमान करने वाले।

गद्य—जिन्हें जन्म की भू का मान होगा उन्हें सदा भाइयों का ध्यान होगा। जिन्होंने भाइयों की दशा को न जाना उन्हें कौन देशाभिमानी कहेगा।

भावार्थ—जिनको अपनी जन्मभूमि का सम्मान है उनको सदा अपने भाइयों का ध्यान रहता है और जिन्होंने अपने भाइयों की दशा को नहीं पहिचाना उनको देश पर अभिमान करने वाला कौन कहेगा अर्थात् कोई नहीं कहेगा ॥ ९ ॥

कई........चुकाते।

शब्दार्थ—हेतु=कारण, सबब। जी खो चुके हैं=प्राण दे चुके हैं। निर्धनी=कङ्गाल। यथाशक्ति=शक्ति के अनुसार। ऋण कर्ज़।

गद्य—कई देश के हेतु जी खो चुके हैं अनेकों धनी निर्धनी हो चुके हैं कई उसे बुद्धि हो से बढ़ाते हैं वे ऋणों को यथाशक्ति चुकाते हैं।

पद्यार्थ—बहुत से देश के कारण अपने प्राणों का बलिदान् कर चुके हैं और बहुत से धनवान् कङ्गाल होचुके हैं। बहुत से सज्ञान अपनी बुद्धि से ही उसके ऐश्वर्य को बढ़ाते हैं और अपनी शक्ति के अनुसार देश के ऋण को चुकाते हैं॥ १०॥

दयानाथ........द्वारा।

शब्दार्थ—दयानाथ=दया के स्वामी अर्थात् ईश्वर। छाती पसीजे=हृदय में दया का भाव उत्पन्न हो। सत्कर्म=अच्छे काम।

गद्य—दया नाथ! हमें ऐसी बुद्धि दीजे, देश की दशा देख छाती पसीजे। प्यारा देश दुखों से बचाते रहें, उसे सत्कर्म्म द्वारा सभ्य बनावें।

पद्यार्थ—हे ईश्वर! आप हमको ऐसी बुद्धि दीजिये कि जिससे देश की दशा देखकर हृदय में दया उमड़ आवे और अपने प्यारे देश को कष्टों से बचाते रहें और अच्छे कर्मों द्वारा उसे सभ्य बनावें॥ ११॥

प्रश्नोत्तर।

प्र० १—निम्नलिखित शब्दों के द्वारा वाक्य बनाओ।

नाता, सङ्कट-लोचन, कृतघ्नी, यथाशक्ति, सभ्यदेशाभिमानी।

उत्तर—मुझमें और कृष्ण में मित्रता का नाता है। सङ्कट पड़ने पर धैर्य्य से काम लेना चाहिये। हिरण के लोचन सबसे

अच्छे होते हैं। कृतघ्नी मनुष्य से घृणा करते हैं। मैं आपके इस कार्य्य में यथा-शक्ति सहायता दूँगा मनुष्य को सभ्य होना चाहिये। प्रत्येक देश में बहुत से मनुष्य देशाभिमानी होते हैं।

प्र० २—इस कविता का पाठ करने से तुम्हें किस बात का ज्ञान होता है ? क्या तुम भी अपनी जन्म-भूमि को प्यार करते हो ? अपनी जन्म-भूमि का हाल लिखो।

उत्तर—इस कविता का पाठ करने से हमको यह ज्ञान प्राप्त होता है कि जन्म-भूमि को प्यार करना चाहिये और उसे दुःख से बचाते रहना चाहिये। हाँ, हम भी अपनी जन्म-भूमि को प्यार करते हैं। हमारी जन्म-भूमि भारतवर्ष है जो दो हज़ार मील लम्बा और चौड़ा है उत्तर में हिमालय पहाड़ दीवार की तरह स्थित है और बाक़ी तीन तरफ़ से समुद्र मातृ भूमि के चरणों को धोता रहता है जिसमें गंगा और जमुना सी पवित्र नदियाँ हैं यहाँ की ज़मीन में अन्य देशों की निस्बत बहुत अधिक अन्न पैदा होता है जिसको हमही नहीं बल्कि अन्य देशों के लोग भी खाकर अपना जीवन निर्वाह करते हैं हमारे देश के सिवाय अन्य किसी देश में छः ऋतु नहीं होती हैं अधिक क्या हमारे देश में आनन्द की समस्त चीज़ें अन्य मुल्कों से बहुत हैं।

प्र० ३—तुम पर जन्म-भूमि के कौन से उपकार हैं ?

उत्तर—माँ के पेट से पैदा होते ही हमको मातृ-भूमि अपनी गोद में सबसे प्रथम लेती है इसी की वायु से हमारा जीवन है इसी का पैदा किया हुआ अन्न हमारे शरीर में है जिससे हम बलिष्ट रहते हैं और हमारी जीभ में इसी की सुन्दर वाणी भरी हुई है और माता के समान हमारा पालन पोषण करती है और दुःखों से बचाती है।

शिक्षा—इस पाठ से हमको यह शिक्षा मिलती है कि अपनी मातृ-भूमि का सत्कार करना चाहिये और देशाभिमानी होना चाहिये ।

पाठ ६–परिश्रम ।

परिश्रम=(सं० भा०) मिहनत, उद्योग, कोशिश । आवश्यक=(विशे०) ज़रूरी । मज़दूर=(सं० जा०) मिहनती, कुली । सम्भव=मुमकिन है । चिन्ता=(सं० भा०) फ़िक्र ।

(पृष्ठ १८)

हाथ पर हाथ=ठाली, वेकार । निठल्ल=(क्रि० विशे०) वेकाम । घृणित=(विशे०) नफ़रत के योग्य । अनमोल=(विशे०) (अन=नहीं+मोल) जिसका मोल नहीं, बहुत क़ीमती ।

आलस्य=(सं० भा०) सुस्ती । उमङ्ग=(सं० भा०) जोश, धुनि, लहर । खुल कर=(विशे०) अच्छी तरह, ज़ोर से । देह=(सं० जा०) शरीर, बदन । जड़=अचेतन । एकाएक=अचानक । विपत्ति=(सं० भा०) दुःख, कष्ट । रक्षा=बचाना । साहस=(सं० भा०) हिम्मत । शरीर काँटा होगया = बहुत कमज़ोर होगया, दुबले पतले । स्थिति=(सं० भा०) दशा, हालत । धुन=लगन ।

तड़के=सुबह । चाल=(सं० भा०) रीति । कोसों दूर भागता था=पास नहीं आता था । स्फूर्ति=(सं० भा०) फुर्ती । प्राचीन=(विशे०) पुराना । वृद्ध (सं० जा०) बूढ़े । नवयुवक=(सं० जा०) नौजवान । समान=(अव्य०) बराबर ।

(पृष्ठ १९)

कथन=(सं० भा०) कहना, शब्द । बेगार=किसी मज़दूर से ज़बरदस्ती काम लेना और उसको कुछ मज़दूरी न देना या

देर से बहुत कम मज़दूरी देना। सम्पूर्ण=(विशे०) तमाम। कट जाता है=(क्रि०) व्यतीत हो जाता है। ख़बर=(सं० भा०) सुनना। ठिकाना है=(क्रि०) पता है। लापरवाही=बेफ़िक्री।

परिपाक=(क्रि०) हज़म, पचना। ख़ूब=(अव्य०) बहुत। डाक्टर=(सं० जा०) अंग्रेज़ी दवाओं से इलाज करने वाला वैद्य। हकीम=(सं० जा०) वैद्य। सम्पत्ति=(सं० जा०) धन, दौलत। व्यय=ख़र्च। आय=(सं० जा०) आमदनी। देश-देशान्तरों=देश विदेश, सर्वत्र। कीर्त्ति=(सं०भा०) बड़ाई, यश। करोड़पति=(सं० जा०) जिस के पास करोड़ों की सम्पत्ति हो।

बाल्यकाल=(सं० भा०) बचपन, लड़कपन। चपरासी=(सं० जा०) नौकर, चपरास रखने वाला। वेतन=नौकरी, मज़-दूरी। विलायत=(सं० वि०) अंग्रेज़ों का देश, इङ्गलैंड। अर्थ=धन। संचय=(क्रि० सकर्म०) इकट्ठा। किराया=भाड़ा।

(पृष्ठ २०)

अमरीका=(सं० व्य०) एक देश का नाम है। कङ्गाल=(सं० जा०) ग़रीब, निर्धन। कुशलता=(सं० भा०) होशियारी=चतुराई। व्यापार=(सं० जा०) तिजारत, सौदागरी। साहूकार=(सं० जा०) धनाढ्य, धनवान।

अवस्था=(सं० भा०) उम्र। सहस्त्र=(विशे०) हज़ार। अन्त=(अव्य०) आख़ीर। कमाया=(क्रि० सकर्म०) पैदा किया। दान=(सं० जा०) ख़ैरात, पुण्य।

एकत्र करके=(पूर्व० क्रि०) इकट्ठा करके, जमा करके। गड्ढा=(सं० जा०) ज़ेवर=गहना। भाग्य=तक़दीर। स्वर्गीय=(विशे०) मरे हुए। व्याख्याता=(सं० जा०) उपदेश देने वाला, लेक्चरार। गंजा=(विशे०) गनपन। हकलाता था=तुतलाता था, रुक रुक कर बोलता था। अटक=(सं० भा०) रुक। बाधा=

(सं० भा०) रोक, रुकावट। किंचित्=(अव्य०) थोड़ी भी, लेश-मात्र। परवा=(सं० भा०) फ़िक्र, चिन्ता। एकान्त=अकेले। व्याख्यान=उपदेश, लेक्चर। चेष्टा=(सं० भा०) इच्छा। जिह्वा=(सं० जा०) जीभ। अभ्यास=(सं० भा०) मश्क़।

(पृष्ठ २१)

अनुपम=(विशे०) अपूर्व, अनोखा। अमर=(सं० भा०) जीवित, ज़िन्दा।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—निम्नलिखित शब्दों तथा वाक्यांशों को लेकर एक एक वाक्य बनाओ हवा हो जायगी, भाग्य ठोक कर, प्रसिद्ध, कुशलता, साहूकार।

उत्तर—अगर तुम अपने कार्य को देख भाल न करोगे तो तुम्हारी सब आशायें हवा हो जाँयगी।

उसने भाग्य ठोककर कहा कि यह मेरी ही ग़लती थी। पी० सी० द्वादशश्रेणी की चक्रवर्ती बड़ी प्रसिद्ध है। चक्रवर्ती के बनाने वाले ने बड़ी कुशलता से उसे तय्यार किया है।

वह बड़ा साहूकार है।

प्र० (२)—डिमास्थनीज़ के समान और किसी परिश्रमी मनुष्य का हाल बताओ।

उत्तर—मास्टर साहब—ये अमेरिका के शिकागो-शहर के रहने वाले हैं इन्होंने बाल काल में खेतों पर मज़दूरी की और थोड़े ही दिनों में कुछ रुपया इकट्ठा कर लिया इस रुपये से उसने गहना बेचने की फेरी लगाई इस व्यापार से इतनी उन्नति की कि आज वह सेठ, मास्टर साहब के नाम से प्रसिद्ध हैं प्रतिष्ठा और धन दोनों

चीजें उनके परिश्रम के कारण उनके पास विद्यमान हैं ?

प्र० (३)—परिश्रम न करने से क्या हानि होती है ?

उत्तर—अगर तुम परिश्रम न करोगे तो तुम को आलस्य घेर लेगा और तुम्हारा सारा उत्साह नष्ट हो जायगा न तो तुमको खुल कर भूख ही लगेगी और न भले प्रकार नींद ही आवेगी और धीरे धीरे यह देह भी जड़ हो जायगी और शरीर सूख कर काँटा हो जायगा और यकायक आपत्ति आने पर तुमको अपनी प्राण रक्षा करने का साहस भी न रहेगा।

प्र० (४)—तड़के उठने और नहाने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर—जो तड़के उठते और नहाते हैं उनके पास से आलस्य कोसों दूर भागता है और शरीर में फुर्ती आती है और हर काम करने को जी चाहता रहता है।

शिक्षा—हमको चाहिये कि सदैव परिश्रम करें।

पाठ ७—गोपाल कृष्ण गोखले।

मातृभूमि=(सं० जा०) जन्मभूमि। सेवक=(सं० जा०) दास, नौकर। देशवासियों=(सं० जा०) देश के रहने वाले। बाल्यावस्था=(सं० भा०) बचपन, लड़कपन। दीन हीन=(विशे०) गरीब। असहाय=(विशे०) जिसका कोई सहायक न हो, अनाथ। सहायता=(सं० भा०) मदद। प्रशंसा=(सं भा०) बड़ाई। तत्परता=(सं० भा०) परिश्रम, मिहनत। निभाया=(क्रि० सकर्म०) पूरा किया।

(पृष्ठ २२)

प्रान्त=(सं० जा०) सूबा, प्रदेश। यद्यपि=अगर्चे। विशेष=(विशे०) बहुत, अधिक। सम्पन्न=(सं० जा०) भरे हुए,

धनवान्। तथापि=तोभी। प्रतिष्ठित=(क्रि० विशे०) प्रसिद्ध, मशहूर। तीखी=(सं० भा०) पैनी, तेज़, तीव्र। परीक्षा=(सं० भा०) इम्तिहान। उत्तीर्ण=(क्रि० अकर्म०) पास, सफल। इंजिनिअर=(सं० जा०) (Engineer) वह इङ्गलिश भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है इमारत या यन्त्र विद्या का जानने वाला। धनोपार्जन=(धन+उपार्जन=पैदा) धन पैदा करना। रुचि=(सं० भा०) इच्छा, चाह। स्वयं=आप। मौज उड़ाना=(क्रि० सकर्म०) भोग करना, आनन्द मनाना। अपेक्षा=सिवाय। यथाशक्ति=(अ०य० समास) जैसी सामर्थ्य, जैसी ताक़त। आजीवन=तमाम, उम्र, ज़िन्दगीभर। सुप्रसिद्ध=विख्यात। व्रत=(सं० भा०) नियम, प्रण। धारण किया=(क्रि० सकर्म०) ग्रहण किया। साधारण=(विशे०) मामूली। निर्वाह=(सं० भा०) गुज़र। मासिक=(विशे०) माहवारी। वेतन=(सं० जा०) नौकरी, तनख़्वाह। योग्यता=(सं० भा०) लियाक़त।

(पृष्ठ २३)

अर्थशास्त्र=(तत्पु० समा०) (अर्थ=धन+शास्त्र) धन पैदा करने की विद्या। इतिहास=(सं० जा०) तवारीख़। गणित=(सं० जा०) हिसाब। पंडित=(सं० जा०) विद्वान्। अल्प=(विशे०) थोड़ा। कीर्त्ति=(सं० भा०) बड़ाई, यश। विद्वत्ता=(सं० भा०) बुद्धिमानी। गम्भीरता=(सं० भा०) धीरता। कार्य तत्परता=(सं० भा०) काम करने की लगन। विश्व-विद्यालय=(सं० जा०) कालिज, ऊँची शिक्षा देने वाला स्कूल। संचालकों=(सं० जा०) चलाने वाले। उक्त=(विशे०) ऊपर कहे हुए। सदस्य=(सं० जा०) सभासद, मैम्बर। भूतपूर्व=(विशे०) वर्त्तमान से पहले। प्रिंसिपल=(सं० जा०) हेडमास्टर, मुख्याध्यापक। गर्व=(सं० भा०) घमण्ड, अभिमान। वास्तव में=दरअसल। सर्वस्व=(सं० भा०) तमाम,

सब कुछ । अर्पण=(क्रि० सकर्म०) दिया, सौंपा । उन्नत= तरक्की । चेष्टा=(सं० भा०) इच्छा । संग्रह=(क्रि० सकर्म०) इकट्ठा, जमा । भव्य=(विशे०) सुन्दर, उत्तम । घोर=(विशे०) कठिन, बहुत । झलक=(सं० भा०) चमक ।

महामति=(विशे०) विद्वान् । शिष्य=(सं० जा०) चेला । भारतीय=(विशे०) भारत का, हिन्दुस्तान का ।

(पृष्ठ २४)

उज्वल=(विशे०) साफ़, स्वच्छ । रत्न=(सं० जा०) जवाहिरात । व्यक्ति=(सं० जा०) आदमी । अवस्था=(सं० भा०) दशा, हालत । हाईकोर्ट=यह इङ्गलिश का शब्द है (High Court,) (हाई=ऊँचा+कोर्ट=कचहरी) ऊँची कचहरी । जज=(सं० जा०) यह भी इङ्गलिश का शब्द (Judge) है मुंसिफ़, न्यायाधीश । न्यायाधीश=(सं० जा०) न्याय करने वाला, मुंसिफ़ । छू तक नहीं गया=बिलकुल नहीं था । सारल्य=(सं० भा०) सरलता, सादगी । कथा=(सं० जा०) कहानी, क़िस्सा । प्रचलित=जारी है । मार्ग=(सं० जा०) रास्ता । वृद्धा=बुढ़िया । तनिक=(विशे०) सहारा । तुरन्त=(क्रि० विशे०) फ़ौरन, शीघ्र । सम्मान= (सं० भा०) आदर, सत्कार । विलक्षण=(विशे०) अद्भुत अनोखा । प्रतिभा=(सं० भा०) बुद्धि की तीव्रता । अगाध= (विशे०) अथाह, बहुत गहरा । अनुभव=(सं० भा०) तजुर्बा । सौंप दिया = (क्रि० सकर्म०) दे दिया । कार्य क्षेत्र=(तत्पु० समास) काम का मैदान । राजनैतिक= (विशे०) राज्य से सम्बन्ध रखने वाली । भाषण=(सं० जा०) व्याख्यान । भविष्यद् वाणी=आगे होने वाली बात । राष्ट्रीय= (विशे०) देश की । महासभा=(सं० जा०) बड़ी सभा । सभापति= (सं० जा०) (सभा+पति=मालिक) प्रधान, मुखिया । अक्षरशः= ज्यों की त्यों ।

(पृष्ठ २५)

अधिवेशन=(सं० जा०) सभा, बैठक, जलसा। निर्वाचित=(क्रि० सकर्म०) चुने गये। अपूर्व=(विशे०) अद्भुत, अनोखी। शक्ति=(सं० भा०) ताक़त। वादविवाद=(सं० भा०) वहस। शास्त्रार्थ। धुरंधर=(विशे०) बहुत, अधिक। कुञ्जी=(सं० भा०) ताली। युक्ति=(सं० भा०) कारण, तर्क। प्रमाण=(सं० भा०) सुबूत, निर्णय, दृष्टान्त। विरोध=(सं भा०) ख़िलाफ़त। चकित होगये=आश्चर्य में होगये। धूलि=(सं० जा०) मिट्टी, ख़ाक। श्रवण करने=सुनने। नेता=(सं० जा०) अगुआ, लीडर, पथ प्रदर्शक। वायसराय=(सं० जा०) (Viceroy.) एक पद का नाम जो भारत के सब से बड़े हाकिम का नाम, गवर्नर-जनरल। कौंसिल=(सं० जा०) इङ्गलिश का शब्द (Council.) है, प्रजा के चुने हुए सभासदों की राज सभा। सदस्य=(सं० जा०) मेम्बर। सुचतुर=(विशे०) बहुत होशियार। भूरिभूरि=(विशे०) बहुत अधिक। क़ानून=(सं० जा०) विधान, न्याय। वक्तृता=(सं० जा०) व्याख्यान, भाषण।

(पृष्ठ २६)

समान=(विशे०) तुल्य, बराबर, सदृश। प्रोफ़ेसर=(सं० जा०) कालिज के मास्टर प्रोफ़ेसर कहलाते हैं। संतोष=(सं० भा०) तसल्ली। आनन्द=हर्ष। प्रत्युत=बल्कि, बरख़िलाफ़। सम्पूर्ण=(विशे०) तमाम, कुल। सम्भावना=(सं० भा०) आशा। व्यतीत=(क्रि०) बीतना, लगना।

भारत सेवक मण्डली=(अव्य० समास) हिन्दुस्तान का सेवा करने वाला समुदाय। सभा=(सं० जा०) कमेटी। स्थापित=(क्रि० सकर्म०) क़ायम। प्रविष्ट=(क्रि० अक०) दाख़िल। अर्पण=(क्रि० सकर्म०) भेट, समर्पण। जीवन निर्वाह=ज़िन्दिगी बसर

करना । संतुष्ट होकर=(पूर्व० क्रि०) प्रसन्न होकर, तृप्त होकर । कृषकों=(सं० जा०) किसानों, खेती का पेशा करने वाले । सार्वजनिक=(विशे०) आम लोगों की, सब आदमियों की । स्वास्थ्य= (सं० भा०) तन्दुरुस्ती । मनस्वी=(विशे०) उच्च मन वाला, बुद्धिमान । उद्देश=(सं० भा०) मतलब, प्रयोजन । पूर्ति= (क्रि० अकर्म०) पूरा हुआ ।

सी० आई० ई०= (C. I. E.) यह एक उपाधि का नाम है जिसका अर्थ Companian of the Indian Empire) हिन्दुस्तान के राज्य का सहायक । हिन्दुस्तानी बादशाह का साथी । उपाधि=(सं० जा०) पदवी, खिताब ।

(पृष्ठ २७)

के० सी० आई० ई० (K. C. I. E.) यह एक उपाधि का नाम है जिसका अर्थ (Knight Commander of the order of the Indian Empire) हिन्दुस्तान के राज्य की आज्ञा का बहादुर कमाण्डर । नम्रता=(सं० भा०) विनीत भाव । अस्वीकार=(अ+स्वीकार=मंजूर) नामंजूर ।

ज्ञात=मालूम । स्वर्गवास का समाचार=(तत्पु० समास) मरने की खबर, मृत्यु का समाचार । रंक=(सं० जा०) भिखारी । प्रकाशित=ज़ाहिर, प्रकट । तत्कालीन= उस समय के । ऋषि= (सं० जा०) मुनि, तपस्वी । अभिप्राय=मतलब । श्रद्धा=(सं० भा०) प्रेम, विश्वास । उत्कंठित=अभिलाषी, उत्साही ।

प्रश्नोत्तर ।

प्र० (१)—आजीवन, कार्यतत्परता, कार्य-क्षेत्र, वादविवाद, देश सेवा गुण गान में कौन समास है ? उत्कंठित, राजनैतिक शब्द कैसे बने हैं ?

उत्तर—आजीवन—अव्यय० समास ।

कार्यतत्परता—तत्पु० समास
कार्य-क्षेत्र— „ „
वादविवाद—द्वन्द्व समास।
देश सेवा—तत्पु० „
गुणगान— „ „
उत्कण्ठित=(उत्+कण्ठ+इत-प्रत्यय है)।
राजनैतिक(राज+नीति+इक प्रत्यय है)।

प्र० (२)—तुम को गोखले का कौनसा कार्य सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मालूम होता है और क्यों ?

उत्तर—देश-सेवा का कार्य उनका सब से बड़ा महत्त्वपूर्ण था क्योंकि इसके लिए उन्होंने अपना सब कुछ बलिदान् कर दिया था।

(पृष्ठ २८)

प्र० (३) गोखले में कौन कौन से गुण थे ?

(१) मातृभूमि के सच्चे सेवक थे (२) अपने देश-वासियों के दुख को अपना दुख समझते थे। (३) त्याग की मूर्ति थे। (४) अर्थ शास्त्र, इतिहास व गणित के बड़े भारी पण्डित थे। (५) भाषण देने की अपूर्व शक्ति थी। (६) वह युक्ति और प्रमाण के बिना एक शब्द भी नहीं बोलते थे। (७) इनका रहन सहन बहुत ही सीधासादा था।

प्र० (४)—गोखले को किस गुरु से सच्ची शिक्षा मिली ? उनकी विशेषता बतलाओ।

उत्तर—महामति महादेव गोविन्दरानाडे से मिली थी। महामति महादेव गोविन्दरानाडे एक साधारण व्यक्ति की

अवस्था से बम्बई हाईकोर्ट के न्यायाधीश हो गये थे इनको अभिमान ज़रासा भी नहीं था इनका रहन सहन बहुत ही सादा था इनको राजनीति, समाज नीति और व्यवहार नीति का अगाध अनुभव था।

शिक्षा—मनुष्य को चाहिए कि उच्च पद मिलने पर घमण्ड न कर सरल स्वभाव और सादा रहन सहन रक्खे और दूसरों के साथ उपकार करे।

पाठ ८—साहस।

साहस=(सं० भा०) हिम्मत, पराक्रम वीरता, ढाढ़स।

रवि·········छोड़ो।

अर्थ—रवि=(सं० जा०) सूर्य्य। मेघों=(सं० जा०) बादल। नभ=(सं० भा०) आकाश। अन्धकार=(विशे०) अँधियारा। धीर=(विशे०) साहसी, धैर्य्यवान्। समर=(सं० जा०) लड़ाई-रण। जय=(सं० भा०) विजय, जीत।

गद्य—(हे धीर) जो रवि मेघों से छिप जावे नभ बस अन्धकार दिखलावे (पर) धीर समर से मुख मत मोड़ो जय होगी साहस मत छोड़ो।

यथार्थ—चाहे सूर्य्य बादलों में छिप जावे और आकाश अन्धकार को दिखलावे। मगर हे साहसी वीरो! तुम युद्ध से मुँह न मोड़ना और न साहस त्यागना क्योंकि तुम्हारी जय होगी॥ १॥

चला·········घबराना।

शब्दार्थ—जग=(सं० जा०) संसार। प्राणप्रद=(विशे०) और (सम्प्र०स०) जीवन देनेवाला। ऋतुपति=(ऋतु+पति=स्वामी) वसंत-

ऋतु। ऋतु छः हैं, (१) वसंत ऋतु (२) ग्रीष्म (३) वर्षा (४) शरद (५) हेमन्त (६) शिशिर। तनिक=(विशे०) थोड़ा। घबराना=(क्रि० अकर्मक) बेचैन होना, व्याकुल होना।

गद्य—जब शीत जग से चला जाता है प्राणप्रद ऋतुपति आता है यों सुख-दुख का आना जाना है तुम तनिक भी नहीं घबराना।

पद्यार्थ—जब संसार से जाड़े की ऋतु चली जाती है तब जीवन देने वाली (आनन्द दायक) वसंत ऋतु आती है इसी प्रकार सुख दुःख आते जाते हैं मगर तुमको थोड़ा सा भी नहीं घबराना चाहिये ॥२॥

है·········बढ़ाता है।

शब्दार्थ—कठिन=(विशे०) मुश्किल, असाध्य। नर=(सं० जा०) आदमी। सार-हीन=(विशे०) वृथा, बेकार, तत्व रहित। क्षण=पल। लक्ष्य=निशाना। प्रतिपल=हर समय, हर घड़ी।

गद्य—नर के सब कर्त्तव्य कठिन हैं सुख सारहीन (और) क्षण भर के हैं। लक्ष्य ठीक न दीख पड़ता है प्रतिपल अन्धकार बढ़ता है।

पद्यार्थ—मनुष्य के सब काम कठिन हैं सांसारिक सुख तत्व रहित (बेकार) और थोड़ी देर के हैं। निशाना ठीक दिखाई नहीं देता है क्योंकि अन्धकार प्रति क्षण बढ़ता ही जाता है ॥३॥

तुम भी··········होते।

शब्दार्थ—तम=(सं० भा०) अँधेरा, अन्धकार। भीत=डर, भय।

(पृष्ठ २६)

सत्कर्म=अच्छे काम । निराशा=बे आशा, नाउम्मेद । फल=नतीजा ।

गद्य—तुम भी आगे बढ़ते जाओ तम से तनिक मत भीति पाओ जो सत्कर्म बीज बोते हैं वे फल से कब निराश होते हैं ।

पद्यार्थ—तुम भी आगे बढ़े हो चले जाओ और अन्धकार से ज़रा भी मत डरो क्योंकि जो अच्छे कर्मों का बीज बोते हैं अर्थात् सत्कर्म करते हैं वे फल से कभी निराश नहीं होते ॥४॥

सज्जन············होती ।

शब्दार्थ—सज्जन=(सं० जा०) भले आदमी । विद्वज्जन=(सं० जा०) विद्वान् पुरुष । मुट्ठीभर=थोड़े । नेता=(सं० जा०) अगुआ, पथ प्रदर्शक । वसुधा=(सं० जा०) (वसु=धन+धा=रखना) पृथ्वी, धरती, ज़मीन । साधारण=(विशे०) मामूली ।

गद्य—मुट्ठी भर सज्जन--विद्वज्जन किन्तु वही वसुधा पर नेता हैं । साधारण जन को तो मोती की पहचान देर से होती है ।

पद्यार्थ—थोड़े से सज्जन पुरुष और विद्वान् लोग होते हैं परन्तु पृथ्वी पर वही पथ प्रदर्शक होते हैं साधारण आदमियों को तो मोती की पहचान देर में होती है ॥५॥

शक्ति············अनुरागी ।

शब्दार्थ—शक्तिधर=(तत्पु० स०) बल का देवता । दूरदर्शी=(विशे० और तत्पु० समास) दूर की सोचने वाला । आशिष्=(सं० जा०) दुआ, आशीर्वाद । भागी=(सं० जा०) हिस्सेदार, साझी । अनुरागी=(विशे०) प्रेमी ।

गद्य—(हे) प्यारे ! अगर (तुम) सत्य के अनुरागी हो । तुम्हारे साथ शक्तिधर और दूरदर्शी जन हैं, सबके आशिष के भागी हो ।

पदार्थ—हे प्यारे ! अगर तुम सत्य के प्रेमी हो तो तुम्हारे साथ में शक्तिदेव का (ईश्वर) और दूर को सोचने वालों (विद्वान्) हैं और तुम सब के आशीर्वाद के पात्र हो ॥ ६ ॥

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—प्राणप्रद, ऋतुपति, सुख-दुःख, शक्तिदेव, दूरदर्शी शब्दों में कौन समास हैं ?

उत्तर—प्राणप्रद—तत्पुरुष
दूरदर्शी ,,
ऋतुपति—बहुव्रीहि समास।
शक्तिदेव— ,, ,,
सुख-दुःख—द्वन्द्व समास।

प्र० (२)—समर, तम, भीति, वसुधा, नेता, अनुरागी शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

उत्तर—क्षत्रिय वीर समर से कभी मुँह नहीं छिपाते हैं। रात्रीय तम को चन्द्रमा दूर करता है तारे नहीं। सुनसान जंगल में धैर्य्य पुरुष भी भयभीत हो जाते हैं। इस वसुधा पर एक से एक वीर पुरुष है। भारतवर्ष के सच्चे नेता महात्मा गाँधी हैं। महात्मा सत्य के अनुरागी होते हैं।

प्र० (३)—इस पाठ का क्या सार है।

उत्तर—साहस रखने से प्रत्येक कार्य्य में सफलता प्राप्त होती है।

प्र० (४)—साहस न हो तो क्या-क्या हानि होती है।

उत्तर—साहस न रखने वाले पुरुष को छोटे से छोटे मार्ग में सफलता नहीं मिलती है।

शिक्षा—मनुष्य को सदैव साहस से कार्य करना चाहिये।

(पृष्ठ ३०)

पाठ ९-समुद्र की कथा

समग्र=(विशे०) तमाम, सम्पूर्ण। शेष=(विशे०) बाक़ी, बचा हुआ। धरती=(सं० जा०) पृथ्वी, ज़मीन। प्रायः=(क्रि० विशे०) बहुधा, अक्सर। लवण=(सं० जा०) नोन, नमक। समस्त=(विशे०) तमाम, सब। सुविधा=सरलता, आसानी। औटाकर=गर्म करके। तली=पेंदी, नीचे का भाग।

शान्त=स्थिर, चुपचाप। सरीखे=समान, जैसे। चञ्चल=(विशे०) चपल, नटखट, उतावले। नाँई=तरह। ज्वार=चढ़ाव भाटा=उतार। पूर्णिमा=पूर्णमासी, वह दिन जिस दिन पूरा चन्द्रमा निकलता है। वेग=(सं० भा०) प्रवाह, धारा।

प्रशान्त=शान्त, स्थिर। प्रशान्त महासागर=इस महासागर का नाम प्रशान्त इसलिये है कि इसका पानी स्थिर रहता है इसमें तूफ़ान बहुत ही कम आते हैं।

(पृष्ठ ३१)

क्रमशः=सिलसिलेवार, तरतीबवार। भूमध्यसागर=पृथ्वी के बीच का समुद्र, रूमसागर। खाड़ी या आखात=(सं० जा०) पानी का वह भाग जो तीन तरफ़ ज़मीन से घिरा हो।

वक्षस्थल=छाती, सीना। युद्ध=लड़ाई। मटियामेट=सत्यानाश, बिलकुल बर्बाद।

(पृष्ठ ३२)

बचाव=रक्षा। दिशासूचक=(तत्पु० समास) दिशाओं का बताने वाला। यन्त्र=कल। सदैव=हमेशा, सदा। ध्रुवतारा=यह एक तारा है जो सदैव उत्तर की ओर मिलता है। आवश्यकता=(सं० भा०) ज़रूरत। अफ़सर (सं० जा०) यह इङ्गलिश का

शब्द (officer) है, प्रधान। कप्तान=यह इङ्गलिश का शब्द (captain) है, यह एक पद का नाम।

जीव-जन्तु=जानवर। ह्वेल=एक प्रकार की मछली। अष्ट-पद=(अष्ट=आठ+पद=पैर) आठ पैर का जानवर। शार्क=पानी का जानवर। भयङ्कर=(विशे०) भयानक, डरावना। अस्थियाँ=(सं० जा०) हड्डियाँ। स्थल=(सं० जा०) ज़मीन, खुश्की। मनोरंजन=मन वहलाना, दिल खुश करना।

(पृष्ठ ३३)

उत्पन्न=(क्रि० सकर्म०) पैदा। तली= पैंदी, नीचे का भाग। रत्नाकर=(सं० जा०) (रत्न=जवाहर+आकर=खानि) समुद्र, रत्न नौ हैं (१) हीरा (२) पन्ना, (३) नीलम, (४) माणिक, (५) लहसुनिया, (६) पुखराज, (७) गोमेद, (८) मोती (९) मूँगा।

(पृष्ठ ३४)

गोताखोरों=पानी में डूबकर पानी के अन्दर से चीज़ें निकालने वाले। कष्ट=(सं० भा०) दुःख, तकलीफ़। विशेष=(विशे०) खास। ढंग= (विशे०) तरीक़े, क़िस्म। पोशाक=(सं० जा०) पहनने के कपड़े।

स्याही-शोपक = स्याही सुखाने वाला कागज़, शोषता, ब्लाटिंग। पदार्थ= (सं० जा०) चीज़, वस्तु। स्पंज=एक चीज़ का नाम है। शोषण=सोखने वाला। सिवार=एक लम्बी घास होती है। संक्षिप्त=छोटी सी, मुख्तसर।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—समुद्र से नमक किस प्रकार बनता है क्या समुद्र के अतिरिक्त और किसी प्रकार से भी हमें नमक मिलता है।

उत्तर—समुद्र के पानी को औटाने से पानी भाप बन कर उड़ जाता है और नमक बर्तन की पेंदी में रह जाता है समुद्र के अतिरिक्त हमको नमक साँभर झील और पहाड़ों से प्राप्त होता है।

प्र० (२)—क्या तुमने ध्रुवतारा देखा है तुम उसे आकाश में कैसे पहिचान सकते हो?

उत्तर—हाँ, हमने ध्रुवतारा देखा है।

हम आकाश में इस प्रकार पहिचान सकते हैं कि वह सब तारों में अधिक चमकीला होता है और स्थिर (एक जगह) रहता है इसके गिर्द और तारे मण्डल बना घूमते हैं यह हमेशा उत्तर दिशा में रहता है।

प्र० (३)—कुतुबनुमा की क्या विशेषता है।

उत्तर—इसकी सुई को कितना ही हिलाओ डुलाओ मगर सुई उसकी सदैव उत्तर दक्षिण रहती है।

प्र० (४)—समुद्र को रत्नाकर क्यों कहते हैं।

उत्तर – क्योंकि समुद्र में से मोती, मूँगा आदि रत्न निकलते हैं।

प्र० (५)—समुद्र में किस दिन लहरें बहुत ऊँची उठती हैं ज्वार-भाटे से क्या लाभ है।

उत्तर—चूंकि ज्वार-भाटे का कारण चन्द्रमा है अतः पूर्णमासी को पूरा चन्द्रमा होता है। इस लिए इसदिन समुद्र की लहरें अधिक ऊँची होती हैं। इससे फ़ायदा केवल इतना है कि नदियाँ जो कूड़ा मिट्टी उस स्थान पर जहाँ समुद्र से मिलती हैं छोड़ देती हैं उस मिट्टी को लहरें बहा ले जाती हैं जिससे भूमि के निकट समुद्र में जहाज़ आने योग्य गहराई बनी रहती है।

(पृष्ठ ३५)

पाठ १०—रामायण

रामायण=(सं० व्य०) (राम+अयन=घर) राम का घर अर्थात् वह किताब जिसमें श्रीरामचन्द्र का जीवन चरित्र है।

अवध=(सं० व्य०) गङ्गा के उत्तर का देश जिसमें दो कमिश्नरी (लखनऊ और फ़ैज़ाबाद) की हैं, कहलाता है। तट=(सं० जा०) किनारा। प्राचीन=(विशे०) पुराना। राजधानी=(सं० जा०) वह शहर जहाँ पर राजा रहता है, राजस्थान। वंश=(सं० जा०) खानदान, कुटुम्ब। प्रतापी=(विशे०) तेजस्वी। धर्मात्मा=(विशे०) धर्म के अनुसार कार्य करने वाला, धर्म शील। सन्तान=(सं० जा०) औलाद। उदास=(सं० भा०) चिन्तित। पुत्रेष्टि=(विशे०) पुत्र की इच्छा। यज्ञ=(सं० जा०) हवन, होम। तदनुसार=उसी के अनुसार। नियत समय=ठीक समय। गर्भ=(सं० जा०) पेट। मुनि=ऋषि, तपस्वी। बुद्धि=(सं० भा०) अक्ल, समझ। विलक्षण=(विशे०) अजीब, विचित्र। काल=समय। विद्याध्ययन=(विद्या+अध्ययन=पढ़ना) विद्या पढ़ना। आखेट=शिकार, अहेर। कुशलता=(सं० भा०) निपुणता, दक्षता, होशियारी। राक्षस=(सं० जा०) असुर, दुष्ट। विघ्न=रुकावट, बाधा, उत्पात। अनुग्रह=(सं० भा०) दया, कृपा। सोच विचार=आगा पीछा।

(पृष्ठ ३६)

सेवा=टहल। कुमारों=(सं० जा०) कुँवारों, बिनब्याहों। सौंपना=देना, सुपुर्द करना। स्वीकार=मंजूर।

आश्रम=(सं० जा०) कुटी, स्थान। वीरता=बहादुरी। परिचय=ज्ञान। प्रसन्न=खुश। अस्त्र=वह हथियार जो फेंककर मारे जाते हैं जैसे, तीर, बन्दूक़। शस्त्र=वह हथियार जो हाथ

में पकड़े हुए मारते हैं जैसे; तलवार, भाला। समाचार=(सं० भा०) ख़बर। मिथिला=वह देश जो आजकल तिर्हुत कहलाता है, जनकपुर। स्वयंवर=(स्व=अपने आप+वर=दूल्हा) पतिको अपने आप चुनना। धनुष=(सं० जा०) कमान। प्रण=प्रतिज्ञा।

(पृष्ठ ३७)

एकत्र=इकट्ठे। निराश = (निर=नहीं+आशा) नाउम्मेद। योद्धा=(सं० जा०) वीर, बहादुर। गृह=(सं० जा०) घर। पधारिये=जाइये। आज्ञा=हुक्म। चूर्ण कर दूँ=तोड़ दूँ। आश्चर्य =अचरज, अचम्भा। अतएव=इसलिए।

आनन्द=(सं० भा०) हर्ष, प्रसन्नता। वृद्ध=बूढ़े। युवराज= राजा का ज्येष्ठ पुत्र, राज्य का उत्तराधिकारी। रुचिकर=अच्छी। राज्याभिषेक=(राज्य+अभिषेक=तिलक) राजतिलक। गृह-गृह =(सं० जा०) घर-घर। उत्सव=ख़ुशी, जलसा। सङ्कट=(सं० भा०) दुःख, आपत्ति। उपस्थित=मौजूद। सौतेली मा=दूसरी मा, विमाता। कान भरना = बहकाना, सिखाना। चातुरी= (सं० भा०) होशियारी। प्रति=लिए। अनुराग=प्रेम, मुहब्बत।

(पृष्ठ ३८)

ननसाल=(सं० जा०) मा के पिता का घर, नाना का घर। वर=वरदान, आशीर्वाद। प्रतिज्ञा=प्रण, क़ौल। प्रथम=(विशे०) पहला। द्वितीय=(विशे०) दूसरा।

नष्ट=नाश। गहने=(सं० जा०) भूषण, ज़ेवर, स्त्री के आभूषण बारह होते हैं, (१) नूपुर, (२) किंकणी, (३) हार, (४) नथ, (५) चूड़ी, (६) मुहरीजान, (७) शीशफूल, (८) बिछिया, (९) कङ्गन. (१०) चौकपाट पहचान, (११) बाजू सुन निज दृगहु पर, (१२) टीका भाल विशाल, धारण करना उचित है, आदेश आनन्द वाला।

वस्त्र=(सं० जा०) कपड़े। कोप भवन=(कोप=गुस्सा+भवन) वह घर जिसमें आदमी गुस्सा होकर पड़ रहे। अन्तःपुर=(सं० जा०) जनानखाना, स्त्रियों के रहने का महल। रुदन=रोना। रुदन करने लगीं=रोने पीटने लगी। व्याकुल=बेचैन, दुःखित। बचन दिया था=वायदा किया था, प्रतिज्ञा की थी। पूर्ण=पूरा। सत्यवादी=सत्य बोलने वाले। रघुकुल=रघु का खानदान। रीति=रिवाज।

रघुकुल·········जाई॥

अर्थ—रघुकुल में यह रीति हमेशा से चली आई है कि चाहे प्राण चले जावें पर वचन न जाने पावे अर्थात् जो वचन मुँह से कह दिया उसको प्राण देकर भी पूरा करना।

वज्रपात=बिजली का गिरना, भारी दुःख। समाचार=हाल, खबर, सूचना। समस्त=(विशे०) तमाम। शोकाकुल=रंज से, दुखी, रञ्जीदा, दुःखित।

(पृष्ठ ३६)

दुःखित=(विशे०) दुःखी, व्याकुल। व्याकुल=(सं० भा०) बेचैन, अधीर। अग्नि=आग। प्रवेश=दाखिल होना, घुसना। हलाहल=बड़ा ज़हर, विष। विष=ज़हर। प्रस्तुत=तैयार, उपस्थित। गमन=जाना। कोलाहल=(सं० भा०) हलचल, शोर। उद्यत=तैयार। भोगविलास=एशोआराम। सामग्री=(सं० जा०) सामान। त्यागकर=छोड़कर। भार=बोझ। तुल्य=समान, बराबर। स्थिति=हालत, दशा। वेद=हिन्दुओं की धर्मपुस्तक, वेद चार हैं (१) ऋग्वेद, (२) सामवेद, (३) यजुर्वेद (४) अथर्ववेद। शास्त्र=हिन्दुओं की धर्म पुस्तक, ये छः हैं (१) वेदान्त, (२) न्याय, (३) सांख्य, (४) मीमांसा, (५) योग। (६) वैशेषिक। परम धर्म=बड़ा धर्म।

(पृष्ठ ४०)

आश्रम=ऋषियों के रहने की जगह, कुटी, मठ। सत्कार=आदर, मान।

वियोग=जुदाई। शरीरान्त=(शरीर+अन्त=खत्म, अखीर) मृत्यु, मौत। परलोक=(सं० जा०) दूसरा लोक। विकल=बेचैन, व्याकुल। दोष=(सं० भा०) अपराध, खोट। सलाह=(सं० भा०) राय। गो-वध=गो-हत्या। पाप=अधर्म। दाह क्रिया=मुर्दे को जलाना। राजसिंहासन=(सं० जा०) राजगद्दी। आग्रह=(सं० भा०) हठ, जिद। सहमत=राजी, एक राय। भेंट=मिलने, मुलाक़ात। भङ्ग=तोड़ना। पातक=पाप। निराश=ना उम्मेद। पादुकायें=खड़ाऊँ। व्यतीत करेंगे=गुजारेंगे, बितायेंगे। भ्रातृ-स्नेह=भाई का प्रेम। उपदेश=(सं० भा०) शिक्षा, नसीहत।

(पृष्ठ ४१)

प्रस्थान किया=कूच किया, चल दिये। पंचवटी=(पंच+वट=वृक्ष) पाँच वृक्ष वाली जगह, एक स्थान का नाम जो गोदावरी नदी के तट पर है। पाँच वृक्ष (१) पीपल, (२) बड़, (३) बेल, (४) आँवला, (५) अशोक। शूर्पणखा=(शूर्प+नख=नाखून) जिनके सूपके से नाखून, रावण की बहन। प्रस्ताव=सभा के सामने कहा हुआ मन्तव्य। उक्त=ऊपर का। समस्त=(विशे०) सारा, तमाम। वृत्तान्त=हाल। आँखें लाल-पीली करके=क्रोध करके, क्रोधित होकर। कुरूप=(कु=बुरा+रूप), बदसूरत। बाण=तीर। वर्षा करने लगे=तेज़ी से बाण चलाने लगे।

माया=छल, छल। सुवर्णमृग=(तत्पु० समास) सोने का हिरन। निदान=अन्त में, आख़िरकार। मार्ग=रास्ता। जटायु=एक गिद्ध का नाम। भ्राता=भाई। निर्वासित कर दिया था=निकाल दिया था।

(पृष्ठ ४२)

मित्रता=दोस्ती । वचन दिया=प्रतिज्ञा की। वध किया=मारा। सेना=फ़ौज।

(पृष्ठ ४३)

वाटिका=बाग़। भक्त=(सं० जा०) सेवक। युद्ध=लड़ाई। एकत्र=इकट्ठा, जमा। आरम्भ=शुरू। फुसलाया=बहकाया। भय=डर। वश में=क़ाबू में, अधीनता में। चेष्टा=इच्छा, चाह। पतिव्रता=पति से प्रेम करने वाली। दूत=(सं० जा०) एलची। विवश=लाचार। कुम्भकर्ण=(कुम्भ=हाथी का सिर+कर्ण=कान) रावण का भाई। मेघनाथ=(मेघ=बादल+नाद=शब्द) रावण का बड़ा पुत्र, इन्द्रजीत। मूर्छित=बेहोश। बात की बातमें=बहुत थोड़ी देर में।

(पृष्ठ ४४)

औषधि=(सं० जा०) दवा। घमसान=(विशे०) बहुत ज़ोर का। संग्राम=युद्ध लड़ाई। जीतोड़कर=प्राणों को हथेली पर रख कर, बहुत ही ज़ोर से। परिवार=कुटुम्ब। नष्ट=नाश, बर्बाद। हर्ष=(सं० जा०) खुशी, प्रसन्नता। पार न रहा=बहुत ही ज़्यादा। स्वागत=आदर, सत्कार। लोक निंदा=सांसारिक बुराई। आदेश=आज्ञा। ग्रहण किया=स्वीकार किया। सम्मति=राय, सलाह। परस्पर=आपस में। व्यवहार=बर्ताव। कलह=क्लेश, लड़ाई। उपद्रव=झगड़े। दरिद्री=(सं० जा०) दीन, कंगाल। दुर्भिक्ष=अकाल। प्रशंसा=बड़ाई।

(पृष्ठ ४५)

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—अपनी भाषा में रामायण की कथा वर्णन करो।

उत्तर—अयोध्या में सूर्यवंश के राजा दशरथ बड़े प्रतापी हुए हैं उनके तीन रानियाँ थीं मगर पुत्र संतान नहीं थी

उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ किया जिससे उनके चार पुत्र उत्पन्न हुए बड़े का नाम रामचन्द्र था औरों के नाम भरत, लक्ष्मण और शत्रुहन थे। थोड़े ही दिनों में पढ़ लिख-कर होशियार हो गये और अस्त्र-शस्त्र चलाना भी सीख गये फिर रामचन्द्र लक्ष्मण को विश्वामित्र मुनि अपने यज्ञ की रक्षा कराने के लिये ले गये इन्होंने राक्षसों से यज्ञ की रक्षा की और उनको मारा विश्वामित्र ने प्रसन्न हो उनको और भी अन्य प्रकार के हथियार चलाना सिखाया तत्पश्चात् राजा जनक के यहाँ से सीताजी के स्वयंवर का समाचार मिला विश्वामित्र के साथ ये दोनों भाई स्वयंवर में गये।

राजा जनक ने प्रतिज्ञा की थी कि जो वीर धनुष को उठाकर तोड़ देगा उसके साथ सीता का विवाह होगा। रामचन्द्रजी ने धनुष को तोड़ दिया और सीता के साथ विवाह होगया।

राजा दशरथ ने रामचन्द्र को युवराज बनाने की इच्छा की मगर कैकेई ने दो वर माँग कर पहले में रामचन्द्र को १४ वर्ष बनवास दूसरे में भरत को राजगद्दी दी जाय। पिता की आज्ञा मान रामचन्द्र वन को चले गये मगर उनके साथ लक्ष्मण और सीताजी भी गयीं इन्होंने चित्रकूट पर कुटी बनाई भरतजी ने रामचन्द्रजी को वापिस लाने के लिये चित्रकूट पर भेंट की मगर राम-चन्द्रजी पिता की आज्ञा उल्लंघन करना नहीं चाहते थे भरतजी उनकी खड़ाऊँ लेकर अयोध्या लौट आये। रामचन्द्र फिर वहाँ से पंचवटी चले गये वहाँ से लङ्का का राजा रावण सीताजी को चुरा ले गया अन्त में रामचन्द्रजी ने सुग्रीव की सहायता से रावण को मय

कुटुम्ब के मार सीताजी को लेकर अयोध्या वापस आये और आनन्द पूर्वक राज्य करने लगे।

प्र० (२)—राम, लक्ष्मण, भरत, सीता के जीवन से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है उदाहरण सहित समझाओ।

उत्तर—राम के जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि पिता की आज्ञा को मानना चाहिये चाहे कितना ही कष्ट क्यों न पड़े उदाहरण—रामचन्द्रजी पिता की आज्ञा से १४ वर्ष के लिए वनको गये और वहाँ पर दुःख उठाये।

लक्ष्मण—के जीवन से हमको यह शिक्षा मिलती है कि भाई के दुःख में दुःखी और सुख में सुखी रहे, लक्ष्मण को वन जाने के लिये माता पिता ने आज्ञा नहीं दी थी।

भरत—के जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जो अधिकार भाई का है वह उन्हीं का है अपना नहीं हो सकता है, भरत को राजा ने गद्दी दी थी परन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया भाई का हक़ था इसलिए उनको वनसे अयोध्या लौटने पर वापस करदी।

सीता—के जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि स्त्रियों के लिये जो कुछ है वह पति है बिना पतिके सांसारिक ऐशोआराम सब दुःखदाई हैं—सीताजी ने पति के कारण वन के सब कष्टों को सहन किया।

प्र० (३)—रामराज्य अब तक क्यों प्रशंसनीय माना जाता है?

उत्तर—रामचन्द्रजी ने बड़ी योग्यता से राज्य किया था राज्य की सब प्रजा सुखी थी—स्त्रियाँ पतिव्रता थीं मनुष्य परस्पर प्रेम करते थे, कलह और उपद्रव नहीं होते थे, भिखारी और दरिद्री देखने तक को नहीं थे इनके राज्य में कभी अकाल नहीं पड़ा चोरी आदि बुरे काम

नहीं होते थे। इसलिए राम राज्य की प्रशंसा करते हैं।

प्र० (४)—राज्याभिषेक और शोकाकुल किन शब्दों से मिलकर बने हैं ऐसे ही दो शब्दों के दो उदाहरण दो।

उत्तर—राज्याभिषेक=राज्य+अभिषेक।

शोकाकुल=शोक+आकुल।

उदाहरण—१ निर्+आश=निराश।

उदाहरण—२ सिंह+आसन=सिंहासन।

प्र० (५)—सीता ने बन जाना क्यों अच्छा समझा?

उत्तर—क्योंकि जब उनके पति राजपाट छोड़कर बन जारहे थे तब वह कहती थीं कि मैं आप के साथ चल कर आप की सेवा करूँगी पति के बिना स्त्री को भोग रोग के समान गहना बोझ के समान है बिना पति के स्त्री ऐसे है जैसे बिना प्राण के शरीर और जल के बिना मछली ऐसा ही वेदशास्त्र कहते हैं।

पाठ ११—प्रभु-प्रताप

प्रभु=(सं० पुं०) ईश्वर, परमेश्वर। प्रताप=(सं० भा०) महिमा, ऐश्वर्य।

जाँहि·········सकल।

शब्दार्थ—गगन=आकाश। तेज=(सं० भा०) प्रकाश। तम=(सं० भा०) अँधेरा। दिशा=ओर, तरफ़। उजली=(विशे०) साफ़ स्वच्छ। मलिन=(विशे०) मैली। वायु=(सं० जा०) हवा। अचानक=एकाएक। कड़ा=कठिन। निराले=(विशे०) अनोखे, अपूर्व। काल = समय। काल = मृत्यु। कौशल = चतुराई, होशियारी। मंगल=आनन्द। सकल=(विशे०) सब, तमाम।

गद्य—चाँद औ रवि-गति गगन में घूमते हैं तेज को तम से उजली औ मलिन दिशा होती हैं वायु बहती है घटा उठती

हैं अग्नि जलती है अचानक फूल वज्र से भी बढ़कर कठिन होता है जिस निराले काल के भी काल के कौशल के बल वह सब काल में संसार का सकल मङ्गल करे।

पद्यार्थ—चन्द्रमा और तारे रात दिन आकाश में घूमते रहते हैं जिनके प्रकाश और अँधेरे से दिशायँ उजली और मैली होती हैं हवा चलती है, घटायँ उठती हैं आग जलती है। और फूल भी वज्र से बहुत कठिन अचानक हो जाता है। जिस अनोखे काल को भी मृत्यु की होशियारी की ताक़त पर वह सब समय में संसार का सब प्रकार का आनन्द करता है ॥१॥

क्या·······पाता कभी।

शब्दार्थ—टरता = हटता। ढरता=कृपा करता। निराली = (विशे०) अनोखी, अपूर्व।

गद्य—उसके हाथ में क्या नहीं है वह क्या नहीं करता वह जो कुछ चाहता है फिर वह कभी नही टरता (है) वह सुख नहीं पाता है जिस पर वह नहीं ढरता है; वह जिसको नहीं भरता है उसे फिर कौन भर सकता है उस की जितनी करतूत है वह सभी निराली है। उसके भेदों का पता कभी कोई नहीं पाता (है)।

पद्यार्थ—उस (ईश्वर) के हाथ में क्या नहीं है अर्थात् सब कुछ है और वह (ईश्वर) क्या नहीं कर सकता है अर्थात् सब कुछ कर सकता है वह जो कुछ चाहता है वह फिर कभी टल नहीं सकता है अर्थात् वही होता है वह मनुष्य कभी आराम नहीं पाता है जिस पर उसकी कृपा नहीं होती है, जिसको वह खाली करता है उसको फिर कौन भर सकता है अर्थात् उसके सिवाय कोई नहीं भर सकता है उसमें जितने कार्य हैं वह सब विचित्र हैं उसके भेद को कोई भी कभी नहीं पा सकता है।

(पृष्ठ ४६)

प्र० (१)—पहले पद को अन्तिम तीन पंक्तियों की व्याख्या करो।

उत्तर—फूल इतना कोमल होता है मगर वही फूल ईश्वर की कृपा से वज्र से भी कठोर हो जाता है मृत्यु से रंज और शोक होता है मगर ईश्वर इससे ही संसार को सब आनन्द देता है।

प्र० (२)—तुम्हें प्रभु प्रताप के कौन लक्षण दिखाई देते हैं?

उत्तर—हम आकाश में दिन में बहुत गर्मी देने वाला सूर्य और रात में चन्द्रमा और तारे चमकते हुए देखते हैं और कभी घटा उठी हुई देखते हैं हवा चलती है आग बरसती है अनेक प्रकार के रंग बिरंगे फूल व फल देखते हैं। हर चीज़ में अलग अलग ज़ायके आदि बातों में ईश्वर की महिमा दीखती है।

प्र० (३)—मलिन, अचानक, वज्र, मङ्गल, करतूत, भेद शब्दों के वाक्य बनाओ।

उत्तर—नरेन्द्र आज तुम मलिन प्रतीत होते हो।

गोविन्द कल अचानक कुए में गिर गया था।

मोहन को अपने मित्र श्याम की जुदाई का कष्ट वज्र सम प्रतीत हुआ।

ईश्वर की कृपा से मंगल है।

आपकी करतूत विचित्र मालूम होती है।

मोहन ने मित्र होने पर भी मेरा सारा भेद खोल दिया।

पाठ १२—स्वर्ग की झलक

स्वर्ग=बैकुण्ठ। झलक=(सं० भा०) चमक। स्वर्ग की झलक=स्वर्ग की चमक, स्वर्ग की झाँकी। दादी=(सं० जा०) पिता की माता, पितामही। कहानी=(सं० जा०) क़िस्सा, बात। निद्रा=

(सं० भा०) नींद । सूर्य्यास्त=(सूर्य+अस्त=छिपना) शाम, दिन डूबना । भिन्न भिन्न=तरह तरह । इन्द्रलोक=इन्द्र देवता के रहने का स्थान, स्वर्ग । यम=धर्मराज । किन्नर=(सं० जा०) गाने वाले देवता । गन्धर्व=(सं० जा०) गाने वाले देवता । अप्सरा=(सं० जा०) इन्द्र की सभा में गाने वाली । ऋद्धि=धन, सम्पत्ति । सिद्धि=मनोरथ पूरा होना, सिद्धियाँ आठ होती हैं (१) अणिमा (२) महिमा (३) लघिमा (४) प्राप्ति (५) प्राकाम्य (६) ईशत्व (७) वशित्व (८) कामावसायिता । एकाग्र=(विशे०) एक चित्त, एक मन । अवलोकन=दर्शन । लालसा=(सं० भा०) इच्छा । पोथी=(सं० जा०) पुस्तक, किताब । चित्र=(सं० जा०) तसवीर । पसन्द थे=अच्छे लगते थे ।

(पृष्ठ ४७)

नृत्य=नाच । बालकगण=बालकों का समूह । गण=झुण्ड । मुस्कराते=(विशे०) हँसते हुए । मुख=मुँह । सुन्दर=(विशे०) अच्छे, खूबसूरत । कमल कानन= कमलों का वन । सरस्वती= विद्या की देवी । विराजमान है= मौजूद है, बैठी हुई है । वीणा= (सं० जा०) सितार की तरह का एक बाजा । नहीं सुहाता= अच्छा नहीं लगता है । डाँटते हैं=(क्रि० सकर्म०) फटकारते हैं । कमलनयन=(विशे०) कमल के समान नेत्र । नयन=आँख । विष्णु=ईश्वर । स्नेह=(सं० भा०) प्यार । मनोहर=(विशे०) मन का हरने वाले । प्रबल=बलवान, तीव्र । उपाय=(सं० भा०) यत्न, तदबीर । उदित=प्रकट ।

कलियुग=एक युग का नाम है, युग चार हैं (१) सतयुग १७२८००० वर्ष का, (२) त्रेता १२९६००० वर्ष का, (३) द्वापर ८६४००० वर्ष का, (४) कलियुग ४३२००० वर्ष का वर्तमान युग कलियुग है । पाप=अधर्म । प्रवेश कर सकता है=घुस सकता

है, दाख़िल हो सकता है। धत्=दुत्कारना। पागल=(सं० जा०) सिड़ी, बेवक़ूफ़। समीप=निकट। केवल=सिर्फ़। मृत्यु=मौत। बाट=(सं० जा०) रास्ता, मार्ग। जोह रहे हैं=देख रहे हैं। परिहास=हँसी, दिल्लगी। किरण=चमक, रश्मि। संगमरमर = सफ़ेद पत्थर। छिटकाती=बिखेरती, डालती। टकटक=टकटकी लगाकर। अचानक=यकायक।

(पृष्ठ ४९)

चट=फ़ौरन, शीघ्र। प्रतिज्ञा=प्रण, वायदा। सहज=(सं० भा०) सरल, आसान। दिव्य=सुन्दर, अच्छी। दिव्य-दृष्टि= अलौकिक ज्ञान, ऐसी निगाह जिससे सब जगह की वस्तुएँ देख सकें। चेष्टा=इच्छा। दृष्टि गोचर होना=दिखाई देना, नज़र आना। टहलने=घूमने, सैर करने। तान=स्वर। अलापता है=गाता है। सरस=(वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा। स्वर= शब्द। चौकन्ने=सावधान। सनसना=गुञ्जार। स्त्री=(सं० जा०) औरत।

(पृष्ठ ५०)

शृङ्गार=शोभा, सिंगार, कविता में एक रस का नाम है। शृङ्गार १६ हैं:—

अंगशुची, मज्जन, बसन, माँग महावर केश
तिलक भाल तिलचुबक में, भूषण मेहदी वेश॥
मिस्सी काजल अरगजा, बीरी और सुगन्ध।
पुष्पकली युत होयकर, नव नव सहित प्रबन्ध॥

संचय कर=इकट्ठा कर, आत्मशक्ति से। सारी=धोती। मुक्त कर दो = छोड़ दो, रिहा कर दो। कारण=सबब।

विश्राम = आराम। सन्ध्या = शाम। जगमगाहट = चमक, झलझलाहट। नक्षत्र=(सं० जा०) तारा। फेर=चक्कर। मूल्य=क़ीमत।

(पृष्ठ ५१)

स्वतः=अपने आप, स्वयं। भिक्षा=भीख। पारितोषिक= इनाम। ठनठन गोपाल=कुछ नहीं, ख़ाली। लोभ=लालच।

(पृष्ठ ५२)

गिरवी=बन्धक, गहने। औषधि=दवाई। आशीर्वाद= आशिष, दुआ। टनकन=रुपये का शब्द। कपोल=गाल। चपत= थप्पड़, तमाँचा। श्रेणियाँ=क़तार, लाइन। व्यग्र=बेचैन, व्याकुल। घनघोर=(विशे०) घमसान, बड़े ज़ोर की। सेनापति=(सं० जा०) (सेना=फ़ौज+पति=मालिक) अफ़सर, कमाण्डर। स्थिर=क़ायम।

(पृष्ठ ५३)

बइया=भइया। अमाले=हमारे। लथ=रथ। तेला=टेढ़ा। तंग= दुखी। छिः=धिक्कार। कलह=लड़ाई, झगड़ा। युद्ध=लड़ाई। अभ्यास=मश्क़। आनन्द=खुशी, प्रसन्नता। बटोरा=इकट्ठा। हड़पकर=छीनकर। मिथ्या=झूठ। मग्न होकर=डूबकर। वाटिका= बग़ीचा। वृद्ध=बूढ़ा। संन्यासी=बैरागी, चौथा आश्रम, आश्रम चार हैं। (१) ब्रह्मचर्य (२) गृहस्थ (३) वानप्रस्थ (४) संन्यास।

(पृष्ठ ५४)

वृद्धावस्था = बुढ़ापा। अवलम्ब = सहारा। असमञ्जस = द्विविधा। आयु=उम्र। व्यर्थ=फ़िज़ूल। तरसता था=बहुत चाहता था। मर्त्यलोक=मनुष्य लोक; यह संसार। लोक तीन हैं (१) स्वर्ग लोक (२) मर्त्य लोक (३) पाताल लोक।

(पृष्ठ ५५)

अनिर्वचनीय=जो कहने में न आ सके। परोपकार=(पर= दूसरे+उपकार=भलाई) दूसरे के साथ भलाई। स्वार्थी=(स्व=

आप+अर्थी=मतलबी) मतलबी। कृपरा=कंजूस, लालची। सरिस=समान। धर्म=पुण्य।

पद्यार्थ—हे भाइयो! दूसरों के साथ भलाई करने के बराबर कोई दूसरा धर्म नहीं है।

प्रश्नोत्तरी।

प्र० (१)—दस पंक्तियों में इस कहानी का सारांश लिखो।

उत्तर—लकलू बाबू अपनी दादी से शाम को क़िस्से सुना करता था। उसकी दादी देवी, देवताओं, स्वर्ग आदि की कहानी कहा करती थी, इस से उसकी इच्छा स्वर्ग देखने की होगई। उसने एक दिन सूर्य की किरण, जो आकाश से उसके बकस पर पड़ी, पकड़ ली। इसी प्रकार उसने एक दिन बाग़ में टिड्डा पकड़ लिया। उसकी पीठ पर एक स्त्री बैठी थी। स्त्री ने लकलू से कहा इसे छोड़ दो मुझे दूर जाना है एक तारे को दिखाकर कहा। तब लकलू ने कहा तुम स्वर्ग में रहती हो मुझे स्वर्ग दिखादो। स्त्री ने उसे एक डिबिया देकर कहा कि अगर तुम अच्छा काम करोगे तो इसमें एक रुपया आजायगा और बुरा करोगे तो एक रुपया चला जायगा। जब डिबिया रुपये से भर जायगी तब स्वर्ग दिखाऊँगी। फिर लकलू अच्छे काम करने लगा और डिबिया भर गई। एक दिन बाग़ में लकलू को एक संन्यासी मिला उसने लकलू से कहा, मेरी स्वर्ग की डिबिया गंगा में गिर गई है तुम मुझे अपनी डिबिया दे दो तो मैं स्वर्ग चला जाऊँ। लकलू ने बिना संकोच के उसे देदी उस संन्यासी ने लकलू से आँखें बन्द कराकर उसकी आँखों पर हाथ फेर दिया उसे बस दिव्यदृष्टि मिल गई। फिर वह (लकलू) इस लोक ही में स्वर्ग की वस्तुएँ देखने लगा।

प्र० (२)—इस कहानी के पढ़ने से क्या उपदेश मिलता है ?

उत्तर—परोपकार करना चाहिए इसके लिए चाहे प्राण भी चले जाँय इसी के द्वारा इस लोक को भी स्वर्ग के समान देख सकते हैं।

प्र० (३)—निम्नलिखित वाक्यों का पृथक्करण करो:—

(अ) लक्खू को गुरुजी के पास बैठकर पढ़ना नहीं सुहाता है।

(ब) इस युग के लोग स्वर्ग नहीं देख सकते।

(स) यह तो बड़ी अच्छी तान अलापता है।

उत्तर—

	उद्देश्य		विधेय			
	कर्त्ता	कर्त्ता का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार
(अ)	लक्खू	को	पढ़ना	गुरुजी के पास बैठकर	सुहाता	नहीं
(ब)	लोग	इसयुगके	वर्ग		देख सकते	नहीं
(स)	यह		तान	बड़ी अच्छी	अलापता	तो

पाठ १३—कल्पित दुर्ग

कल्पित = (विशे०) माना हुआ, नक़ली। दुर्ग=(सं० जा०) क़िला, गढ़।

वृत्तान्त=(सं० भा०) हाल, बयान। सत्य=(क्रि० विशे०) सही, ठीक। कल्पना=माना हुआ। मूलक=बताने वाला। कल्पना मूलक=फ़र्ज़ी, नक़ली, झूँठे। इतिहास=(सं० जा०) तवारीख़। रियासत=(सं० जा०) राज्य, स्टेट। पूर्व=पहले। आक्रमण=(सं० भा०) हमला, चढ़ाई।

(पृष्ठ ५६)

कारण=सबब, वजह।। शक्तिहीन=(विशे०)(शक्ति=ताक़त हीन=नहीं) कमज़ोर। अधीनता=ताबेदारी। स्वतंत्र=आज़ाद।

सँभला=चेता, होशियार हुआ। तत्कालीन=उस समय के। पूर्वजों=(सं० जा०) पुरखाओं, बाप, दादों। खड्ग=(सं० जा०) तलवार। आशा=उम्मेद।

अप्रिय=(विशे०) बुरा। संवाद=(सं० भा०) सूचना, ख़बर। योधा=(सं० जा०) वीर, बहादुर, सावंत। समाचार=सूचना, हाल। वलविक्रम=वीरता। छापा मारा=हमला किया, अचानक चढ़ाई करना। बेसुध=अचेत, बेख़बर। आक्रमण=हमला। सहस्रों=(विशे०) हज़ारों।

(पृष्ठ ५७)

प्राण लेकर=जान बचाकर। धौंसा=बाजा विशेष। आनन्द=(सं० भा०) ख़ुशी, उत्सव।

पराजय=हार। मस्तक=(सं० जा०) माथा, सिर। लज्जा से=शर्म से। नत=नीचा, झुकना, नवना। विशाल=विशेष, बड़ी, बहुत। नष्ट=नाश, बरबाद। कब्ज़ा=क़ब्ज़ा, अधिकार। महरा=पल्टन, सेना। प्रतिज्ञा=प्रण। सैन्य संग्रह=सेना इकट्ठी।

एकत्र=इकट्ठा, जमा। असम्भव=नामुमकिन। अतएव=इसलिए। बन्धु-बान्धव=भाई-बन्धु। प्रधान=मुखिया। असमञ्जस=सन्देह, दुविधा।

तोड़=उपाय, चाल। दल-बल सहित=सेना के साथ।

(पृष्ठ ५८)

सुभीते=आराम। अनूठा=अपूर्व, विचित्र।

टुकड़ी=भाग, हिस्सा। आश्रित=सहारे। भवितव्यता=होनहार। आखेट=शिकार। कुतूहल=आश्चर्य।

प्रयोजन=मतलब, अर्थ। मनोरञ्जन=दिल बहलाव, दिल की खुशी। सामग्री=सामान।

(पृष्ठ ५६)

युक्तिमात्र=केवल उपाय। वास्तविक=असली।

रक्त=खून, लहू। रक्तखौलने लगा=खून जोश में आगया, क्रोध आगया। मातृभूमि=वह स्थान जहाँ मनुष्य जन्म लेता है, वह स्थान उसकी जन्मभूमि कहलाती है हमारी जन्मभूमि भारतवर्ष है। अपमान=(सं० भा०) अनादर, तिरस्कार। ध्वंस=नष्ट, नाश। दासत्व=सेवकाई। प्रतिमूर्त्ति=नक़ल। प्राणान्त=(प्राण+अन्त) मृत्यु, मौत। अवसर=मौक़ा। सम्मति=(सं० भा०) राय, सलाह। सन्नद्ध=तैयार। सुसज्जित=सजे हुए। सनसनाती=आवाज़ करती हुई। दङ्ग रह गये=अचम्भे में होगये।

(पृष्ठ ६०)

मूर्ति=तसवीर, नक़ल। मान=आदर।

पद्यार्थ—अपनी मातृभूमि की तसवीर (शक्ल) को मातृभूमि के बराबर समझकर वीर शिरोमणि कुम्भा ने उसका मान रक्खा, हे वीर तू धन्य है।

(पृष्ठ ६५)

प्रधान फाटक=सदर दरवाज़ा। स्वागत=आदर, मान।

तुच्छ=छोटा। प्रस्तुत=तैयार, तत्पर। परिणाम=नतीजा, फल। प्रविष्ट=दाख़िल।

मर्य्यादा=हद, सीमा। उत्सर्ग=अर्पण करना। सहम गये=डर गये। साहस= (सं० भा०) हिम्मत। स्वाधीन=(विशे०,) स्वतन्त्र, आज़ाद।

आत्माभिमानी=आत्मा पर घमण्ड करने वाला। गौरव-क्षति=मानहानि, प्रतिष्ठा का नाश।

(पृष्ठ ६२)

स्वामी=मालिक, राजा। अधिकारी=हक़दार।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—चित्तौर के राना की शक्ति क्यों क्षीण होगई थी? बूँदी वालों से उन्हें क्यों नीचा देखना पड़ा?

उत्तर—चित्तौर के राना की शक्ति अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमणों से क्षीण होगई थी। चित्तौर की शक्ति क्षीण होने से बूँदी के राजा स्वतन्त्र होगये थे उसको अधीन करने के लिए चित्तौर के राना ने सेना समेत चढ़ाई करदी। बूँदी के हाड़ा राना ने ५०० अच्छे योद्धा लेकर रात में उनके डेरों पर धावा कर दिया सारी सेना काट डाली राना प्राण लेकर भाग आये इस हार से राना को नीचा देखना पड़ा।

प्र० (२)—कुम्भा कौन था? नक़ली क़िले से कुम्भा का क्या सम्बन्ध था, संक्षेप में बताओ। मातृ-भूमि किसे कहते हैं?

उत्तर—हाड़ा जाति की टुकड़ी चित्तौर के राना की सेना में नौकर थी उसका प्रधान कुम्भा था।

कुम्भा बूँदी में उत्पन्न हुआ था। उसको मातृ-भूमि बूँदी थी चूँकि नक़ली क़िला बूँदी के क़िले की नक़ल था इसलिए उसे बूँदी के क़िले का ध्यान होगया। उसने अपने प्राण रहते हुए उसको फ़तह नहीं होने दिया।

जिस जगह किसी का जन्म होता है, वह देश उसकी मातृ-भूमि कहलाती है।

प्र० (३)—इन वाक्यों के द्वारा वाक्य बनाओ—प्रतिज्ञा, असम्भव, ताड़ा, प्रस्ताव, प्रयोजन।

उत्तर—मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज से मैं अपने साथियों की सदा यथाशक्ति सहायता करूँगा।

आज मेरा बनारस जाना असम्भव मालूम होता है।

मेरी बात को कृष्ण ने फ़ौरन ताड़ लिया।

कृष्ण ने आज सभा में एक अद्भुत प्रस्ताव पेश किया।

मेरा प्रयोजन आपसे यह था कि आप मेरे साथ अवश्य चलें।

प्र० (४)—अन्तिम वाक्य का पृथक्करण करो।

उत्तर—वही उसका स्वामी होने का अधिकारी भी हो सकता है।

उद्देश्य		विधेय			
कर्त्ता	कर्त्ता-काल	कर्म	कर्म वा विस्तार	क्रिया	क्रिया विस्तार
वही		उसका स्वामी		होसकता है	होने का अधि-कारी भी

पाठ १४—अन्धा बालक

किसको .... ताप से।

शब्दार्थ—लोक=(सं० जा०) संसार, दुनिया। भेद=अन्तर फ़र्क़। ज्ञान=(सं० जा०) समझ। समदर्शिता=(अव्य० समास) (सम=एकसी, बराबर+दर्शिता=नज़र, निगाह) एकसी नज़र। पुण्य=धर्म, शुभ कर्म। उद्भ्रान्त=भूला हुआ। विवश=लाचार। ताप=दुःख।

गद्य—यह लोक किसको अँधेरा या उजेला कह रहा है मुझको दोनों का भेद-ज्ञान न हुआ, यह शोक है मुझको समदर्शिता मिली यह पुण्य से या पाप से (मिली) भगवन्! उद्भ्रान्त हूँ विवश हो ताप से काँपता हूँ।

पद्यार्थ—यह दुनिया किसको अँधेरा और उजाला कह रहा है। मुझको इन दोनों बातों का ज्ञान ही नहीं है इस बात का मुझे दुःख है। मुझे जो यह समदर्शिता (सबको एक ही नज़र से देखना) मिली है, वह किसी पुण्य से या किसी पाप से मिली है। हे प्रभो! मैं भूला हुआ हूँ और दुःख से लाचार होकर काँप रहा हूँ॥ १॥

है .... वहाँ।

शब्दार्थ—नीला=(विशे०) नीला। नभ=आकाश। श्वेत सफ़ेद। रवि=सूर्य। नित्य=प्रतिदिन। उष्ण=गर्म। निशा= रात।

गद्य—किस भाँति का नीला नभ है, किस ढँग का श्वेत जल है, किस तौर के हरे पत्ते, किस रंग का प्रात का रवि, इनके देखने को नित्य ही चित्त व्याकुल हुआ है। मुझको बस यही ज्ञान है कि दिन उष्ण, निशा शीतल है।

पद्यार्थ—किस प्रकार का यह नीला आकाश है, और किस

तरह का यह सफ़ेद (स्वच्छ) पानी है ? किस ढंग के यह हरे पत्ते हैं और किस रँग का यह प्रातःकाल का सूर्य्य है ? इनके देखने को नित्य मेरा चित्त अकुलाता रहता है। मुझे केवल इतना ही ज्ञान है कि दिन गर्म और रात ठण्डी है।

(पृष्ठ ६३)

कैसे ········ नहीं।

शब्दार्थ—भयङ्कर=(विशे०) डरावना। लख=देख कर। रोमाञ्च=रोंगटे खड़े होना। दर्पान्ध=(विशे०) घमण्ड में अन्धे। विकृत=(विशे०) बदला हुआ, मलीन। विवेचन=(सं० भा०) निर्णय, ज्ञान।

गद्य—भयङ्कर रूप लख अङ्ग में रोमाञ्च कैसे होता (है) दर्पान्ध जनका विकृत मुख सदा किस ढंग में रहता कहिए तो सही मैं किस भाँति इसका विवेचन करूँ अथवा बड़ा अच्छा हुआ उसे मैंने नहीं देखा।

पद्यार्थ—भयानक रूप को देखकर शरीर के रोंगटे किस प्रकार खड़े हो जाते हैं। घमण्ड से अन्धे आदमी का घमण्ड से बदला हुआ मुख हमेशा किस तरह का रहता है बतलाइए तो सही इस बात का निर्णय मैं किस प्रकार करूँ यायह अच्छा हुआ जो मैंने उसे नहीं देखा है ॥ ३ ॥

विकसित ········ अनुमान से।

शब्दार्थ—विकसित=खिले, फूले। पद्म=(सं० जा०) कमल, सरोज। मुकुलित=(विशे०) अधखिले। प्रत्यक्ष=सामने, सम्मुख। अनुमान=अन्दाज़।

गद्य—जो पद्म विकसित हुएथे वही मुकुलित होने लगे जो सो रहे थे (वह) जाग गये, जो जगे थे (वह) सोने लगे। मैंने

उन्हें न देखा केवल कान से सुन रहा हूँ । जिसे प्रत्यक्ष न हो उसको अनुमान से क्या लाभ है ?

पद्यार्थ—जो कमल खिले हुए थे वह अब अध खिले होने लगे और जो सो रहे थे वह जाग गये और जो जगे हुए थे वह सोने लगे मैंने उनको आँख से देखा नहीं है केवल कान से सुन रहा हूँ जिसको आँख से नहीं देखा है उसके अनुमान से क्या लाभ हो सकता है ॥ ४ ॥

पीयूष·········नहीं ।

शब्दार्थ—पीयूष=(सं० ज़ा०) अमृत, सुधा । पय=(सं० जा०) दूध । पयोधर=(सं० जा०) (पयस्=दूध या पानी+धर= रखने वाला) स्त्री की चूची, स्तन, बादल । पद=पैर, चरण । जन्मान्ध=(तत्पु० समा०) (जन्म+अन्ध) ।

गद्य—जिसके पयोधर ने मुझे पीयूष-पय पिलाया है । जिसने मुझे खिलाया है जिसने मुझे जिलाया है । हा शोक ! मैंने उसका पद कमल कभी नहीं देखा है जीवितों के मध्य में जन्मान्ध का लेखा नहीं है ।

पद्यार्थ—जिस माता ने अपने स्तनों से मुझको अमृत रूपी दूध पिलाया है और जिसने मुझे खिलाया है (पाला है) और जिसने मुझे जीवन दिया है (जिलाया है) शोक है मैंने उस (माता) के कमल रूपी चरणों को कभी नहीं देखा है जिन्दों के बीच में जन्म के अन्धे की कोई गिनती नहीं है अर्थात् जन्म का अन्धा पुरुष जीवित होते हुए भी मरे हुए पुरुष के समान है ॥५॥

सुन कर·········कहीं ।

शब्दार्थ—विश्व=(सं० जा०) संसार । वैचित्र्य=(सं० भा०) विचित्रता, अनोखापन । उद्विग्न=(विशे०) चिंतित, व्याकुल ।

मग्न=डूबा हुआ। दृग=(सं० स्त्री०) नेत्र, आँख। विभु=स्वामी, परमेश्वर।

गद्य—(मैं) विश्व के वैचित्र्य की प्रशंसा सुनकर उद्विग्न हूँ मैं भी उसे कैसे लखूँ इस हेतु चिन्ता मग्न हूँ जब विभु ने दृग नहीं दिये तब कान भी नहीं देता जिसका नाम न सुनता फिर उस पर कहीं ध्यान देता।

पद्यार्थ—मैं संसार की विचित्रता की प्रशंसा सुनकर बड़ा व्याकुल हूँ मैं उस को किस प्रकार देखूँ इस कारण मैं चिन्ता में डूबा हुआ हूँ जब परमात्मा ने मुझे नेत्र नहीं दिये तो मुझे कान भी न देता क्योंकि मैं किसी चीज़ का नाम न सुनता और फिर उस पर ध्यान ही नहीं देता॥ ६॥

वक·········अनुपान भी।

शब्दार्थ—वक=(सं० जा०) बगुला। श्वेत=(विशे०) सफ़ेद। पिक=(सं० जा०) कोयल। जगदीश=(जगत्+ईश=स्वामी) ईश्वर। व्यर्थ=वृथा। ओषधि=दवाई। अनुपान=दवा के साथ खाने की वस्तु।

गद्य—वक श्वेत, पिक श्याम होते इस भेद को कैसे कहूँ जगदीश बतलाइए जग बिना देखे कैसे रहूँ उस पर विश्वास कैसे रहे जिस का अनुमान भी न हो क्या बिना ओषधि के अनुपान भी व्यर्थ नहीं होता।

पद्यार्थ—बगुला सफ़ेद और कोयल काली होती है इस भेद को मैं कैसे कहूँ? हे प्रभो! आप ही बतलाइए बिना संसार के देखे कैसे रहूँ? उस पर विश्वास क्योंकर हो सकता है कि जिसका अनुमान ही न हो? क्या बिना दवा के अनुपान (दवा के साथ खाई जाने वाली चीज़) व्यर्थ नहीं होती है? अर्थात् व्यर्थ होती है॥ ७॥

शुचि··········जाता कहा।

शब्दार्थ—शुचि=(विशे०) पवित्र। शस्य=(सं० जा०) अनाज। श्यामा=(विशे०) काला। भू=(सं० जा०) पृथ्वी। सुखद=आनन्द देने वाली। श्रुति=(सं० जा०) कान। अमृत भरी=(विशे०) बहुत अच्छी-मीठी। युक्ति=उपाय, तदबीर। कल=(सं० जा०) कल, मशीन।

गद्य—शुचि शस्य श्यामा जन्म भू स्वर्ग से भी सुन्दर है श्रुति के लिए यह अमृत भरी बात कैसी सुखद है पर उसको देखने के हेतु चित्त व्याकुल हो रहा (है) क्या युक्ति है? क्या यन्त्र है? कुछ भी नहीं कहा जाता।

पद्यार्थ—मेरी पवित्र अनाज से भरी हुई काली मातृभूमि स्वर्ग से भी अधिक सुन्दर है कानों के लिए यह मधुर बात कैसा आनन्द देने वाली है लेकिन उसको देखने के लिए मेरा चित्त व्याकुल हो रहा है वह कौनसा उपाय है और कौन सी मशीन (कल) है यह कुछ भी नहीं कहा जाता है ॥ ८ ॥

है ········होता नहीं।

शब्दार्थ—गन्ध (सं० जा०) बास, बू। ज्ञात=मालूम। पंक=कीच। निर्गन्ध=(निर्=नहीं+गन्ध) बिना बू का। व्याल=(सं० जा०) साँप। मम=मेरा। अङ्क=हृदय, छाती, गोद। कर=हाथ।

गद्य—चन्दन पंक में गन्ध से ही ज्ञात होता है मम अङ्क में निर्गन्ध फूल की माला व्याल-सम है मुझको पूर्व, पश्चिम का कभी कुछ ज्ञान नहीं होता है।

पद्यार्थ—चन्दन और कीचड़ का भेद बास से ही मालूम होता है। बिना सुगन्ध के फूलों की माला मेरे हृदय पर साँप के समान है मुझको पूर्व और पश्चिम का कुछ भी ज्ञान कभी नहीं

होता है। हे प्रभो! आप ही कहिए भला मैं किस प्रकार हाथ मल कर नहीं रोता हूँ अर्थात् रोता हूँ॥ ६ ॥

जब..........यामिनी।

शब्दार्थ—स्वप्न=(सं० जा०) सपना। देशान्तर=दूर के देश। छटा=(सं० भा०) शोभा। दमकती=चमकती। घन=बादल। दामिनी=(सं० जा०) बिजली। राका=रात। शशि=चंद्रमा। यामिनी=रात।

गद्य—मैं जब स्वप्न में भी निज करों को नहीं देख सकता तब मेरे लिए देश देशान्तर की छटा व्यर्थ ही है हा दामिनी घन की गोद में किस भाँति दमकती है यामिनी राका शशि से मिली किस भाँति खिलती है।

पद्यार्थ—मैं जब स्वप्न में भी अपने हाथों को नहीं देख सकता हूँ तब फिर मेरे लिए देश विदेशों की शोभा व्यर्थ ही है अफ़सोस है कि बिजली बादलों की गोद में किस प्रकार चमकती है और रात चंद्रमा से मिल कर किस प्रकार खिलती है॥१०॥

दर्शन.......किया।

शब्दार्थ—रमापति=(तत्पु० समा०) (रमा=लक्ष्मी+पति=विष्णु)। सुदर्शन=चक्कर जो विष्णु भगवान् का एक मुख्य हथियार है। निर्जल=(विशे०) (निर्+जल) बिना पानी के सूखी। मरुस्थल=(सं० जा०) रेगिस्तान। जलज=(सं० जा०) (जल+ज=पैदा होना) कमल। निष्फल=व्यर्थ। निर्माण=बनाना। परिश्रम=मेहनत।

गद्य—क्या रमापति के सुदर्शन का दर्शन कभी मिलेगा क्या कभी निर्जला मरुस्थल में जलज सूखकर खिलेगा।

जगदीश ने जन्मान्ध जन को जन्म ही निष्फल दिया । विभु ने उसके निर्माण में व्यर्थ ही परिश्रम किया ।

पदार्थ—क्या विष्णु भगवान् के सुदर्शन चक्र का कभी दर्शन मिलेगा ? क्या कभी सूखे रेगिस्तान में कमल सूखकर खिलेगा ? प्रभु ने जन्म के अन्धे को जन्म वृथा ही दिया है ईश्वरने उसके बनाने (पैदा करने) में व्यर्थ ही मेहनत की है ।

प्रश्नोत्तर ।

प्र० (१)—निम्नलिखित शब्दों की सहायता से एक एक वाक्य बनाओ :—
उद्भ्रान्त, उद्विग्न, विकृत, विवश, रवि, अनुमान, पद कमल, विभु ।

उत्तर—राम के इस कार्य को देखकर मैं बड़ा उद्भ्रान्त हुआ, आज मोहन बड़ा उद्विग्न दीखता है ।

स्कूल के जाने के पश्चात् कृष्ण का विकृत मुख देखकर मुझे बड़ा अचम्भा हुआ ।

मैं आपकी सहायता से विवश हो मुझे बनारस जाना पड़ा ।

छिपते हुए रवि को कभी मत देखो ।
मेरा अनुमान है कि आप अवश्य उत्तीर्ण होंगे ।
प्रातः उठकर माता के पद कमलों में शीश नवाओ ।
हे विभु ! आपके बिना दीनों का सहायक कोई नहीं है ।

प्र० (२)—अन्तिम पद में निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या करो ।
सुदर्शन, जन्मान्ध, निष्फल, निर्माण, व्यर्थ, यामिनी दामिनी, राका ।

उत्तर—सुदर्शन=चक्र का नाम जो विष्णु भगवान् का मुख्य हथियार था ; जन्मान्ध=(जन्म+अन्ध) जन्म से अन्धा ।

निष्फल=(निर्+फल) व्यर्थ। निर्माण=बनाना। व्यर्थ= वृथा। यामिनी=रात। दामिनी=बिजली, विद्युत्। राका=रात।

पाठ १५—महाकवि कालिदास का चरित्र

महाकवि=(विशे०) (महा+कवि) बड़े कवि। कालिदास—यह राजा विक्रमादित्य के समय में हुए थे इनके बराबर का दुनिया में कोई कवि नहीं हुआ है। चरित्र=हाल, जीवनी।

मालवा=यह एक भारत के भाग का नाम है जो मध्य भारत में स्थित है। प्रतापशाली=(विशे०) तेजस्वी, यशस्वी। शूरवीर=(सं० जा०) बलवान्, बहादुर। गुणज्ञ=(सं० जा०) गुणों के जानने वाला। विद्वानों=(सं० जा०) पण्डितों। राजधानी=(सं० जा०) वह जगह जहाँ देश का राजा रहता है। नवरत्न=(नव=नौ+रत्न) नौ बड़े बड़े विद्वान्। नवरत्नों के नाम (१) धन्वन्तरि (२) क्षपणक (३) अमरसिंह (४) शंकु (५) वेतालभट्ट (६) घटकर्पर (७) कालिदास (८) वराहमिहिर (९) वररुचि। बहुधा=अक्सर। बचपन=लड़कपन। अमूल्य=(विशे०) बेश क़ीमत, मूल्यवान्। प्रचलित=मुरव्विज, जारी। गुणवती=(विशे०) गुण वाली। पण्डिता=पढ़ी लिखी, विद्वान्। प्रण=प्रतिज्ञा। शास्त्रार्थ=शास्त्रों पर बहस, वादविवाद। विदुषी=(विशे०) पण्डिता। प्रशंसा=(सं० भा०) बड़ाई। निदान=आख़िरकार। एक मत=एक राय, एक सलाह। निश्चय=तय। मूर्ख=बेवक़ूफ़। खोज में=तलाश में।

(पृष्ठ ६६)

आदर=(सं० भा०) सत्कार। संकेतों=इशारों। द्वारा=

शुद्धि से। पड़ी पड़ाकर=समझा बुझाकर। आसन=स्थान। निवेदन=विनती, प्रार्थना। बृहस्पति=देवताओं के गुरु का नाम; सप्ताह के एक दिन का नाम। समान=तुल्य, बराबर। मौन-व्रत=चुप रहने की प्रतिज्ञा। अभिप्राय=मतलब, अर्थ। गूढ़=गहरा। माननी पड़ी=स्वीकार करनी पड़ी। राजभवन=राजाओं के महल। हल्ला=शोर। यथार्थ=ठीक ठीक, सही। उच्चारण=बोलना।

(पृष्ठ ६८)

उट्र=(सं० जा०) (शुद्ध उष्ट्र) ऊँट। छल=(सं० भा०) कपट। फूट फूट कर=दिल की बाँध कर, बेज़ार होकर। क्रोध=गुस्सा। लज्जित=(सं० भा०) शरमिन्दा। आत्मघात=(आत्म+घात=नाश) आत्महत्या, खुदकुशी। सन्नद्ध=तैयार। अनावृत=बिना ढका हुआ, बिना घेरा हुआ। कपाटं=किवाड़। द्वारं=दरवाज़े। देहि=दो। अस्ति=है। कश्चित=कुछ। वाक्=वाणी, बोली। विशेषः=विशेषता। प्रश्न=सवाल। पद=शब्द। ग्रहण करके=लेकर। काव्य=कविता की पुस्तक। अस्ति=है। अस्त्युत्तरस्यां=(अस्ति=है+उत्तरस्यां=उत्तर दिशा में)। निर्माण=बनाना, तय्यार किया। कश्चित् कान्ता विरहगुरुणां=(कश्चित=कोई+कान्ता=स्त्री+विरह=जुदाई+गुरुणां=बड़ी) किसी स्त्री की बड़ी जुदाई से। यह प्रथम पद मेघदूत का है। वागर्थाविव-संपृक्तौ=(वाक्=वाणी + अर्थौ=मतलब+इव=समान+संपृक्तौ=जुड़े हुए) यह पद रघुवंश के आदि में है। धुरन्धर=(विशे०) बड़ा।

(पृष्ठ ६९)

परम्परा से=हमेशा से, सदैव से। सुविधा=(सं० जा०) आराम। पुष्ट=मज़बूत, सही। प्रमाण=सबूत। संक्षिप्त=मुख्तसिर, थोड़े से में। वृत्तान्त=हाल, बयान। अङ्कित किया है=

लिखा है। मतभेद=एक राय न होना। ग्रन्थ=(सं० जा०) पुस्तक, किताब।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—विद्वत्तमा जैसी गुणवती और पंडिता थी उसका विवाह तो किसी बहुत बड़े पण्डित के साथ होना चाहिए था पर एक मूर्ख के साथ कैसे हुआ?

उत्तर—विद्वत्तमा का प्रण था कि जो कोई मुझे शास्त्रार्थ में हरा देगा उसके साथ अपना विवाह करूँगी। बड़े बड़े पण्डित उसके रूप और गुण की प्रशंसा सुनकर आते और शास्त्रार्थ में हार कर चले जाते। आखिरकार पण्डितों ने क्रुद्ध हो उसका विवाह एक ऐसे मूर्ख के साथ करने का निश्चय किया कि जिससे उसे तमाम उम्र रोना पड़े। एक मूर्ख जिस डाल पर बैठा था उसी को काट रहा था। उसे पट्टी पढ़ाकर ले आये कि तुम कुछ मुँह से न बोलना। राज सभा में ऊँचे आसन पर बिठाकर राजकुमारी से कहा कि ये आजकल मौनव्रत धारण किये हुए हैं, अतः तुमको जो कुछ कहना हो इशारे में कहो शास्त्रार्थ हुआ और पंडितों ने राजकुमारी को शास्त्रार्थ में हरा दिया। इस प्रकार विद्वत्तमा का विवाह एक मूर्ख के साथ होगया।

प्र० (२)—विद्वत्तमा को कैसे मालूम हुआ कि उसका पति कालिदास निरा मूर्ख है?

उत्तर—विवाह होने के पश्चात् जब राजकुमारी और कालिदास दोनों राजभवन में सो रहे थे तो एक ऊँट रात को हल्ला करने लगा तो राजकुमारी ने पूछा यह क्या बात है तो कालिदास ने उत्तर दिया—उट्र चिल्ला रहा है। राजकुमारी के बार बार पूछने पर उट्र उट्र ही चिल्लाता रहा और

कुछ शब्द उच्चारण न बोल सका। तब राजकुमारी ने जाना कि कालिदास महा मूर्ख है।

प्र० (३)—कालिदास ने विद्योत्तमा के पास कब और कैसे अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया ?

उत्तर—राजकुमारी को जब यह विदित हुआ कि कालिदास महा मूर्ख है तो उसने उसे घर से निकलवा दिया। इनको बड़ी लज्जा आई और आत्मघात करने को तैयार होगये मगर कुछ काल पढ़ने चले गये और थोड़े ही दिनों में बड़े भारी पंडित होगये। तब घर वापस आये तो देखा किवाड़ बन्द हैं। किवाड़ खोलने के लिए उन्होंने कहा—"अनावृत कपाटं द्वारं देहि" राजकुमारी ने पति की आवाज़ पहचान कर कहा कि "अस्ति कश्चिद्वाग्विशेषः" कालिदास ने अपने इस वाक्य के एक पद के तीन बड़े काव्य बनाये।

प्र० (४)—कालिदास ने किन किन महान् ग्रन्थों की रचना की ?

उत्तर—कालिदास ने तीन बड़े काव्य बनाये (१) कुमारसम्भव (२) मेघदूत (३) रघुवंश, और भी कई ग्रन्थ लिखे।

पाठ १६—नल दमयन्ती

पुत्री=(सं० आ०) बेटी, लड़की। सुरूपा = सुन्दरी। प्रसिद्ध=मशहूर। स्वयंवर = (सं० मा०) (स्वयं=खुद+वर= दूल्हा) अपने आप दूल्हा पसन्द करना। सुशील = अच्छे चाल चलन वाला, साधु। मोहित=मुग्ध, आसक्त। जयमाल= वह माला है जिसको लड़की अपनी इच्छानुसार वर को पहनाती है, वरमाला। दोष=(सं० मा०) बुराई, अवगुण। पासा=(सं० आ०) एक प्रकार का जुआ जो पासों से खेला।

जाता है। व्यसन=(सं० भा०) शौक़, लत। नैहर=(सं० जा०) पीहर, मायका, स्त्री के पिता का घर। ढिंढोरा=डौंड़ी, ऐलान।

कन्द=(सं० जा०) मूल, जड़।

(पृष्ठ ७१)

कोमल=(विशे०) मुलायम। विपत्ति=(सं० भा०) दुःख, कष्ट। विलाप=विलखना। कठोर=(विशे०) कठिन, कड़ा। सुखदायक=सुख देने वाला। त्यागें=छोड़ें। वृक्ष=(सं० जा०) पेड़, दरख़्त। शय्या=(सं० जा०) खाट, सेज, पलँग। दुर्गम=(विशे०) (दुर्=कठिन+गम्=जाना) कठिन, विकट। सह= बर्दाश्त। निदान=आख़िरकार।

सिवा=अतिरिक्त। वस्त्र=(सं० जा०) कपड़ा। दैवयोग= अचानक, अकस्मात्।

(पृष्ठ ७२)

स्वामी=(सं० जा०) मालिक, पति। समीप=निकट। मूर्छित=वेहोश, अचेत, वेसुध। अपराध=(सं० भा०) क़ुसूर, दोष। सुध=(सं० भा०) ख़बर। व्यथा=(सं० भा०) दुःख, क्लेश। समस्त=(विशे०) तमाम, सम्पूर्ण। व्याकुल=(सं० भा०) दुःखी।

(पृष्ठ ७३)

पति-वियोग=(पति+वियोग=जुदाई) पति से अलग होना। समाप्ति=अख़ीर, ख़तम। अजगर=(सं० जा०) बड़ा साँप। भाग्य=प्रारब्ध, क़िस्मत। व्याध=(सं० जा०) शिकारी, बहेलिया। साबित=प्रमाणित। दुष्ट=नीच, दुर्जन। महिमा=(सं० भा०) तारीफ़। विलक्षण=(विशे०) विचित्र, अपूर्व। अनन्तर= पीछे, पश्चात्। संयोग से=दैवयोग से।

विरह=(सं० भा०) जुदाई, वियोग। भ्रमण=घूमते फिरना।

(पृष्ठ ७४)

सारथि = (सं० जा०) रथवान्, सूत। समाचार =(सं० भा०) ख़बर, हाल। ताड़ गई=समझ गई। आशा=उम्मेद। सम्मिलित=शामिल, शरीक। निपुण=(विशे०) चतुर, होशियार। तिथि=तारीख़। अत्यन्त=(विशे०) बहुत, अति, अधिक। समीप=पास, निकट, नज़दीक। चिन्ता=(सं० भा०) फ़िक्र। अल्प=(विशे०) थोड़ा। निवेदन = (सं० भा०) प्रार्थना, विनती, गुज़ारिश।

(पृष्ठ ७५)

सत्कार=(सं० भा०) आदर मान, इज़्ज़त। रचना=आयोजना, तय्यारी, सजावट। घुड़साल=(सं० जा०) घोड़े के बाँधने का स्थान। चकित=(सं० भा०) विस्मित, अचम्भित। भेंट= (सं० भा०) दर्शन, मुलाक़ात। आश्चर्य = (सं० भा०) अचम्भा। निर्दयता=(सं० भा०) कठोरता, बेरहमी। भयङ्कर= (विशे०) डरावने, डर दिलाने वाले। जपा करती हैं=भजा, करती हैं।

(पृष्ठ ७६)

निन्दा=बुराई। क्षमा=मुआफ़। ठिकाने नहीं रहती=बिगड़ जाती है, मारी जाती है। जी भारी हो आया=गला रुक गया, बोला न जा सका। स्मरण=याद। अनाथ=(सं० जा०) यतीम। स्वीकार=मंज़ूर।

(पृष्ठ ७७)

सामग्री=सामान, रसद। तुरन्त=शीघ्र। पदार्थों=(सं० जा०) चीज़ों। स्वाद = (सं० भा०) ज़ायक़ा। परीक्षाओं=

इम्तहानों। भेष=शक्ल। अवला=(सं० जा०) औरत, स्त्री। विछोह=वियोग। अवगुण=बुराई, दुर्गुण। प्रयोजन=मतलब, अर्थ।

(पृष्ठ ७८)

नम्रता = (सं० भा०) कोमलता, मधुरता। परित्याग = छोड़ना। अपार=(विशे०) (अ=नहीं+पार) जिसका पार न हो, अति, वहुत। बुद्धिमत्ता=(सं० भा०) अक्लमन्दी। अज्ञानता =(सं० भा०) अजानकारी। जामाता=(सं० जा०) दामाद, पुत्री का पति।

(पृष्ठ ७६)

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—जुआ खेलना बुरा काम है, इस वात को उदाहरण सहित समझाओ।

उत्तर—जुआ खेलना वहुत ही बुरी आदत है जुआ खेलने से धनाढ्य से धनाढ्य पुरुष निर्धन हो जाता है इसी जुए के कारण राजा नल को अपना सारा राज पाट छोड़ कर वन में घूमना पड़ा था और सारथि का काम करना पड़ा था और अनेक बुरे काम करने पड़ते हैं इसलिए मनुष्य को चाहिए कि इस से सदैव वचता रहे।

प्र० (२)—दमयन्ती ऐसी पतिव्रता होने पर भी उसने दूसरी वार स्वयंवर का प्रबन्ध क्यों कराया था स्वयंवर का ठीक ठीक अर्थ वताओ।

उत्तर—दमयन्ती ने दूसरी वार स्वयंवर का प्रबन्ध इसलिए कराया था कि राजा नल को इस प्रकार पा सकूँगी यही कारण था कि राजा ऋतुपर्ण के अतिरिक्त और किसी राजा को इसकी सूचना नहीं दी और स्वयंवर की

तिथि इतनी निकट रक्खी थी कि सिवाय राजा नल के और कोई सारथि इतनी दूर स्वयंवर की तिथि तक नहीं आ सकता था।

स्वयंवर= (स्वयं=आप से+वर=दूल्हा) आप अपने पति को चुनना।

प्र० (३)—राजा ऋतुपर्ण के सारथि ही राजा नल हैं इस बात की परीक्षा दमयन्ती ने कैसे की ?

उत्तर—दमयन्ती के पिता ने राजानल को ढूँढ़ने के लिए चारों ओर आदमी भेजे थे। उन में से एक ने आकर यह सूचना दी कि अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण का एक सारथि है जो अपना नाम वाहुक बताता है मगर वह दमयन्ती के नाम को सुनकर रोने लगा था इस समाचार से रानी को सन्देह हुआ कि वह ही राजानल है उसने राजा ऋतुपर्ण को उनके सारथि सहित स्वयंवर का निमन्त्रण देकर बुला लिया फिर उसने केशनी को भेजकर राजानल की बाबत पुछवाया तो वह आँखों में आंसू भरलाये। यह समाचार भी केशनी ने दमयन्ती से कहा फिर रानी ने अपने पुत्र और पुत्री को केशनी के साथ भेजा राजानल ने उन बच्चों को गोद में लेकर छाती से लगा लिया—उनकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी दमयन्ती को इस बार पूर्ण निश्चय होगया कि राजानल यही हैं फिर उसने उनके हाथ के बने हुए पदार्थ मांग कर खाये तो उसे वही ज़ायक़ा (स्वाद) आया जो राजानल के बनाये हुए पदार्थों में आया करता था अब दमयन्ती को राजा नल के होने में कुछ सन्देह नहीं रहा।

प्र० (४)—दमयन्ती का अजगर और व्याध से छुटकारा पाने का हाल बयान करो इस छुटकारे से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है।

उत्तर—जब राजानल दमयन्ती को अकेली छोड़कर चलेगये तब दमयन्ती को जङ्गल में एक अजगर ने आकर घेर लिया। उसको देख कर भय से चिल्ला उठी। उसकी आवाज़ को सुनकर एक व्याध आ पहुँचा, उसने अजगर को बाण से मार दिया। इसके पश्चात् वह व्याध दमयन्ती का सतीत्व नष्ट करने को उसे तङ्ग करने लगा, दमयन्ती ने उस से बहुत कुछ विनती और प्रार्थना की मगर उसने कुछ ध्यान न दिया। जब दमयन्ती उसके कृत्य से सहमत न हुई तो उसने उसको मारने के लिए बाण चलाया, वह बाण दमयन्ती के न लगकर उलटा व्याध के लगा और वह मरगया। इस प्रकार दमयन्ती ने दोनों से छुटकारा पाया।

इस छुटकारे से हमको यह शिक्षा मिलती है कि जो अपने धर्म पर दृढ़ रहता है उसकी रक्षा ईश्वर करता है।

पाठ १७—तुलसीदास के दोहे।

आपु आपु ········सोइ।

शब्दार्थ—सुजन=(सं० जा०) (सु=अच्छा+जन=आदमी) अच्छे आदमी, सत्पुरुष। सराहिय=प्रशंसा के योग्य।

गद्य—"तुलसी" आपु आपु सब भलो कहँ, अपने कोइ कोइ कहँ जो सब भलो कहँ सुजन सोइ सराहिय।

पद्यार्थ—तुलदासजी कहते हैं आप अपने को सब भला कहते हैं और अपने सम्बन्धियों को कोई कोई भला कहते हैं।

जिसको सब भला कहैं उसी की सज्जन पुरुष प्रशंसा करते हैं।

तुलसी·········धोइ।

शब्दार्थ—कीरति=(सं० भा०) बड़ाई, यश,। खोइ=खोकर, मिटाकर। मसि=(सं० जा०) स्याही। मुए=मरने पर।

गद्य—"तुलसी" जे पर कीरति को खोइ कीरति चहैं तिन के मुँह मसि लागिहै मुए धोइ न मिटिहै।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं जो दूसरों के यश को मिटाकर अपना यश चाहते हैं उनके मुँह से ऐसी स्याही (कलंक) लगेगी कि मरने पर धोने से नहीं छूटेगी।

तुलसी·········जाय।

शब्दार्थ—जस=जैसी। भवितव्यता=(सं० भा०) होनहार। सहाय=मदद।

गद्य—"तुलसी" जस भवितव्यता तैसी सहाय मिले, आपु ताहि पर न आवै ताहि तहाँ लैजाय।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि जैसी होनहार होती है उसको वैसी ही सहायता मिलती है, आप उसके पास नहीं आती है बल्कि उसको वहीं ले जाती है।

(पृष्ठ ८०)

तुलसी········ कठोर।

शब्दार्थ—उपजत=पैदा होता है। वशीकरन=वस में करने वाला। परिहरु=छोड़ना।

गद्य—"तुलसी" मीठे वचन ते चहुँ ओर सुख उपजत, वशीकरन एक मंत्र है कठोर वचन परिहरु।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि मीठे वचनों से चारों ओर सुख पैदा होता है वश में करने वाला एक यही मंत्र है कि कठोर वचनों को छोड़ दो।

तुलसी ·······देत।

शब्दार्थ—संत=सज्जन पुरुष। सुअम्ब=(सं० जा०) आम। तरु=(सं० जा०) वृक्ष, पेड़। पर हेत=दूसरे की भलाई। पाहन=(सं० जा०) पत्थर। हनें=मारें। उतते=उधर से।

गद्य—"तुलसी" संत सुअम्ब तरु परहेत फूलि फलहिं, इतते वे पाहन हनें उतते वे फल देत।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि सज्जन पुरुष और आम का वृक्ष दूसरों के ही लिए फूलते और फलते हैं, इधर से ये पत्थर मारते हैं उधर से वे (वृक्ष) फल देते हैं।

काम·········समान।

गद्य—"तुलसी" जब लग मन में काम, क्रोध, मद, लोभ की खान (है) तब लग पण्डित मूरखौ एक समान (है)।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि जबतक मन में काम, क्रोध, मोह और लोभ की खान है; तबतक पंडित और मूर्ख एक ही समान है अर्थात् भले बुरे का कुछ भी ज्ञान नहीं होता है।

स्वारथ·······जाय।

शब्दार्थ—स्वारथ=मतलब। सदा=हमेशा। नसायं=दूर हो। उपदेश=शिक्षा। किमि=किस प्रकार।

गद्य—जाते विपति नसाय सो स्वारथ जानहुँ, "तुलसी" विन गुरु उपदेश सो किमि जानो जाय।

पद्यार्थ—जिससे दुख दूर होजायँ उसी को स्वार्थ (मतलब) जानना चाहिए। तुलसीदासजी कहते हैं कि वह विना गुरु की शिक्षा के किस प्रकार जाना जाता है, अर्थात् नहीं जाना जाता है।

गुरु·······विरोध।

शब्दार्थ—सिद्धान्त=मतलब, आशय। यथारथ।=(विशे०) सच्चा, सही। बोध=ज्ञान। लखाय=होने। विरोध=झगड़ा,क्लेश।

गद्य—"तुलसी"गुरु करिबो यह सिद्धान्त (है) यथारथ बोध होय उर अनुचित उचित लखाय विरोध मिटै।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि गुरु करने से यह तात्पर्य है कि उससे सच्चा ज्ञान पैदा हो और हृदय में बुरा भला दीख पड़े और झगड़ा दूर हो जाय।

नीच·········भुअंग।

शब्दार्थ—तजै=छोड़े। सत=(विशे०) अच्छा। विटप=(सं० जा०) वृक्ष, पेड़। तजत=छोड़ता। भुजङ्ग=(सं० जा०) साँप।

गद्य—"तुलसी" नीच जो सत्‌संग पावैं निचाई नहीं तजै, चन्दन विटप बसि भुअंग विष नहीं तजत।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि नीच पुरुष सत्‌संग को पाकर भी अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता है, जैसे चन्दन के वृक्ष पर रहकर भी साँप अपने विष को नहीं छोड़ता है।

नीच·········अकाश।

शब्दार्थ—चंग=(सं० जा०) पतंग। सम=बराबर। भुइँ=पृथ्वी।

गद्य—"तुलसीदासजी" नीच चंग सम जानिबो सुनि, लखि ढील देत भुइँ गिर खैंचत अकाश चढ़त।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि दुष्ट मनुष्य पतङ्ग के समान होता है ऐसा देखा और सुना है, जैसे ढील देने पर पतङ्ग पृथ्वी पर गिर पड़ती है और खींचने से आकाश पर चढ़ती है।

तुलसी·········जान।

शब्दार्थ—हित=भलाई। अनहित=बुराई। मामला=प्रसङ्ग।

गद्य—"तुलसी" हित अनहित तीन प्रकार ते पहिचान परवस परे, परोस बस मायला परे जान।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि बुराई भलाई तीन प्रकार से जानी जाती है—एक वश में होकर, दूसरे पड़ोस में रहकर, तीसरे काम पड़ने पर मालूम होती है।

तुलसी.........निदान।

शब्दार्थ—काया=(सं० जा०) शरीर। निदान=आख़िर। लुनै=काटे।

गद्य—"तुलसी" काया खेत है, मनसा किसान भयो, पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै निदान सो लुनै।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि शरीर जो है वह खेत के समान है, और मन जो है वह किसान के तुल्य है, पाप और पुण्य दोनों बीज हैं जिसको बोवेगा अन्त में उसी को काटेगा, अर्थात् पाप करेगा तो पाप का फल मिलेगा और पुण्य करेगा तो पुण्य का फल मिलेगा।

अर्ब.........काज।

शब्दार्थ—द्रव्य=धन। उदय=निकलना। अस्त=छिपना।

गद्य—"तुलसी" अर्ब खर्ब लौं द्रव्य, उदय अस्त लौं राज है जो निज मरन है तो केहि काज आवे।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि अनन्त धन है और सूर्य निकलने से छिपने तक राज्य है, यदि अपना मरना है तो वह सब किस काम का है अर्थात् सब व्यर्थ है।

(पृष्ठ ८१)

आवत.........मेह।

शब्दार्थ—हर्ष=प्रसन्न होना। सनेह=प्यार। कंचन=सोना।

गद्य—"तुलसी" आवत ही हर्ष नहीं नयनन सनेह नहीं (हो), (वहाँ) कंचन मेह बरसे तहाँ न जाइए।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि आते ही तो प्रसन्न न हों और नेत्रों में प्यार न हो, वहाँ चाहे सोने का मेह बरसे पर वहाँ कभी न जाना चाहिए।

तुलसी.........हरिनाम।

शब्दार्थ—जग=संसार। हरिनाम=ईश्वर का नाम।

गद्य—"तुलसी" जग में आइकैं दो काम कर लीजे, देवे को टुकड़ा भला लेवे को हरिनाम (है)।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि इस संसार में आकर दो कार्य कर लेने चाहिए—एक तो यह कि देने के लिए तो टुकड़ा अच्छा है, दूसरा काम यह कि लेने के लिए ईश्वर का नाम है।

तुलसी.........प्रीति।

शब्दार्थ—लायक (विशे०) योग्य। बैर=शत्रुता। अरु=और।

गद्य—"तुलसी" आपने कुल की रीति कबहुँ न त्यागिये, ब्याह, बैर अरु प्रीति लायक ही सों कीजिये।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि अपनी कुलरीति को कभी नहीं छोड़ना चाहिए, और ब्याह, शत्रुता और प्रेम योग्य पुरुष से ही करना चाहिए।

रामचरन.........अकास।

शब्दार्थ—अवलम्ब=सहारा। परमारथ=मोक्ष, मुक्ति। आस=उम्मेद। बारिद=(बारि=पानी+द=देने वाला) बादल। गहि=पकड़ कर।

गद्य—"तुलसी" राम-चरन बिनु अवलम्ब परमारथ की

आस (ऐसे है) वारिद बूँद गहि अकास उड़न चाहत।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि रामचन्द्रजी के चरणों के बिना सहारे मोक्ष की आशा करना ऐसे है जैसे बादल की बूँद को पकड़कर आकाश को उड़ना चाहना, अर्थात् बिना ईश्वर के मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता है।

लगन·········ताहि।

शब्दार्थ—लगन=(लग्न) सायत। महूरत=दो घड़ी। गनत= गिनना। दाहिने=सीधे।

गद्य—"तुलसी" लगन महूरत जोगबल काहि न गनत राम, जेहि दाहिने भये ताहि सबै दाहिने।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि लग्न, मुहूर्त और योगबल किसी को भी नहीं गिनते हैं जिसके लिए ईश्वर सीधा है उसके लिए संसार सीधा है।

घर घर·········पाय।

शब्दार्थ—भूपति=(सं० जा०) राजा।

गद्य—"तुलसी" घर घर टूक माँगे पुनि भूपति पाय पूजै, तब ते बिनु राम अब ते राम सहाय 'हैं'।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि घर घर भिक्षा माँगी, फिर राजा पैर पूजता है, वे दिन ईश्वर की बिना सहायता के थे अब ये दिन ईश्वर की सहायता से हैं।

तुलसी·········इताति।

शब्दार्थ—साहु=(सं० जा०) साहूकार, महाजन। निशि= रात। बासर=दिन।

गद्य—'तुलसी' दिन साहु कह भल रात चोर कह भलो ताकहँ निशि वासर भलो राम इतानि माने।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि दिन साहूकार के लिए अच्छा है और रात चोर के लिए अच्छी है। उसके लिए दिन रात अच्छे हैं जो ईश्वर का भजन करता रहता है।

जग.......प्रवीन।

शब्दार्थ—हिय=हृदय, मन। मतौ=(सं० भा०) राय, सलाह। प्रवीन=चतुर, होशियार।

पद्य—'तुलसी' जग ते छत्तीस है रघुरामचरन छः तीन। हिय विचारि देखु यही प्रवीन मतौ है।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि इस संसार में छत्तीस (३६) की तरह रहना चाहिए और ईश्वर के चरणों में छः तीन (६३) की तरह रहना चाहिए। हृदय में विचार कर देखो यह चतुर मनुष्यों की राय है।

भावार्थ—छत्तीस (३६) प्रकट करता है कि संसार से विमुख रहना चाहिए तीन मुँह पश्चिम को है और छः का मुँह पूर्व को है। ६३ से यह प्रकट होता है कि आमने-सामने रहो, अर्थात् ईश्वर की भक्ति में लगे रहना चाहिए।

तुलसी.......पहार।

शब्दार्थ—सकल=(विशे०) तमाम। उपचार=उपाय, यत्न।

पद्य—'तुलसी' राम सनेह करु सकल उपचार त्याग, जैसे नव के पहार लिखत नव अङ्क न घटत।

पद्यार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि ईश्वर से प्रीति करके सब उपायों को छोड़ देना चाहिए, जैसे ९ का पहाड़ा लिखने में भी अङ्क नहीं घटता है।

९=९ =९	जिस प्रकार इस पहाड़े में नौ अंक दस वार वदला, लेकिन हर दशा में नौ का अङ्क उस में मौजूद रहा, इसी प्रकार सब अवस्थाओं में ईश्वर मौजूद रहता है, उसी से प्रेम करना चाहिए।
१८=१+८=९	
२७=२+७=९	
३६=३+६=९	
४५=४+५=९	
५४=५+४=९	
६३=६+३=९	
७२=७+२=९	
८१=८+१=९	
९०=९+०=९	

सब............."तुलसीदास"।

गद्य—"तुलसीदास" राम के सबै कहावत सबहि राम की आस (है), राम जेहि आपनो कहे तेहि भजु।

पदार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि सब ईश्वर के कहलाते हैं और सब को ईश्वर की आशा है जिसको ईश्वर अपना कहें उसको भजना चाहिए।

(पृष्ठ ८२)

घर...............छाय।

शब्दार्थ—घर=गृहस्थ। घर=मोक्ष। पुर=नगर।

गद्य—तुलसी घर छोड़े घर जात है घर छोड़े घर जाय, घर वन बीच ही राम प्रेम पुर छाय।

पदार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि गृहस्थ बनाने से तो मोक्ष का घर जाता है, और घर छोड़ने (संन्यासी) होने से गृहस्थ जाता है; इसलिए घर और वन के बीच में ही अर्थात् जहां कहीं रहे ईश्वर के प्रेम की नगरी बना लेना चाहिए।

बरु................धाम।

शब्दार्थ—बरु=चाहे। मराल=(सं० आ०) हंस। मानस=मानसरोवर। मोह=प्यार, लवलीनता। मद=घमण्ड।

अन्वय—सरल है।

भावार्थ—तुलसीदासजी कहते हैं कि चाहे हंस मानसरोवर को त्याग दे, और चन्द्रमा शीतलता को, और सूर्य धूप त्याग दे, और मनुष्य मोह और घमण्ड आदि छोड़ दे, पर ईश्वर को न छोड़ना चाहिए।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—निम्नलिखित शब्दों की सहायता से एक एक वाक्य बनाओ।

भवितव्यता, वशीकरन, विटप, अवलम्बन, भूपति।

उत्तर—भवितव्यता ऐसी ही थी।

वह वशीकरन मन्त्र जानता है।

बरगद का विटप सब से बड़ा होता है।

ग्रामवासियों के अवलम्बन के बिना यह संस्था फलीभूत नहीं हो सकती है।

भारतवर्ष में अनेक भूपति हैं।

प्र० (२) निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध मूल-रूप बतलाओः—

कीरति, बिपति, भुअंग, मेह, महूरत, जोग, साहु, आन, धाम।

उत्तर—कीरति=कीर्त्ति। बिपति=विपत्ति। भुअंग=भुजङ्ग। मेह=मेघ। महूरत=मुहूर्त्त। जोग=योग। साहु=शाह। आन=आज्ञा। धाम=धर्म।

प्र० (३)—"जगते रहु छत्तीस ह्वै" इस दोहे का तात्पर्य लिखो।

उत्तर—इस दोहे का तात्पर्य यह है कि सांसारिक झगड़ों से विमुख (अलग) रहना चाहिए जैसे ३६ में तीन से छः विमुख है। ईश्वर की भक्ति में ६३की तरह रहना चाहिए। अर्थात् ईश्वर की ओर रहना चाहिए।

पाठ १८—अकबर।

भारतवर्ष=(सं० व्य०) हिन्दुस्तान, आर्यवर्त्त। इतिहास=(सं० जा०) तवारीख़। महान्=(सं० भा०) बड़ा। उपाधि=(सं० जा०) ख़िताब। प्रतापी=(विशे०) तेजस्वी। निरक्षर=(सं० जा०) (निर्=नहीं+अक्षर=हरूफ़) मूर्ख, बेपढ़ा। हस्ताक्षर=(सं० जा०) (हस्त=हाथ+अक्षर) दस्तख़त। कठिन=(विशे०) मुश्किल। साम्राज्य=(सं० जा०) राज्य, बादशाहत। प्रभाव=असर। विपरीत=विरुद्ध। सम्पूर्ण = (विशे०) तमाम। अधिकार= क़ब्ज़ा, आधिपत्य। कोष=ख़ज़ाना, निधि। धान्य=(सं० जा०) अनाज। पूर्ण=(विशे०) पूरा, भरा हुआ।

(पृष्ठ ८३)

अतुलनीय=(विशे०) जिसकी तुलना न हो सके, अतुल्य। सौंदर्य=(सं० भा०) सुन्दरता। इमारतें=(सं० जा०) मकानात। गुण=(सं० भा०) हुनर।

गर्भ=पेट। युद्ध=(सं० जा०) लड़ाई। परास्त होकर=हारकर। सिंहासन=गद्दी, तख़्त। हाथ धोने पड़े=छोड़ना पड़ा, त्यागना पड़ा। शत्रु=(सं० जा०) वैरी, दुश्मन। प्राणों के भूखे थे=प्राण लेना चाहते थे, मारना चाहते थे।

(पृष्ठ ८४)

बाल्य-काल=(सं० जा०) बचपन, लड़कपन। सङ्कट=(सं० भा०) दुःख, कष्ट। राजसी=(विशे०) राजाओं का।

[illegible]=[illegible] । साधारण=मामूली । अनबन=लड़ाई, झगड़ा । मन्दी=तेज़ी । असम्भव=नामुमकिन । बाँका=टेढ़ा । बाल बाँका न हुआ=उनको कोई चोट नहीं आई । अनिष्ट= नुक़सान, हानि, बिगाड़ । घटना=हालत, वाक़ा ।

पश्चात=पीछे । निरा=(विशे०) बिल्कुल । अतिरिक्त= सिवाय । डाँवाडोल होना= इधर उधर होना । समस्त=तमाम । सुदृढ़=(विशे०) मज़बूत । स्थापित=क़ायम । प्रकृत=(विशे०) वास्तविक ।

(पृष्ठ ८५)

परिचय=जानकारी । विशाल=(विशे०) बड़ा, उच्च । पक्षपात =तरफ़दारी । यथार्थ में=वास्तव में, दरअसल । स्वाभाविक= (विशे०) कुदरती । घायल=ज़ख़्मी । वध=मारना । विश्वासपात्र =भरोसे का आदमी । शासन=राज्य । अधिकार=(सं० भा०) हक़ूक़ । स्वतन्त्र=आज़ाद । मनमाने=अपनी इच्छानुसार । च्युत= गिराना, हटाना । कुपित=क्रोधित । उद्यत=तय्यार । क्षमा=माफ़ ।

अधिकांश=अधिकतर, ज़्यादातर । अत्याचार=अन्याय । क्रूर=बेरहम ।

(पृष्ठ ८६)

सौंपते थे=सुपुर्द करते थे । पड़ती थी=बनती थी । वैमनस्य= बैर, विरोध, शत्रुता । शासनकार्य=राज्य के काम । पद=दर्जा, ओहदा । सखाओं = दोस्तों, मित्रों । सहानुभूति = हमदर्दी । विजय पताका=जीत का झण्डा । फहरा दी=उड़ा दी ।

स्वतन्त्रता = आज़ादी । साम = शान्ति । दाम=धन । दण्ड= सज़ा । भेद=अन्तर, फूट ।

(पृष्ठ ८७)

घृणा=नफ़रत। सम्मानास्पद=आदर से भरी हुई। सन्धि=सुलह। स्वीकार=मंज़ूर।

परख=(सं० भा०) जाँच, पहिचान। उद्देशों=मतलबों। कार्य कर्त्ता=काम करने वाले। कर्मचारी=नौकर। प्रतिभा=बुद्धि। निस्संदेह=वेशक। साहस=हिम्मत। माप=नाप। कृषकों=(सं० जा०) किसानों। नियम=क़ानून। महत्ता=बड़प्पन। ब्रिटिश=(विशे०) अङ्गरेज़ी। प्रथा=रीति। अनुकरण=नक़ल।

विभिन्न=अलग अलग। वादविवाद=तर्क वितर्क। तथापि=तो भी, फिर भी।

(पृष्ठ ८८)

पुस्तकालय=(सं० जा०) (पुस्तक+आलय=घर) लाइब्रेरी। कट्टर=पक्का। दृढ़ विश्वास=अटल विश्वास। उपदेशक=(सं० जा०) उपदेश देने वाले। सम्मिलित=शामिल। सिद्धान्त=नियम, उसूल। निश्चय=विश्वास। कलह=लड़ाई, झगड़ा। सम्प्रदाय=समाज, मत। चेष्टा=यत्न, कोशिश। राग=ईर्ष्या। द्वेष=वैर। व्यक्ति=आदमी। स्थापना=क़ायम करना। पन्थ=(सं० जा०) मत, रास्ता।

(पृष्ठ ८९)

अनुभव=(सं० भा०) ज्ञान, तजुर्बा। अनुयायी=माननेवाला। देहावसान=(देह+अवसान=अन्त) शरीरान्त, मरण। असफल=नाकामयाब।

उपासना=पूजा-पाठ। स्वाधीनता=(सं० भा०) आज़ादी। आखेट=(सं० जा०) शिकार। व्यसन=(सं० भा०) शौक़। दुआ=आशीर्वाद। स्मृति=(सं० भा०) यादगार।

(पृष्ठ ६०)

भ्रमर=भौंरा। विद्रोह=ग़दर-झगड़ा।

(पृष्ठ ६१)

प्र० (१)—अकबर में ऐसे कौन से गुण थे जिनके कारण वह ऐसा बड़ा बादशाह हुआ?

उत्तर—उसका हृदय विशाल था; दूसरे, उसको अपने और पराये में पक्षपात नहीं था; तीसरे, हिन्दुओं के साथ अच्छा बर्ताव करता था; चौथे, उसको आदमियों की बड़ी अच्छी परख थी।

प्र० (२)—अकबर की रहन-सहन के विषय में क्या जानते हो?

उत्तर—इसकी रहन-सहन बहुत सीधी-सादी थी। इसने गद्दी पर बैठते ही शराब पीना छोड़ दिया था। मांस कम खाता था। गङ्गाजल पीता था, सूर्य की उपासना करता था। अपनी हिन्दू रानियों को उनकी इच्छानुसार पूजा-पाठ करने की स्वतंत्रता दे रखी थी। इसको घोड़े की सवारी और आखेट का व्यसन था।

प्र० (३)—अकबर के समय में हिन्दुस्तान की कैसी दशा थी, क्या वर्तमान दशा से उसकी बराबरी हो सकती है?

उत्तर—अकबर के समय में प्रजा अन्य मुसलमान बादशाहों के समय से सुखी थी। कर भी कम था। हर मनुष्य को अपने धर्म पर चलने की स्वतंत्रता थी। हिन्दुओं के मन्दिर और मुसलमान बादशाहों के समय की तरह नहीं तोड़े जाते थे। हिन्दुओं के साथ मेल था। उनको उच्च-पद भी दरबार में दिये जाते थे। अकबर की ज़ुबान ही क़ानून थी। आजकल का समय उससे भी अधिक सुखकारी है।

हर एक के लिए क़ानून एक से बन गये हैं। पक्षपात बिलकुल नहीं है। आजकल अनेक नये आविष्कार हो रहे हैं, जिनसे अनेक लाभ हैं।

प्र० (४)—अकबर ने हिन्दुओं के साथ मेलजोल रखने की नीति क्यों प्रवर्त्तित की?

उत्तर—वह इस बात को भली प्रकार जानता था कि बिना हिन्दुओं के मेल के मुग़ल साम्राज्य का स्थापित होना बड़ा कठिन है। दूसरे हिन्दू और मुसलमानों का पड़ोसी होकर वैमनस्य रखना हानि कारक है।

प्र० (५)—हाथ धोना, बाल बाँका न होना, निरक्षर, विश्वास-पात्र सम्मानास्पद, अनधिकार, स्वाधीनता के द्वारा वाक्य बनाओ।

उत्तर—अपने आलस्य से रामगोपाल अपनी पुस्तक से हाथ धो बैठा।

मोहन कुएँ में गिरा, मगर उसका बाल बाँका भी न हुआ।

रामदेव देखने में बड़ा विद्वान् प्रतीत होता था, मगर पूछने से मालूम हुआ कि वह बिलकुल निरक्षर है।

मेरा नौकर विश्वासपात्र है।

उसने मेरा सम्मानास्पद रीति से स्वागत किया।

रामकृष्ण ने मेरी पुस्तक लेने की अनधिकार चेष्टा की।

भारतवर्ष स्वतन्त्रता के लिए बड़ा व्याकुल हो रहा है।

पाठ १९—कपास।

मुख्य=(विशे०) ख़ास। भेद=(सं० भा०) क़िस्म, तरह। लघु एशिया=(सं० व्य०) एशिया कोचक। साधारणतः=मामूली तौर पर। जल-वायु=आबोहवा।

(पृष्ठ ६२)

शाखा=टहनी । श्रेष्ठ=(विशे०) उत्तम, अच्छी । उजली=(विशे०) साफ़, स्वच्छ । नरम=(विशे०) मुलायम । महीन=(विशे०) बारीक, पतला । सरलता=(सं० भा०) आसानी । कछार=नदी का किनारा, तराई ।

वेस्ट इंडीज़=भारत के पश्चिम के द्वीपों का झुण्ड । कृषक=(सं० जा०) किसान, भूमिहार । सन्तोषजनक=आशाजनक, संतोषप्रद । दलदल=(सं० जा०) कीचड़ ।

(पृष्ठ ६३)

स्पष्ट=साफ़ । वर्ग=भेद, भाग । भार=(सं० भा०) बोझ । तृतीयांश=(तृतीय=तीन+अंश=भाग) तीसरा भाग । स्वच्छ=साफ़ । चतुर्थांश=(चतुर्थ=चौथा+अंश) चौथा भाग ।

ढोर=गाएँ । नस्ल=(सं० जा०) जाति, क़िस्म । बढ़ी चढ़ी=सबसे श्रेष्ठ, सबसे उत्तम ।

(पृष्ठ ६४)

ऊसर=(विशे०) बंजर । पथरीली=पत्थरदार । नमी=तरी, ठण्डक । शीतप्रधान=(विशे०) (शीत=ठण्डक+प्रधान=मुख्य) जहाँ साल भर तक जाड़ा पड़ता हो । कृषि=(सं० भा०) खेती । उष्ण=(विशे०) गर्म । समशीतोष्ण=(सम=बराबर+शीत+उष्ण) समान सर्दी गर्मी ।

प्रारम्भ=शुरू । खाद=खाद । लाभदायक=फ़ायदेमन्द । शुष्क=सूखा ।

(पृष्ठ ६५)

निराई=फ़सली पेड़ को छोड़कर बाक़ी घास आदि काट-कर अलग कर देना, बीनना । परिश्रम=मेहनत । व्यय=ख़र्च ।

नमो=तरी, ठयडक। सपाट=(विशे०) चौरस । सारांश= मतलब, खुलासा। अवलम्बित=आश्रित, निर्भर।

तत्व=तत्त्व, मूल। उपज=पैदावार। क्रमशः=धीरे धीरे। पूर्त्ति=पूरा करना।

(पृष्ठ ६६)

रोज़गार=जीविका, धन्धा। तत्त्व=सार। उर्वरा=(विशे०) उपजाऊ। नाइट्रोजन=एक प्रकार की हवा। फ़ासफ़ोरस=हड्डियों का सत। अतएव=इसलिए। पोषक=पालन करने वाले। द्रव्य= पदार्थ।

(पृष्ठ ६७)

आगामी=(विशे०) आने वाला।

रोहिणी=एक नक्षत्र का नाम है। नक्षत्र=तारा। नक्षत्र २७ होते हैं (१) अश्विनी (२) भरणी (३) कृतिका (४) रोहिणी (५) मृगशिरा (६) आर्द्रा (७) पुनर्वसु (८) पुष्य (९) अश्लेषा (१०) मघा (११) पूर्वा फाल्गुनी (१२) उत्तरा फाल्गुनी (१३) हस्त (१४) चित्रा (१५) स्वाँति (१६) विशाखा (१७) अनुराधा (१८) ज्येष्टा (१९) मूल (२०) पूर्वाषाढ़ (२१) उत्तराषाढ़ (२२) श्रवण (२३) धनिष्टा (२४) शतभिषा (२५) पूर्वाभाद्रपद (२६) उत्तरा-भाद्रपद (२७) रेवती। पाँतवार=नम्बरवार, । छिटकार= फेंककर। गुजरात और खानदेश=यह बम्बई प्रेसीडेन्सी के इलाक़े हैं।

(पृष्ठ ६८)

प्रचलित=जारी। अन्यान्य=और और। क्षेत्रों=मैदानों, भागों। पश्चात्=बाद, पीछे। दौरा=चक्कर। घने=इकट्ठे। विरल= अलग अलग।

(पृष्ठ ९९)

विस्तार=(सं० भा०) फैलाव। सुहावना=(विशे०) सुन्दर, अच्छा। विभिन्नता=(सं० भा०) भेद, अन्तर, फ़र्क़। अङ्ग=भाग, हिस्सा। विभक्त=बँटा हुआ, विभाजित। पुष्प=(सं० भा०) फूल। कुम्हलाने=मुर्झाने। नुकीला=नोकदार। परिमाण=तोल, अन्दाज़।

(पृष्ठ १००)

टपक आती है=गिर जाती है। चुनाई=बीनना। विशेष=(विशे०) अधिक। स्वच्छ=साफ़। मिश्रण=मिलावट। व्यक्ति=आदमी। उपर्युक्त=ऊपर कहा हुआ। मज़दूर=(सं० जा०) मेहनती।

(पृष्ठ १०१)

प्राणियों=जन्तुओं। वनस्पतियों=पौधों। रोग=बीमारी।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—संसार में कहाँ कहाँ कपास पैदा होती है और उसके कितने भेद हैं?

उत्तर—कपास की पैदावार—भारतवर्ष, चीन, अरब, लघु-एशिया, [illegible] रूस, मिस्र, सिरिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका और वास्टेडीज़ में होती है।
कपास चार प्रकार की होती है।

प्र० (२)—यदि तुम्हें कपास की कृषि करनी हो तो तुम्हें कपास निकलने के समय तक क्या-क्या तय्यारी करनी पड़ेगी?

उत्तर—इसकी कृषि के लिए खेत में खाद डाल कर जुताई करनी पड़ेगी और तीन चार बार जुताई करने से कपास

की उपज के लिए खेत तैयार हो जाता है अच्छी कपास का बीज लेकर खाट पर खूब रगड़ते हैं, फिर गोबर में लपेट कर बोना पड़ता है। जब पौधे उग आते हैं तब उस में दौरा और नराई करनी पड़ती है। जहाँ अधिक घनी हो जाती है वहाँ से पेड़ उखाड़ दिये जाते हैं। जब कपास पक जाय तब फ़ौरन बीनना चाहिए।

प्र० (३)—कपास के पौधे और उसी के समान किसी और पौधे का वर्णन करो।

उत्तर—कपास का पौधा लम्बाई में ५-६ फ़ीट से १५-१६ फ़ीट तक के होते हैं। यह ऊँचाई अलग अलग ज़मीन के हिसाब से होती है। इस में बहुतसी शाखाएँ निकलती हैं। जब यह पूरे बढ़ जाते हैं तब ऊपर कली फूल आने से पहले तोड़ दी जाती है। फूल भी कई रङ्ग के होते हैं। संतरे के परिमाण का इसपर फल आता है। पकने पर इसको कपास बीन ली जाती है।

प्र० (४)—कपास के पौधे दूर दूर लगाने में लाभ है या पास पास?

उत्तर—कपास के पौधे दूर दूर होने से उनमें शाखाएँ खूब निकलती हैं। जितनी अधिक शाखाएँ होती हैं उतनी ही पैदावार अधिक होती है, इसलिए दूर दूर लगाने में विशेष फ़ायदा है।

पाठ २०—हमारी देह।

देह=(सं० ज्ञा०) शरीर, जिस्म। गति=चाल। क्षीण=कमज़ोर। निर्वाह=गुज़र। प्रत्यङ्ग=शरीर का हर एक भाग। पौरुष=बल। पुतलीघर=जहाँ पर मशीन से कई क़िस्म के काम होते हैं; जैसे,

कपड़ा बुनने का कारखाना । प्रतीत=मालूम । अनुमान=अन्दाज़, अटकल । कर्त्तव्य=काम । तत्पर=तैयार ।

(पृष्ठ १०२)

विश्राम=आराम । एञ्जिन=(सं० आ०) इंजन, यह इंगलिश भाषा का शब्द है । दृढ़=(विशे०) मज़बूत । आश्चर्य=अचम्भा । गुप्त=(विशे०) छिपी । व्यस्त=लीन, लगा हुआ । कल्पना= मन गढ़न्त बात । अंधकारपूर्ण=(विशे०) अंधेरे से भरा हुआ । आकर्षित=खींचा हुआ । हृदय=दिल । आकार=सूरत, शक्ल । पेशियां=गांठ । निर्मित=बना हुआ । जीवन भर=तमाम उम्र । सर्वदा=सदैव । अवकाश=छुट्टी, फ़ुर्सत । फैलता है=बढ़ता है । सिकुड़ता है=सिमटता है । धमनियाँ=शरीर के भीतर की नालियाँ जिनमें होकर खून बहता है । रुधिर=खून ।

(पृष्ठ १०३)

बलशाली=(वि०) बलवान, ताक़तवर । रक्त=खून, रुधिर, लहू । अद्भुत=अपूर्व, विचित्र । शान्तिपूर्वक=चुपचाप । आसक्त=लगा हुआ । श्वास=साँस । दूषित=(विशे०) खराब, नापाक ।

(पृष्ठ १०४)

प्राणप्रद=(वि०) प्राणरक्षा करने वाली । ऑक्सिजन= गैस का नाम । लचीली=(विशे०) घटने बढ़ने वाली । तन्तुओं= (सं० आ०) धागों । प्रश्वास=सांस का बाहर भीतर जाना । उपाय=यत्न । नर्म=(सं० आ०) नमदा । छिद्र=सूराख़ । कूती गई है=अन्दाज़ की गई है, अनुमान किया गया है । मृत्यु=मौत । उपस्थित=मौजूद ।

प्रश्नोत्तर ।

प्र० (१)—हमारे शरीर में हृदय और फेफड़े के क्या काम हैं और वे उसे कैसे पूरा करते हैं ?

उत्तर—हृदय पान की शक्ल का दृढ़ मांस की पेशियों से बना हुआ है। इसको अपने काम से अवकाश नहीं मिलता है। २४ घंटे काम करता रहता है। इसको वात से भी पतली धमनियों द्वारा रुधिर पहुँचता है। यह इतना वक़्त लगाता है कि शरीर में नसों द्वारा चक्कर कर फिर वहाँ आ जाता है। फेंफड़े यह लचीली तन्तुओं से बना हुआ है। यह फूलता और सिकुड़ता है। इस से रुधिर साफ़ होता है।

प्र० (२)—हमारे शरीर में खाल का क्या उपयोग है।

उत्तर—खाल शरीर के अन्दर के भाग की रक्षा करती है और अन्दर से मल को अपने छिद्रों से बाहर निकाल देती है।

प्र० (३) प्रत्यङ्ग में कौन सन्धि है? दूषित, निर्मित, उपस्थित, प्रश्वास शब्दों की व्युत्पत्ति बताओ। पुतलीघर और, एञ्जिन का क्या अर्थ है?

प्रत्यङ्ग=(प्रति+अङ्ग) इ+अ की स्वरसंधि है।

दूषित=ख़राब, दोष से भरी हुई। निर्मित=बना हुआ।

उपस्थित=मौजूद। प्रश्वास=साँस का आना। पुतलीघर= बहुतसी कलों का घर। एञ्जिन=चलने वाली कल।

प्र० (४)—एक मिनट में श्वास कितनी वार आती है?

उ०—७० वार साँस आती है।

पाठ २१—रहीम के दोहे।

जो .... भुजङ्ग।

शब्दार्थ—उत्तम=(विशे०) अच्छा। प्रकृति=स्वभाव। भुजङ्ग=सांप।

गद्य—"रहीम"जो उत्तम प्रकृति कुसङ्ग का करि सकत। चन्दन भुजङ्ग लपटे रहत विष नहीं व्यापत।

पदार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि जो अच्छी प्रकृति (स्वभाव) वाले हैं उनका बुरी संगति कुछ नहीं कर सकती है; जैसे, चन्दन के वृक्ष पर सांप लपटे रहते हैं, पर चन्दन को विष नहीं व्यापता है ॥ १ ॥

रहिमन……..नाहिं।

शब्दार्थ—मुए=मरगये। मुख=मुँह।

गद्य—सीधी है।

पदार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि वे आदमी मर गये जो कहीं माँगने जाते हैं, परन्तु उनसे पहले ही वे मरगये हैं जो इनकार करते हैं ॥ २ ॥

अमरबेलि……काहि।

शब्दार्थ—अमरबेलि=एक बेल का नाम है। मूल=जड़। प्रतिपालन=पालन करना। काहि=किस को।

गद्य—"रहिमन" बिन मूल की अमरबेलि ताहि प्रतिपालत है। ऐसे प्रभुहिं तजि काहि खोजत फिरिये।

पदार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि बिना जड़ की अमरबेलि है उसको भी प्रभु पालते हैं। भला ऐसे ईश्वर को छोड़कर किस को ढूंढना चाहिए, अर्थात् किसी को नहीं ॥ ३ ॥

भावार्थ—ईश्वर के अतिरिक्त किसी की खोज न करनी चाहिए।

(पृष्ठ १०६)

दीनहिं……सोय।

शब्दार्थ—दीनहिं=गरीबों को। लखत=देखना। दीनबन्धु=(दीन+बन्धु) गरीबों के भाई, ईश्वर।

गद्य—"रहीम" दीनहि सब कहँ लखत है दीन कोय नहिं लखे। जो दीनहिं लखत सोय सम (है)।

पद्यार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि ग़रीब सबको देखते हैं, परन्तु ग़रीबों को कोई नहीं देखता है। जो मनुष्य ग़रीबों को देखता है वह परमेश्वर के समान होजाता है, अर्थात् बड़ा यश-वाला हो जाता है॥ ४॥

रहिमन·······गात।

शब्दार्थ—याचकता=(सं० भा०) माँगना। गहि=पकड़ना। नारायण=भगवान्। आँगुर=अंगुल, एक उँगली की चौड़ाई। गात=(सं० जा०) शरीर।

गद्य—"रहिमन" याचकता गहे बड़े छोटे है जात। नारायण हूँ को वावन आँगुर गात भयो।

पद्यार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि माँगने से बड़े आदमी भी छोटे होजाते हैं; जैसे (राजा बलि से माँगने के कारण), भगवान् को भी वावन अंगुल का शरीर धारण करना पड़ा था॥ ५॥

कथा-प्रसंग—राजा बलि प्रह्लाद भक्त का पौत्र था। यह बड़ा दानी था। जब इसने १०१ यज्ञ पूर्ण कर लिये तो इन्द्र को बड़ा भय हुआ और उसने विष्णु भगवान् से यह सब कथा जाकर कही, तब विष्णु भगवान् वौना का रूप धारण कर राजा बलि से माँगने गये, और उससे साढ़े तीन डग पृथ्वी माँगी। जब राजा बलि ने देने का वचन दे दिया, तब भगवान् ने अपना आकार बढ़ाकर तीन डग में तीनों लोक नाप लिये और आधे डग में उसका शरीर नाप लिया। यह पौराणिक कथा है।

अमृत·········फाँस।

शब्दार्थ—अमृत=(विशे०) सुधा, पीयूष । रिस=(सं० भा०) क्रोध । गाँस=अंश, मेल । मिसिरिहु=(सं० आ०) मिस्री । निरस=(विशे०) बेरस, फीका । फाँस=छोटासा रेशा ।

गद्य—रहिमन अमृत वचन में रिस की गाँस ऐसे (है) । जैसे मिसिरिहु में निरस बाँस की फाँस मिली ।

पद्यार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि अमृत के समान वचनों में क्रोध का अंश ऐसे रहता है जैसे मिस्री में बिना रस के बाँस की फाँस मिली रहती है ॥ ६ ॥

कहि..........मीत ।

शब्दार्थ—सम्पति=धन । बहु=(विशे०) बहुत । मीत=(सं० आ०) दोस्त, यार ।

गद्य—"रहीम" कहि सम्पति बहुत बहु रीत सगे बनत, तेही साँचे मीत जे बिपति कसौटी कसे ।

पद्यार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि धनाढ्य पुरुषों के बहुत से-बहुत रीति से सगे नातेदार बन जाते हैं, मगर सच्चे मित्र वही हैं जो विपत कसौटी पर पूरे उतरते हैं अर्थात् दुःख पड़ने पर साथ देते हैं ॥ ७ ॥

नाद.........देत ।

शब्दार्थ—नाद=(सं० भा०) शब्द, आवाज़ । रीझ=प्रसन्न होकर, मोहित होकर । मृग=(सं० आ०) हरिण । देत= सलाई ।

गद्य—"रहीम" मृगनाद रीझ नर देत तन धन समेत रीझेहू कछु न देन ते पशु ते अधिक ।

पद्यार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि हरिण वीणा के मधुर शब्द पर मोहित होकर मनुष्य को धन (कस्तूरी) सहित शरीर

दे देता है, परन्तु मनुष्य जो प्रसन्न (मोहित) होने पर भी कुछ नहीं देते वे पशु से भी गिरे हुए हैं॥ ८॥

ज्यौं..........होय।

शब्दार्थ—गति=दशा, हालत। कुपूत=(सं० जा०) कुपुत्र, बुरा बेटा। बारे=जलाना। बढ़े=बुझना।

गद्य—"रहीम" ज्यौं दीप गति सोय कुल कुपूत गति (होती है) बारे उजियारौ लगै बढ़े अँधेरौ होय।

पद्यार्थ—रहीम कवि कहते हैं जैसी दीपक की दशा होती है वैसी ही कुल कुपुत्र को होती है; जैसे, दीपक के जलाने से उजाला होता है और बढ़ाने (बुझाने) से अँधियारा होता है अर्थात् कुपुत्र के होने से कुल प्रकट होता है। मगर उसके मरने पर कोई नहीं जानता है सुपुत्र के होने से तो कुल प्रकट होता ही है, मगर मरने के पश्चात् वह अपनी कीर्त्ति छोड़कर कुल को प्रकट करता रहता है॥ ९॥

रहिमन..........देय।

शब्दार्थ—नयन=(सं० जा०) आँखें। जिय=हृदय। गेह=(सं० जा०) घर। कस=कहीं। भेद=(सं० भा०) हाल।

गद्य—"रहिमन" अँसुआ नयन ढरि जिय दुख प्रगट करदेय गेह ते जाय निकारो भेद कस न कहि देय।

पद्यार्थ—रहीम कवि कहते हैं जिस प्रकार आँसू आँखों से निकलकर हृदय के दुःख को प्रकट करदेते हैं उसी प्रकार जिस को घर से निकालोगे वह घर के भेद को क्यों न कह देगा अर्थात् अवश्य कहेगा॥ १०॥

रहिमन..............वस होय।

शब्दार्थ—किन=क्यों नहीं। नर=(सं० जा०) आदमी, मनुष्य।

गद्य—"रहिमन" मनहिं लगाय के कोय किन देखि लेहु। नर को वस करिवो कहा नारायणहूँ वस होय।

भावार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि अपने मन को लगा करके कोई क्यों नहीं देख लेते हैं कि मनुष्य को वश में करने की कौन बात है ईश्वर भी वश में होजाते हैं ॥११॥

प्रीतम……………आय।

शब्दार्थ—प्रीतम=प्यारा। छबि=(सं० भा०) सुन्दरता। पर=दूसरा। लखि=देखकर। पथिक=(सं० शा०) मुसाफ़िर, यात्री।

गद्य—सरल है।

भावार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि जब प्यारे की सुन्दरता नयनों (आँखों) में छाई हुई हो तब फिर दूसरे की सुन्दरता कहाँ समा सकती है अर्थात् नहीं समा सकती है जिस प्रकार कि भरी हुई सराय को देखकर स्वयं यात्री सराय से वापिस चले जाते हैं अर्थात् वहाँ नहीं ठहरते हैं ॥१२॥

दुर्दिन……………हानि।

शब्दार्थ—दुरदिन=(दुर=बुरे+दिन) बुरे दिन। वित=धन हित=प्रेम।

गद्य—"रहीम" कहैं दुरदिन पड़े सब पहिचान भूलत वित। हानि को सोच नहीं (है) जो हित हानि न होय।

भावार्थ—रहीम कवि कहते हैं बुरा समय आने पर सब पहिचान भूल जाते हैं। धन की हानि का तो कुछ सोच नहीं है अगर प्यार का नुक़सान (कम) न हो अर्थात् किसी भी प्रकार प्यार कम न होना चाहिये ॥१३॥

(पृष्ठ १०३)

प्रीति……………होत।

शब्दार्थ—प्रीति=(सं० भा०) प्यार, प्रेम। बैर=(सं० भा०) शत्रुता, दुश्मनी। हित=भला चाहने वाले। मित=(सं० शा०) दोस्त, यार। गोत=कुटुम्बी, खानदान वाले। बहुरि=फिर। संगति=साथ।

गद्य—"रहिमन" सबसों प्रीति रीति भली, वैर न हित, मित, गीत। याही जन्म को (है) बहुरि संगति न होत।

यथार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि सब से प्रीति (प्रेम) की रीति अच्छी है मगर शत्रुता अच्छी नहीं है क्योंकि भला चाहने वाले, मित्र और कुटुम्बी लोगों से इसी जन्म में साथ होता है फिर कभी साथ नहीं होता है ॥१४॥

जाल ....छोह।

शब्दार्थ—जल=(सं० जा०) पानी। तजि=छोड़कर। मीनन=(सं० जा०) (मीन=मछली+न=बहुवचन का चिह्न) मछलियाँ। मोह=(सं० भा०) प्यार, मोहब्बत। नीर=(सं० जा०) पानी। छोह=(सं० भा०) प्यार, मोह।

गद्य—"रहिमन" जाल परे जल मीनन को मोह तजि बहि जात। मछरी तऊ नीर को छोह न छाँड़त।

पद्यार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि जाल पड़ने पर पानी मछलियों का मोह त्याग कर बह जाता है, मगर मछली तब भी पानी का मोह नहीं छोड़ती है अर्थात् मछली बिना पानी के अपने प्राण त्याग देती है ॥१५॥

रहिमन ....बेरि।

शब्दार्थ—नीके=(विशे०) अच्छे, उत्तम। बेर=देर।

गद्य—"रहिमन" दिनन फेर देख चुप ह्वै बैठिये जब नीके दिन आय हैं बनत बेर न लगि है।

पद्यार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि दिनों का फेर (ख़राब दिन) देखकर चुप होकर बैठना चाहिए, क्योंकि जब अच्छे दिन आते हैं, तब बनते में देर नहीं लगती है ॥१६॥

दुरदिन ....आगि।

शब्दार्थ—दुरदिन=ख़राब दिन। दुर=(विशे०) बुरा। थल=स्थान।

गद्य—"रहीम" कहि दुरदिन पड़े दुर थल भागि जैयत। जब घर आगि लागत घूर पर ठाढ़े होत।

भावार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि बुरे दिन आने पर बुरे स्थान पर ही चला जाना चाहिये। जैसे जब घर में आग लगती है, तब घूर पर खड़े हो जाते हैं ॥१७॥

रहिमन............जीत।

शब्दार्थ—सराहिये=प्रशंसा कीजिये। बाजी=दौड़।

गद्य—"रहिमन" लेनदेन की प्रीति नाहिं सराहिये। प्रानन की बाजी ही लाग हार होय कै जीत (होय)।

भावार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि लेन देन की मित्रता की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। प्राणों की होड़ लगाना चाहिए। चाहे हार हो चाहे जीत हो ॥१८॥

कहु............पछिताय।

शब्दार्थ—केतिक=(विशे०) कितनी। बिहाय=बीत गई। परि=पड़कर, फँसकर।

गद्य—"रहीम" कहु केतिक बिहाय गई, केतिक रही। माया ममता, मोह परि अन्त पछिताय चले।

भावार्थ—रहीम कवि कहते हैं कि कितनी (उम्र) तो बीत गई है और अब कितनी शेष है। माया, प्यार और मोह में फँस कर अन्त को पछता कर चल दिये अर्थात् मर गये ॥१९॥

मुक्ता........होय।

शब्दार्थ—मुक्ता=(सं० जा०) मोती। चातक=(सं० जा०) पपीहा। जीवन=(सं० भा०) जिन्दगी। व्याल=(सं० जा०) साँप। बदन=मुँह। विष=(सं० भा०) ज़हर।

गद्य—रहीम (कहते हैं) जोय मुक्ता करै, कपूर करि, चातक जीवन (है)। येतो बड़ो जल व्याल बदन विष होय।

पद्यार्थ—रहीम कवि कहते हैं जो जल (स्वाँति नक्षत्र का जल) मोती बनता है, कपूर बनता है, और पपीहा को जीवन (ज़िन्दगी) देता है वही इतना बड़ा जल साँप के मुँह में पड़कर विष बनता है ॥२०॥

स्वाँति नक्षत्र का जल जब सीप के मुख में पड़ता है तब "मोती" के रूप में प्रकट होता है और केले के अन्दर पड़ता है तो कपूर, और बाँस में पड़ता है तो बंसलोचन बनता है।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—'नारायण हू को भयो बावन आँगुर गात'—इस में कौन सी कथा है।

उत्तर—इस पाठ के पाँचवें दोहे के अर्थ के नीचे कथा लिखी हुई है उसे देखो।

प्र० (२)—"ज्यों रहीम गति दीप की" इस दोहे का अर्थ लिखो।

उत्तर—इस पाठ के नवँ दोहे के अर्थ को देखो।

प्र० (३)—व्यापत, मुए, मिसिरिहु, अँसुआ, जनम, प्रानन, प्रगट और केतिक—शब्दों के शुद्ध रूप लिखो।

उत्तर—व्यापत का शुद्ध व्याप्त।
मुए „ „ मृत।
मिसिरिहु „ „ मिश्री सी।
अँसुआ „ „ अश्रु।
जनम „ „ जन्म।
प्रानन „ „ प्राणों।
प्रगट „ „ प्रकट।
केतिक „ „ कतिपय, केति।

प्र० (४)—अंतिम दो दोहों की व्याख्या करो।

उत्तर—व्याख्या के लिए ऊपर १९वें व २०वें दोहों का अर्थ
देखो।

(पृष्ठ १०८)

२२—युधिष्ठिर की कथा।

प्राचीन=(विशे०) पुराने। विस्तृत=(विशे०) विशाल, फैला
हुआ। वर्तमान=मौजूदा, इस समय की। कालान्तर=समय के
पीछे। परलोकवास=(पर=दूसरा+लोक+वास=रहना) मृत्यु।
यद्यपि=जो भी, हो। ज्येष्ठता=(सं० भा०) बड़ाई। अधिकारी=
हकदार, काबिल। तथापि=तो भी। जन्मान्ध=(जन्म+अन्ध)
जन्म के अन्धे। अतएव=इसलिए। अङ्गहीन=(अङ्ग+हीन=
नहीं) अङ्गरहित, किसी अङ्ग का न होना।
विख्यात=प्रसिद्ध, मशहूर। शरीरान्त=(शरीर+अन्त=
आखीर) मृत्यु। निश्चित=निश्चय, तय। वयस्क=जवान, बालिग।
युवराज=(सं० भा०) राजा के बाद राजा होने वाला।
विवाह=शादी। पतिव्रता=पति पर विश्वास करने वाली।

(पृष्ठ १०९)

सत्यवादी=(विशे०) सत्य बोलने वाला। धर्मात्मा=(विशे०)
धर्म पर चलने वाला। युद्ध=(सं० भा०) लड़ाई। अद्वितीय=
(विशे०) (अ+द्वितीय=दूसरा) प्रथम, दूसरा न हो। धनुर्विद्या=
(धनुष+विद्या) बाण विद्या। ज्ञाता=जानकार। साहस=(सं० भा०)
हिम्मत। सहायता=(सं० भा०) मदद, योग। उद्यत=तय्यार।
प्रण=प्रतिज्ञा, निश्चय। द्वेष=(सं० भा०) दुःख, डाह। शिक्षक=
(सं० जा०) सिखाने वाले, उस्ताद, गुरु। पदवी=(सं० भा०) पद,
दर्जा। विग्रह=(सं० भा०) झगड़ा।

(पृष्ठ ११०)

व्यतीत=गुज़रा, समाप्त। पाञ्चाल देश=पञ्जाब देश, पाँच नदियों से सींचा जाता है इस कारण इसका नाम पाञ्चाल पड़ा था। स्वयंवर=(स्वयं=आप+वर=दूल्हा) आप दूल्हा चुनना। समाचार=(सं० भा०) हाल, ख़बर। सुशीला=शीलवती। उपस्थित=मौजूद, हाज़िर। दिव्य=(विशे०) सुन्दर, मनोहर। चर्चा=ज़िक्र। लालसा=(सं० भा०) इच्छा, ख़्वाहिश। अभिमान=(सं० भा०) घमण्ड, गुरूर। प्रत्यक्ष=साक्षात, सन्मुख। प्रदीप=दीपक, सूर्य्य। भूषण=गहने। वसन=वस्त्र। जयमाल= विजय की माला, वह माला जिसको कन्या उसे देती है जिसको उसने अपना पति बनाना स्वीकार किया है।

मोहित होगये=मुग्ध होगये, आसक्त होगये। दुष्कर= (विशे०) (दुर्=दुख+कृ=करना) कठिन, असाध्य। प्रतिज्ञा= (सं० भा०) प्रण। खटक=(सं० भा०) शङ्का, दुविधा। युवा= (विशे०) तरुण, जवान। साहसी=(विशे०) हिम्मतवाला। उद्योग=(सं० भा०) उपाय, प्रयत्न। असमर्थ=(अ=नहीं+समर्थ =योग्य) अयोग्य। लक्ष्यभेद=निशाना लगाना। धनुर्वेदवेत्ता= (विशे०) (धनुर्वेद+वेत्ता=जानने वाला, पण्डित) धनुष विद्या का जानने वाला। सामन्त=(सं० जा०) योद्धा, पराक्रमी।

(पृष्ठ १११)

बींधा गया=मारा गया। सम्पूर्ण=(विशे०) पूरा, तमाम। धनुर्धारी=(विशे०) धनुष विद्या का जानने वाला। विहीन= विना। मही=(सं० जा०) पृथ्वी। वीर·······जानी=मैंने अब जान लिया कि पृथ्वी अब विना वीरों के है। नियमानुसार= नियम के मुताबिक़। सम्भव=मुमकिन। विशुद्ध=पवित्र। स्मरण =याद। लज्जित=शर्मिन्दा।

तेजस्वी=तेजधारी, प्रतापी। दमक रहा था=चमक रहा था। आनन्द से=प्रसन्नता से। अपरिचित=(विशे०) (अ+परिचित=जाना हुआ) नहीं जाना हुआ। व्यक्ति=आदमी। कुल-मर्यादा=कुल की प्रतिष्ठा, वंशावली। साक्षी=(सं० ज्ञा०) गवाह।

(पृष्ठ ११२)

सन्देशा=समाचार, सूचना। द्रोह=शत्रुता। युद्ध=(सं० भा०) लड़ाई। उद्यत=तय्यार। परिणामदर्शी=(परिणाम=नतीजा+दर्शी=देखने वाले) नतीजा सोचने वाले।

निकृष्ट=(विशे०) बुरा, खराब। सन्तुष्टि=सन्तोष, सब्र। इन्द्रप्रस्थ=दिल्ली। रमणीक=सुन्दर, मनोहर। राजसूय यज्ञ=एक प्रकार के यज्ञ का नाम है जिसको केवल चक्रवर्ती राजा ही करता है, जिसमें अधीन राजा लोग स्वयं आकर यज्ञ करने वाले राजा के काम करते हैं और जो नहीं आता है उसे उचित दण्ड दिया जाता है। यज्ञोत्सव=(यज्ञ+उत्सव) जलसा, खुशी, यज्ञपर्व। उपस्थित=हाज़िर।

(पृष्ठ ११३)

विरोधी=द्वेषी, दुश्मन। सारांश=तत्त्व, मतलब। समारोह=धूमधाम। अधीनता=(सं० भा०) मातहती। स्वीकार=अङ्गीकार, मंज़ूर। तीर के समान चुभी=बहुत दुःख हुआ। निराश=नाउम्मेद। अधम=(विशे०) नीच। युक्ति=उपाय। द्यूत=जुआ। आमन्त्रित=निमन्त्रित, बुलाया। छल= (सं० भा०) कपट। सर्वस्व=तमाम।

मानभंग=बेइज़्ज़ती, अनादर। निमित्त=कारण, लिए। कोलाहल=शोर, हल्ला, हलचल। आशंका=सन्देह। दूरदर्शी=(विशे०) दूरन्देश, तीव्र बुद्धिवाले।

(पृष्ठ ११५)

दूत=एलची। कुटिलता=बुराई। कलह=लड़ाई। स्वाहा=समाप्त, होम या यज्ञ करते समय जब देवताओं को बलि देते हैं तब यह शब्द बोलते हैं। सम्मिलित=शामिल। परास्त=हारे। वृत्तान्त=हाल। ग्रन्थ= (सं० जा०) किताब। विस्तारपूर्वक=पूरा पूरा। निर्माण=बनाया, तैयार। इतिहास=तवारीख़।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—पाण्डवों और कौरवों की लड़ाई के क्या कारण थे?

उत्तर—युधिष्ठिर का युवराज बनना। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ करने से राजाओं का आधीन होना देखकर दुर्योधन का द्वेष करना। वनवास की अवधि समाप्त होने पर युधिष्ठिर को राज्य वापिस न कर युद्ध को तैयार होना।

प्र० (२)—इस कथा से तुम्हें क्या क्या शिक्षाएँ मिलती हैं?

उत्तर—जुआ नहीं खेलना चाहिए। धर्म को न छोड़ना चाहिए। आपस में द्वेष न करना चाहिए। घमण्ड न करना चाहिए। किसी स्त्री का भी अपमान न करना चाहिए।

प्र० (३)—लेखक ने "वीर विहीन मही मैं जानी" के द्वारा किस कथा की ओर संकेत किया है?

उत्तर—त्रेतायुग में राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के स्वयंवर के लिए धनुषयज्ञ किया था, उस समय पर जनक राजा ने अपने प्रण को पूरा होते न देख उपरोक्त शब्द कहे थे।

(पृष्ठ ११६)

प्र० (४)—स्वयंवर का प्रण पूरा करने पर भी कर्ण का द्रौपदी के साथ विवाह नहीं हो सका था, क्यों?

उत्तर—क्योंकि द्रौपदी का विवाह क्षत्रिय वंश में होना चाहिए था। यद्यपि कर्ण ने स्वयंवर की प्रतिज्ञानुसार लक्ष्य को बेध दिया था, तथापि कर्ण के वंश का कुछ पता न होने से द्रौपदी का विवाह कर्ण के साथ न हो सका।

प्र० (५)—ज्येष्ठता, पाण्डव, बुद्धिमान्, लज्जित, दिव्य, मोहित, प्रकाशित शब्दों की व्युत्पत्ति बताओ। प्रण और पण शब्द में क्या भेद है? स्वाहा का क्या अर्थ है?

उत्तर—ज्येष्ठता=बड़प्पन। पाण्डव=पाण्डु के पाँचों पुत्र १ युधिष्ठिर, २ भीम, ३ अर्जुन, ४ नकुल, ५ सहदेव। बुद्धिमान्=अक़लमन्द। लज्जित=शर्मिन्दा। दिव्य=सुन्दर, मनोहर। मोहित=आसक्त। प्रकाशित=प्रकट की हुई, चमकदार। प्रण और पण में केवल इतना अन्तर है कि प्रण उसे कहते हैं कि किसी बात को अटल निश्चय करलेना। पण मामूली प्रतिज्ञा को कहते हैं।

स्वाहा=आहुति देना है, समाप्त, नष्ट।

२३—पुतलीघर।

पुतलीघर=(सं० आ०) वह कारखाना जहाँपर कल से कपड़ा बुना जाता है। वर्णन=बयान।

पश्चात्=(अव्य०) पीछे, बाद। असुविधा=(सं० भा०) कठिनाई, दिक्कत। घनिष्ठ=(विशे०) गहरा। सरलता=(सं० भा०) आसानी। प्राचीन=(विशे०) पुराने, पहले। ओटनी=(सं० आ०) चर्खी। जिन=यह इंगलिश का शब्द (Gin) है जिसका अर्थ ओटना है। मशीन=(सं० आ०) यह भी इंगलिश का शब्द (Machine) है, कल।

जन्मदाता=पैदा करने वाला, बनाने वाला। आविष्कार=नई बात निकालना, ईजाद। अवश्य=ज़रूर। बिगड़ जाना=ख़राब वा भद्दे होजाना। परिवर्त्तन=तब्दीली। यद्यपि=अगर्चे, जोभी। हेरफेर=उलटफेर। त्रुटियाँ=(सं० भा०) ग़लतियाँ, कसर, कमी।

(पृष्ठ ११७)

दोष=(सं० भा०) बुराई, ऐब। सौभाग्य=खुश क़िस्मती। आविष्कारक=(सं० जा०) ईजाद करने वाला, नई बात निकालने वाला। प्राप्त=मिलना।

अनन्तर=(अव्य०) पीछे, पश्चात्। प्रेस=(सं० जा०) यह इङ्गलिश का शब्द (Press) है जिसका अर्थ दबाना है। प्रेस (कल)=दबाने की मशीन। गट्ठे=गाँठ। प्रत्येक=(अव्य०) हर एक। वस्त्र=(सं० जा०) कपड़े। संख्या=तादाद, गिनती।

(पृष्ठ ११८)

धन्धे=काम, व्यापार। वृद्धि=(सं० भा०) बढ़ती, अधिकता। व्यवसाय=(सं० जा०) काम, व्यापार, रोज़गार। उन्नति=तरक्क़ी, वृद्धि। विरला=कोई। समीप=(अव्य०) निकट, पास। स्थापित=क़ायम। रहँटे= (सं० जा०) चर्ख़ा। श्रमजीवी=(सं० जा०) मज़दूर।

नित्य=(अव्य०) सदा। मुख्य=(विशे०) ख़ास। विशेषता=(सं० भा०) अधिकता। अन्यान्य=(अव्य०) (अन्य+अन्य=और) और और। अपेक्षा=बनिस्बत, सिवाय। अत्यन्त=(विशे०) बहुत ज़्यादा। मनमाना=मन चाहा हुआ। किफ़ायत से=फ़ायदे से, लाभ से। अतिरिक्त=सिवाय।

(पृष्ठ ११९)

आर्द्रता पूर्ण=तरी से भरी हुई। महीन से महीन=पतले से पतला, बहुत बारीक। उपयुक्त=(विशे०)उचित। कोठी=(सं० जा०)

तुलाहे, कोली । तलघर=तहखाना, नीचे का घर । अड़चन=
(सं० भा०) रुकावट, रोक ।

तन्तुओं = रेशे, कए । फ्लो=यह शब्द इंगलिश भाषा
का है जिसका अर्थ फूकना या हवा चलना है । वज़न=(सं० भा०)
बोझ । पंक्ति=लाइन, पांती, श्रेणी । निवारण=दूर, अलग ।
ओपिनर=यह शब्द इंगलिश का है ।

(पृष्ठ १२०)

पृथक् पृथक्=अलग अलग । सारांश=मतलब, खुलासा ।
पोहले=पोने । मिश्रण=मिला हुआ ।

(पृष्ठ १२१)

सहस्त्र=(विशे०) हजार । कला=विद्या, हुनर । कला ६४ हैं
जिनके नाम किसी हिन्दी कोष में देखो । श्रेष्ठता=(सं० भा०)
उत्तमता, अच्छाई । पराकाष्ठा=सीमा, हद । स्पष्ट=साफ़ ।
लेखकों=लिखने वाले । ललचा जाते हैं=लालायित होते हैं ।
सन्देह=शक, शुबह । ज्ञान=(सं०भा०) समझ, बुद्धि । स्वतंत्रता=
आज़ादी । शताब्दी=(शत=सौ+अब्द=वर्ष+ई प्रत्यय है) सदी ।

(पृष्ठ १२२)

सम्पूर्ण=(विशे०) कुल, तमाम । कल्पना शक्ति=विचार
करने की ताकत । अन्यथा=(क्रि० विशे०) नहीं तो । यन्त्र=
(सं० भा०) कल । आविष्कृत=ईजाद की हुई ।

प्रतीत=मालूम । परिवर्त्तन=(सं० भा०) तबदीली । परि-
वर्तित=(विशे०) बदले हुए । सुभीता=(सं० भा०) आसानी,
सरलता । क्रमशः=(क्रि० वि०) धीरे धीरे, आहिस्ता आहिस्ता ।
अभाव=कमी । सफल=कामयाब, उत्तीर्ण ।

चमत्कारिक=(विशे०) आश्चर्यजनक । विज्ञान=साइन्स ।
चमत्कार=विस्मय । दांतों तले उँगली दबाते हैं=बहुत आश्चर्य
करते हैं, हैरान होते हैं । वास्तव में=दर असल ।

(पृष्ठ १२३)

तुच्छ=(विशे०) छोटा, नाचीज़। उपयोग=काम। सिद्ध= साबित, सही। माँग=(सं० भा०) आवश्यकता। महाद्वीप= पृथ्वी का वह भाग जिसमें बहुत से मुल्क हों।

पुष्टिकारक=(विशे०) बल देने वाली। पोषक=पोषण करने वाले, पालने वाले। तत्व=जुज़, अंश। अमोनिया=एक प्रकार का गैस। सुगन्धित=(विशे०) खुशबूदार।

(पृष्ठ १२४)

शुद्ध=पवित्र। स्वादिष्ट=(विशे०) ज़ायक़ेदार। पाचक=(विशे०) हाज़िम। पुष्ट=मज़बूत, ताक़तवर। पाश्चात्य=(विशे०) पश्चिमी। ओषधि=दवा। सन्धिवात=इस शब्द के स्थान पर सन्निपात होना चाहिए। यह एक प्रकार की बीमारी है जिसमें वात का अधिक अंश होता है। कष्टसाध्य रोग=मामूली रोग, छोटे छोटे रोग।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—कपास से कपड़ा किस प्रकार बनता है? दोनों रीतियों का वर्णन करो—(१) मशीन के द्वारा, (२) चरखे और करघे के द्वारा।

उत्तर—मशीन से—कपास जिनिङ्ग फ़ैक्टरी में ओटी जाती है और गाँठ बाँधी जाती हैं फिर यह गाँठ पुतलीघर में पहुँचती है तब मशीन से गाँठ काटी जाती है और साफ़ की जाती है और तन्तुओं की उलझन सुलझाई जाती है। यह कार्य पहिले बिलो मशीन से होता था अब ओपिनर से होता है। फिर दूसरी मशीन से तह बनाई जाती है। फिर धुनने की कल से धुनी जाती है, और पोहले बन जाते हैं। फिर सूत का कपड़ा मशीन से बुना जाता है।

चर्खे और करघे से—कपास साफ़ करके ओटते हैं। फिर चरखे पर सूत कातकर करघे से कपड़ा बुनते हैं। यह कपड़ा मशीन की अपेक्षा मोटा होता है।

प्र० (२)—कपास के पौधे से हमें क्या क्या पदार्थ मिलते हैं? अमेरिका वाले बिनौले को किस किस काम में लाते हैं और हिन्दुस्तानी किस काम में? इससे तुम क्या परिणाम निकालते हो?

उत्तर—कपास के पौधे से हमको दो चीज़ें मिलती हैं—कपास, और बिनौला।

अमेरिका निवासी—वैज्ञानिकों ने बिनौलों को बड़ा उपयोगी साबित कर दिया है। इनके बड़े २ कारखाने खुल गये हैं बिनौलों की बुकनी और भूसी तय्यार करते हैं। आटा और तेल निकालते हैं। बुकनी से सूत, कम्बल, गद्दे, डोर, काग़ज़ और चटाइयाँ बनती हैं। भूसी को गोबर में मिलाकर खाद तैयार करते हैं। इसकी रोटी गेहूँ से सस्ती और पुष्टिकारक होती है। बादाम के समान मीठी होती है। तेल शरीर को कोमल करता है। बालों को बढ़ाता है। साबुन आदि के काम में लाते हैं। वहाँ के डाक्टरों की राय है कि यह पदार्थ कब्ज़ सन्निपात, खाँसी, कष्टसाध्य रोग को फ़ायदा करता है। हिन्दुस्तानी—इसको तुच्छ समझते हैं और पशुओं को खिलाने तथा बीज के सिवाय किसी में नहीं लाते हैं।

इससे यह परिणाम निकलता है कि भारतवासी इसकी क़दर नहीं करते हैं।

प्र० (३)—इस देश में सबसे पहला पुतलीघर कब खुला था?

उत्तर—इस देश में सबसे पहिले पुतलीघर कलकत्ते में सन् १८१८ ई० में स्थापित हुआ था।

प्र० (४)—विलायत में बड़े बड़े पुतलीघर मैंचेस्टर और लङ्काशायर में ही क्यों हैं?

उत्तर—इन शहरों के पास कोयले की खानें हैं जिनसे उनको कोयला सस्ता और किफ़ायत से मिलता है। द्वितीय आबहवा नम है जिससे सूत महीन कतता है।

प्र० (५)—परिवर्त्तन, घनिष्ट, आविष्कार, सौभाग्य, व्यवसाय, आर्द्रता, निवारण, सम्पादन, कष्टसाध्य शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो।

उत्तर—आजकल व्यापार में बड़ा परिवर्त्तन होरहा है। कृष्ण और सुदामा में घनिष्ठ मित्रता थी।

नूरजहाँ बेगम ने गुलाब से इत्र का आविष्कार किया था।

सौभाग्य से गङ्गा की नहर हमारे गाँव के समीप है विना किसी प्रकार के व्यवसाय के मनुष्य का जीवन नष्ट हो जाता है।

बरसात में हवा अधिक आर्द्रतापूर्ण रहती है।

रुपये से मनुष्य के सब कष्ट निवारण हो जाते हैं।

इस कार्य के सम्पादन का श्रेय आप को ही है।

मोहनलाल का रोग कष्टसाध्य है।

(पृष्ठ १२५)

२४—सभा विलास।

सभा विलास=(सभा+विलास आनन्द) सभा का आनन्द। एक पुस्तक का नाम है।

कैसे ········ बैर।

शब्दार्थ—निबल = (विशे०) दुर्बल, कमज़ोर। सागर=
(सं० जा०) समुद्र। बिचै=बीच, मध्य।

गद्य—सबलन सों बैर करि निबल जन कैसे निबिहैं। जैसे
सागर बिचै बसि मगर सों बैर करत।

पद्यार्थ—बलवानों से शत्रुता करके किस प्रकार कमज़ोर
मनुष्य गुज़र कर सकता है? जैसे समुद्र के बीच में रहकर मग
से बैर कर किस प्रकार रह सकता है?

अपनी पहुँच……………मोर।

शब्दार्थ—पहुँच=(सं० भा०) शक्ति। करतब=(सं० भा०
(कर्तव्य) काम। दौर=दौड़कर। तेते=(विशे०) तितने। जेतो=
(विशे०) जितनो। सौर=(सं० जा०) रज़ाई, लिहाफ़।

गद्य—अपनी पहुँच विचार के करतब दौर करिये। तेते पाँ
पसारिये, जेती लाँबी सौर।

पद्यार्थ—अपनी शक्ति को विचार कर काम को शीघ्र
करना चाहिए। उतने ही पैर फैलाने चाहिए, जितनी लम्बी
रज़ाई हो॥ २॥

भावार्थ—शक्ति से बाहर जो कार्य करता है उसको पछ
ताना और दुःख उठाना पड़ता है।

पिशुन……………फूँकि।

शब्दार्थ—पिशुन=(सं० जा०) छलिया, छल करने वाला
नर=(सं० जा०) मनुष्य। सुजन=(सं० जा०) (सु+जन
आदमी) सत्पुरुष, सज्जन। बिसास=(सं० जा०) विश्वास
यकीन। चूकि=भूलकर। दाध्यो=जला हुआ। छाछहिं=मठा।

गद्य—पिशुन छल्यो नर सुजन सों बिसास चूकि न करत
जैसे दूध को दाध्यो छाछहि फूँकि पीवत।

पद्यार्थ—छलियों से छला हुआ मनुष्य सत्पुरुषों का विश्वास भूलकर भी नहीं करता है; जैसे, दूध से जला हुआ मनुष्य मठा को फूँक फूँक कर पीता है ॥ ३ ॥

फेरन.........दूजी वार।

शब्दार्थ—फेर=फिर, दुबारा। कपट=छल।

गद्य—जो व्यापार कपटसौं कीजै फेर न ह्वैहै। जैसे काठ की हाँडी दूजी वार न चढ़े।

पद्यार्थ—जो व्यापार छल से किया जाता है वह फिर नहीं होता है, जैसे, काठ की हाँडी आग पर एक ही बार चढ़ती है ॥ ४ ॥

करिये.........कान।

शब्दार्थ—सयान=चतुराई।

गद्य—सुख को करिये दुःख होत कहु वह कौन सयान (है)। वा सोने को जारिये जासौं कान टूटे।

पद्यार्थ—जो काम सुख के लिए किया जाय और दुःख हो तो भला कहो यह कौनसी चतुराई का काम है। उस सोने को जला देना चाहिए जिस से कान टूटते हों ॥ ५ ॥

भले बुरे.........भाव।

शब्दार्थ—अन्यायपुर=वह शहर जिसमें न्याय न होता हो, अन्धेर नगरी। गुर=गुड़। भाय=भाव।

गद्य—जहँ भले बुरे एक से तहाँ जाय न वसिये। ज्यौं अन्यायपुर में खर गुर एकै भाव बिके।

पद्यार्थ—जहाँ भले और बुरे मनुष्य एकसे हैं अर्थात् उनमें कोई अन्तर नहीं है वहाँ जाकर न रहना चाहिए; जैसे, अन्धेर नगरी में खर और गुड़ एक ही भाव विकता है अर्थात् भले बुरे का कोई आदर नहीं है ॥ ६ ॥

मूरख .... हाथ।

शब्दार्थ—पोथी=(सं० जा०) किताब । गुण गाथ=गुणों की कथा। निरमल=(विशे०) (निर्मल) साफ़, स्वच्छ ।

गद्य—मूरख को पोथी गुण गाथ बाँचन को दई। जैसे अन्ध के हाथ निरमल आरसी दई।

पद्यार्थ—मूर्ख आदमी को पुस्तक कथा बाँचने को दी तो वह ऐसे है जैसे अन्धे आदमी के हाथ स्वच्छ आरसी देना ॥८॥

अति .... भारी होय।

शब्दार्थ—हठ=(सं० भा०) ज़िद। कामरी=(सं० जा०) कम्बल ।

गद्य—अति हठ मत कर हठ बढ़े कोय बात न करिहै। ज्यों ज्यों कामरी भीजै त्यों त्यों भारी होय।

पद्यार्थ—अधिक ज़िद करने से ज़िद और बढ़ती है, फिर कोई बात भी न करेगा, क्योंकि ज्यों ज्यों कम्बल भीगता है त्यों त्यों अधिक भारी होता है ॥ ६ ॥

(पृष्ठ १२६)

लालच .... प्यास।

शब्दार्थ—लालच=(सं० जा०) लोभ। आस=उम्मेद, आशा।

गद्य—लालच ऐसो भलो है जासों आस पूजै। कहुँ ओस के चाटेहूँ काहू को प्यास बुझत।

पद्यार्थ—लोभ ऐसा करना भला है जिससे आश पूरी हो। कहीं ओस के चाटने से किसी की प्यास बुझी है अर्थात् नहीं बुझी ॥१०॥

जैसे........सुगन्ध।

शब्दार्थ—दई =(दैन) ईश्वर, कर्त्तार। निबन्ध=बन्धन। सुगन्ध=(सं० भा०) खुशबू।

गद्य—दई जैसो गुण दीन्हौं तैसो रूप निबन्ध। सोना और सुगन्ध ये दोऊ कहँ पाइये।

पद्यार्थ—ईश्वर ने जैसा गुण दिया है वैसा रूप नहीं दिया है सोना और सुगन्ध ये दोनों बातें एक जगह नहीं मिलती हैं ॥ ११ ॥

प्रेम...........होय।

शब्दार्थ—निवाहन=निबाहना, निर्वाह। भषन=खाना। पै= परन्तु, लेकिन। लहरि=वेग, नशा।

गद्य—प्रेम निवाहन कठिन है कोय समझ कीजियो। भाँग भषन सहज है पर लहरि कठिन ही होय।

पद्यार्थ—प्रेम का निवाहना बड़ा कठिन है, किसी को समझ सोचकर करना चाहिए, क्योंकि जिस प्रकार भाँग पीना तो आसान है मगर उसकी लहर (नशा) बड़ी ही मुश्किल होती है ॥१२॥

एक वस्तु..........वाय।

शब्दार्थ—वस्तु = चीज़। भिन्न = अलग। प्रकृति=स्वभाव, आदत। भाय=अनुसार। भटा=बैंगन। बाय=वादी।

गद्य—एक वस्तु भिन्न प्रकृति के भाय (भिन्न) गुण होत है भटा एक को पित्त करै एक को बाय करै।

पद्यार्थ—एक ही चीज़ में अलग अलग स्वभाव के अनुसार भिन्न भिन्न गुण होते हैं; जैसे, बैंगन एक आदमी को पित्त पैदा करता है और एक आदमी को वात पैदा करता है ॥१३॥

बिन.........धेन ।

शब्दार्थ—स्वारथ=(सं० भा०) (स्वार्थ) मतलब, ग़रज़ । करुए=(विशे०) बुरे । बैन=बात, वचन । दुधारु=(विशे०) दूध देने वाली । धेन=गाय ।

पद्य—बिन स्वारथ कौऊ करुये बैन कैसे सहै । दुधारु धेन होय लात खाय पुचकारिये ।

पद्यार्थ—बिना मतलब के कोई बुरे वचन कैसे सह सकता है, जैसे दूध देने वाली गाय की लात खाकर भी पुचकारते हैं, अर्थात् मतलब होने पर सब सहते हैं ॥१४॥

करै.........होय ।

शब्दार्थ—बोवै=बोवै । ते=से

पद्य—कोय बुराई करै सुख चहै कैसे पावै । पेड़ बबूल को बोवै आम कहाँ ते होय ।

पद्यार्थ—कोई बुराई करके सुख चाहे तो कैसे पा सकता है अर्थात् नहीं पा सकता है; जैसे, बबूल का पेड़ तो बोवे फिर भला आम कहाँ से पैदा हो सकते हैं, अर्थात् नहीं ॥१५॥

भावार्थ—जो जैसा करेगा उसे वैसा ही मिलेगा ।

होय.........तयार ।

शब्दार्थ—निरधार=निश्चय । खाड़ = गड्ढा । खनैगो = खोदेगा । ताको=उसको । कूप=कुआँ ।

पद्य—यह निरधार कीन्ह बुराई से बुरा होय । (जो) और को खाड़ खनैगो ताको कूप तयार ।

पद्यार्थ—यह बात पूर्ण निश्चय है कि बुराई करने से बुरा

होता है। जो आदमी औरों को कुआ खोदता है उसके लिए पहले से कुआ तय्यार है॥१६॥

कन कन..........तोय।

शब्दार्थ—कन, कन=थोड़ा थोड़ा। निवरै=ख़त्म होता है, निबटता है। घट=घड़ा। रीते=ख़ाली। तोय=पानी।

गद्य—कन कन जोरे मन जुरै सोय खाते निबर। तोय बूँद बूँद सौं घट भरै टपकत रीते।

पद्यार्थ—थोड़ा थोड़ा जोड़ने से मनों इकट्ठा हो जाता है और खाने से समाप्त हो जाता है। जैसे, पानी की बूँद बूँद से घड़ा भर जाता है और बूँद बूँद टपकने से ख़ाली हो जाता है॥ १७॥

श्रम ही.........नाहि।

शब्दार्थ—श्रम=(सं० भा०) मेहनत।

गद्य—श्रम ही सों सब मिलत है बिन श्रम काहि न मिले। सीधी अँगुरी जम्यो घी क्यों हूँ नाहि निकरै।

पद्यार्थ—मेहनत से ही सब कुछ मिलता है। बिना परिश्रम के किसी को कुछ नहीं मिलता है। जैसे, सीधी अंगुलियों से जमा हुआ घी किसी प्रकार से भी नहीं निकलता है॥ १८॥

होत.........विहान।

शब्दार्थ—अयान=मूर्ख, अज्ञान। कुक्कुट=(सं० जा०) मुर्ग़ा। विहान=सवेरा।

गद्य—मो विना कारज न होत यहै कहै सो अयान (है)। कहा जहाँ कुक्कुट शब्द न (हो) तहँ विहान न होत।

पद्यार्थ—मेरे विना कार्य्य न होगा यह जो कहता है वह बड़ा मूर्ख है। क्या जहाँ मुर्ग़े का शब्द नहीं होता है वहाँ सुबह (प्रातःकाल) नहीं होती है अर्थात् होती है।

भावार्थ—किसी के विना किसी का कार्य नहीं पड़ा रहता है।

(पृष्ठ १२७)

यही……दाय।

शब्दार्थ—न्याव=(न्याय) इन्साफ़।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—इस बात को सब (संसार) कहते हैं कि जो राजा करता है वही न्याय है। जैसे, चौपड़ के खेल में जैसा पांसा पड़ता है वही दाव होता है।

पर को……होय।

शब्दार्थ—अवगुण=(सं० भा०) बुराई, दोष। दृष्टि=(सं० भा०) निगाह, नज़र। दीप=(सं० जा०) दीया, दीपक। तरे=(अव्य०) नीचे। पे=दूसरों।

गद्य—पर को अवगुण देखिये अपनो दृष्टि न होय। दीप पै उजेरो करै तरे अँधेरो होय।

पद्यार्थ—दूसरों के दोषों को तो देखते, परन्तु अपना दोष नहीं दीखता है। जैसे, दीपक दूसरों को तो उजेला करता है मगर स्वयं उसके नीचे अँधियारा होता है॥

अपनी……नाव।

शब्दार्थ—ठौर=स्थान। दाँव=(सं० भा०) पेच। थल=(सं० जा०) पृथ्वी।

गद्य—अपनी अपनी ठौर पर सब को दाव लागै। जल में गाड़ी नाव पर थल नाव गाड़ी पर।

पद्यार्थ—अपने अपने स्थान पर सब का दाव लग जाता है। जैसे, पानी में तो गाड़ी नाव के ऊपर होती है और स्थल पर नाव गाड़ी पर होती है॥

खल……ताहि।

शब्दार्थ—खल=(सं० जा०). दुष्ट, नीच। लरिये=लड़िये। ताहि=क्यों। गुर=(सं० जा०) गुड़। विष=ज़हर।

गद्य—सुख दिखाय दुख दीजिये खल सौं काहि लरिये। जो गुर दीन्हें ही मरत ताहि क्यों विष दीजै।

पद्यार्थ—यदि सुख दिखाकर दुःख होता हो तो दुष्ट से क्यों लड़े अर्थात् नहीं लड़ना चाहिए। जैसे, जो गुड़ के देने से ही मरता हो तो उसे क्यों विष (ज़हर) देना चाहिए अर्थात् नहीं देना चाहिए।

अनपूछे..........नाहिं।

शब्दार्थ—अनपूछे=विना पूछे। मूढ़=(सं० जा०) मूर्ख। ओछे=(विशे०) अधूरे। नीर=(सं० जा०) पानी।

गद्य—मन माहिं देख अनपूछे ही मूढ़ जानिये। ओछे नीर घट छलकै पूरे नाहिं छलकै।

पद्यार्थ—मन में देखकर विना पूछे ही मूर्ख को जान लेना चाहिए (क्योंकि मूर्ख आदमी स्वयं अपनी प्रशंसा करने लगते हैं)। जैसे, अधूरे जल के घड़े छलकते हैं और जो पूरे भरे हुए होते हैं वह कभी नहीं छलकते हैं।

विनसत..........भीति।

शब्दार्थ—विनसत=नष्ट होना। वार=देर। ओछे=(विशे०) नीच। प्रीति=प्यार, मुहब्बत। अंबर=(सं० भा०) आकाश। डम्बर=बनावट। अंबर डम्बर=लाल पीले बादल। भीति=(सं० जा०) दीवार।

गद्य—ओछे नर की प्रीति विनसत वार न लागही। ज्यौं साँझ के अम्बर डम्बर (और) बारू की भीति।

पद्यार्थ—नीच आदमी की प्रीति (मुहब्बत) के नाश होने में कुछ भी देर नहीं लगती है। जिस प्रकार शाम के लाल पीले बादल और बालू की बनी हुई दीवार के नष्ट होने में देर नहीं होती है।

कुल ……… चौकने पात।

शब्दार्थ—सपूत=(सं० ज्ञा०) अच्छा पुत्र। लक्षण=चिह्न। गात=(सं० ज्ञा०) शरीर। बिरवान=(सं० ज्ञा०) वृक्ष, पौधा। पात=(सं० ज्ञा०) पत्ता।

गद्य—गात सब लक्षण लखि जान्यो परत कुल सपूत (है)। होनहार बिरवान के पात चीकने होत।

पद्यार्थ—शरीर के लक्षणों (चिह्नों) को देखने से मालूम होने लगता है कि यह कुल में सुपुत्र होगा। जैसे, फलने वाले पौधे के पत्ते चीकने होते हैं ॥२६॥

जो ……… कौन।

शब्दार्थ—धनहीन=(सं० ज्ञा०) (धन+हीन=नहीं) कङ्गाल, निर्धन। नग्न=(विशे०) नङ्गा। जन=(सं० ज्ञा०) आदमी। सरोवर=(सं० ज्ञा०) तालाब।

गद्य—जो धनवन्त सु कुछ देय धन हीन कहा देइ। नग्न जन सरोवर न्हान कौन कहा निचोरै।

पद्यार्थ—जो धन वाले हैं वह कुछ दे सकते हैं, कङ्गाल क्या दे सकता है? अर्थात् कुछ नहीं, क्योंकि उसके पास कुछ है ही नहीं, जैसे, नङ्गा आदमी तालाब में स्नान करे तो वह क्या निचोड़ेगा? अर्थात् कुछ नहीं, क्योंकि उसके पास कपड़े ही नहीं हैं ॥२७॥

होय ……… छाज।

शब्दार्थ—निबाह=(निर्वाह) गुज़ारा। समाज=भीड़, समूह। छाज=(सं० ज्ञा०) सूप।

गद्य—आपनो निबाह न होय समाज लीने फिरैं। चूहा बिल न समात है पूँछ छाज बाँधिये।

पद्यार्थ—अपना निर्वाह तो होता नहीं और समाज को साथ

लिये फिरता है। जैसे, चूहा स्वयं तो बिल में आता नहीं है और पूँछ में सूप बाँध लिया है ॥ २८ ॥

बिना ·······बाट ।

शब्दार्थ—प्रयोजन=मतलब, अर्थ। ठटिये=रोपिये, करिये। ठाट=साज, आडम्बर। बाट=(सं० जा०) रास्ता, मार्ग।

गद्य—बिना प्रयोजन भूलहू ठाट नाहीं ठटिये। जा नगर को नहिं जानों ताकी बाट न पूँछ।

पद्यार्थ—बिना मतलब के भूल कर भी आडम्बर नहीं करना चाहिए। जिस नगर (शहर) को नहीं जाना है उसका रास्ता पूछना व्यर्थ है ॥ २९ ॥

(पृष्ठ १२८)

जो कहि ········विचार।

शब्दार्थ—निरधार=निश्चय।

गद्य—पहिले निरधार करि जो कहिये सो कीजिये। पानी पी घर पूँछनों भलो विचार नाहीं (है)।

पद्यार्थ—पहिले निश्चय करके जो कहो उसे करना चाहिए। पानी पीकर घर पूछना यह भला विचार नहीं है ॥ ३० ॥

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—भास, भपन, न्याव, बैन, धैन के शुद्ध रूप लिखो।

उत्तर—शब्द—शुद्ध रूप

भास—भाष

भपन—भक्षण

न्याव—न्याय

बैन—वचन

धैन—धेनु

प्र० (२)—उपमा और उपमेय किसे कहते हैं ? उक्त दोहों में से चार उदाहरण दो।

उत्तर—यदि किसी वस्तु के गुण की बराबरी किसी दूसरी वस्तु के गुण से की जाय उसे उपमा कहते हैं।

और जिसकी उपमा दी जाय वह उपमेय कहलाता है।

उदाहरण— उपमा उपमेय

ओछे जन की प्रीत—अम्बर डम्बर साँझ के

फेर न ह्वै है कपट सों } —जैसे हांडी काठ की चढ़ै
जो कीजै ब्योपार } न दूजी बार।

करै बुराई सुख चहै—रोपै पेड़ बबूल के आम कहाँ ते होय।

लोने फिरै समाज—पूँछ बाँधिये छाज।

प्र० (३)—"होय निबाह न आपनो"। इसका क्या अर्थ है ? "पानी पी घर पूँछनो" से क्या अर्थ है ?

उत्तर—"होय निबाह" इसके अर्थ के लिए कुञ्जिका में दोहा नं० २८ देखो।

"पानी पी घर पूँछनों" पानी पी कर पिलाने वाले से फिर उसकी जाति पूछना बड़ी मूर्खता है। पानी पीने से प्रथम ही पूछ लेना चाहिए।

२५—चिड़ियाँ का संसार।

चिड़ियाँ का संसार=चिड़ियों की दुनिया।

विदित=प्रकट, ज़ाहिर। विरले=कोई। भाँति=(सं० भा०) तरह, प्रकार। प्रयत्न=(सं० भा०) उपाय, कोशिश। स्वाभाविक=(विशे०) कुदरती। जीवनोपयोगी=(विशे०) (जीवन+

उपयोगी=लाभदायक) ज़िन्दगी के लिए लाभदायक। वस्तु=(सं० जा०) चीज़। परिश्रम=(सं० भा०) मेहनत।

(पृष्ठ १२६)

सघन=(विशे०) घना। पक्षियाँ=(सं० जा०) चिड़िया। शान्ति=(सं० भा०) स्थिरता, सुख। बस्ती=आबादी, गाँव। निःस्तब्धता=(सं० भा०) ख़ामोशी, चुप्पी। घात=(सं० भा०) दाव। किन्तु=लेकिन। जीवधारी=(सं० जा०) जानदार, प्राणी। सिकुड़ जाते हैं=सिमिटि जाते हैं।

(पृष्ठ १३०)

सुरीली=(विशे०) सुन्दर, तेज़। ढिंढोरा=एलान, मुनादी। प्रकाश=(सं० भा०) रोशनी, उजाला।

समाचार=(सं० भा०) ख़बर। धन्यवाद=शुक्रगुज़ारी, अहसानमंदी। स्वागत=(सं० भा०) पेशवाई। आश्विन=कुआर का महीना। असहाय=(विशे०) जिनका कोई मदद करने वाला न हो। निर्धन=(विशे०) कङ्गाल। नित्य=(अव्य०) रोज़, प्रतिदिन। नित्य कुआ खोदना नित्य पानी पीना=रोज़ कमाना और खाना। क्षुधा=भूख। सताने लगती है=दुःख (कष्ट) देने लगती है। धुन=ख़्याल, ध्यान। अहार=(सं० जा०) खाना। प्रायः=अक्सर।

(पृष्ठ १३१)

खोज=तलाश।

आहट=आवाज़, शब्द। जीवित=ज़िन्दा। स्मरण=याद, सुधि। बुद्धि=(सं० भा०) अक़्ल। तीव्र=(विशे०) तेज़। शक्ति=(सं० भा०) बल, ताक़त।

खोता=घोंसला। परीक्षा=जाँच। चिह्न=निशान।

(पृष्ठ १३२)

शीतकाल=जाड़े का मौसम।

फुदकती=फुदकती। चहचहाती है=शब्द करती है। अव-लाता या शारिका=(सं० जा०)। मैना।

रक्षा=हिफ़ाज़त। सतर्क=(विशे०) होशियार। विलम्ब=देर।

(पृष्ठ १३३)

लबालब= बिल्कुल, मुँह तक। पीड़ा=(सं० भा०) कष्ट, दुःख। प्राण=जान। कण्ठगत हो रहे हों=गले से निकल रहे हों।

भूलकर=ग़लती से। आहार=(सं० जा०) खाना। अभिप्राय= मतलब। ज्ञात=मालूम। पहचानने=जानने, समझने। शक्ति= (सं० भा०) ताक़त।

(पृष्ठ १३४)

हज़म किया हुआ= पचाया हुआ। उपकार=(सं० भा०) भलाई। निर्भर=मुनहसिर। लगभग=क़रीब क़रीब। अगणित= (विशे०) (अ=नहीं+गणित=गिन्ती) बेशुमार; अत्यन्त। समाप्त=ख़त्म। वैज्ञानिकों=साइन्स जानने वालों।

(पृष्ठ १३५)

नस्ल=जाति, क़ौम। गिरगिट=(सं० जा०) करकँटा। विदित=प्रगट, ज़ाहिर। परिवर्तन=(सं० भा०) तबदीली। नख =(सं० जा०) नाख़ून। समेत=सहित। प्रमाण=सुबूत। आ-वश्यकता=(सं० भा०) ज़रूरत। अधिकांश=अधिकतर। रुधिर =(सं० जा०) ख़ून, लहू। रक्ताणु=(सं० जा०) (रक्त=ख़ून+अणु= कण, टुकड़े) ख़ून के टुकड़े।

(पृष्ठ १३६)

सृष्टि=संसार, उत्पत्ति। संक्षिप्त=(विशे०) थोड़ासा। वर्णन

=बयान, कथा। अद्भुत=(विशे०) अनोखो। तथापि=तो भी। विभाग=हिस्सा। असम्भव=नामुमकिन।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—"चिड़ियों के संसार" से क्या अभिप्राय है ?
चिड़ियों की नस्ल के विषय में क्या जानते हो ?
क्या चिड़ियां हमारे लिए सर्वथा व्यर्थ हैं ?

उत्तर—चिड़ियों के संसार से यह मतलब है कि चिड़ियों की उत्पत्ति, पालन पोषण और रहन-सहन का हाल ज्ञात हो जावे।

चिड़ियों की बहुतसी नस्लें होती हैं।

चिड़ियां हमारे लिये व्यर्थ नहीं हैं बल्कि बहुत अधिक लाभदायक हैं, क्योंकि यह हज़ारों कीड़े मकोड़ों को खा जाती हैं जो हमको हानि पहुँचाते हैं।

प्र० (२)—चिड़ियां अपने बच्चों को किस प्रकार पालती हैं ?
मनुष्य जिस प्रकार अपने बच्चों को पालते हैं, उससे उनके ढङ्ग में क्या कोई अन्तर है ?

उत्तर—चिड़ियां अण्डे देती हैं और उनको सेती हैं। जब उनसे बच्चे निकल आते हैं तब उनको खाना लाकर खिलाती हैं। जब बच्चे खाना हज़म करने के योग्य नहीं होते हैं उस समय चिड़ियां खाना आधा हज़म करके देती हैं और जब योग्य हो जाते हैं तब अनाज के दाने कीड़े मकोड़े लाकर खिलाती हैं; और रात को बच्चों को लेकर घोंसले में सोती हैं। दिन में भी उनका बहुत ध्यान रखती हैं।

मनुष्य और चिड़ियों के पालन-पोषण में कोई अन्तर नहीं है।

प्र० (३)—"रक्ताणु" में कौनसी सन्धि है ? धन्यवाद, स्वागत, उड़ती चिड़िया पहचानना—इनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

उत्तर—रक्ताणु=(रक्त+अणु) दीर्घसन्धि ।

स्काउट को गंगा पर बच्चों को डूबते से बचाने की बहादुरी देखकर उपस्थित जनता ने उसे धन्यवाद दिया। विद्यार्थियों ने नये हेड-मास्टर का बड़ा स्वागत किया। नरेन्द्र इतना चतुर था कि उड़ती चिड़िया पहचान लेता था ।

(पृष्ठ १३७)

प्र० (४) पिंजड़े के भीतर और स्वतन्त्र चिड़ियाँ इन दोनों में तुम्हें कौन अधिक पसन्द आती है ?

उत्तर—स्वतन्त्र चिड़िया ।

प्र० (५)—प्रमाणित करो कि चिड़ियों में प्रबल स्मरण शक्ति है ?

उत्तर—जब एक चिड़िया के कई बच्चे होते हैं तो वह खाना सब को बारी-बारी से खिलाती है और जिसको पहले खाना दे देती है उसको फिर उस समय तक नहीं देती है जब तक वह बाक़ी सब को खाना नहीं दे लेती है ।

२६—गिरधर की कुण्डलियाँ ।

कुण्डलिया=एक छन्द का नाम है जो १४४ मात्रा का होता है ।

पुत्र प्रान·········न ऐसे ।

शब्दार्थ—चारिउ=(विशे०) चार । परमान=(प्रमाण) सबूत । नृप=(सं० आ०) राजा । परिहरेउ=छोड़ दिये । काज=काम । बरु=चाहे । सरबस=तमाम, सब । जाई=चला जाय ।

गद्य—चारिउ युग परमान पुत्र प्रान से अधिक हैं सो नृप दशरथ परिहरेउ (पर) वचन न जान दीन्हों। वचन न जान दीन्हों बड़ेन की बड़ाई बूझि बात रहै सो काज और बरु सरबस जाई गिरधर कविराय कह नृप दशरथ ऐसे भये पुत्र प्रान परिहरे ऐसे वचन न परिहरे।

पद्यार्थ—यह बात चारों युगों (सत्युग, त्रेता, द्वापर, और कलियुग) से मानी हुई है कि पुत्र प्राणों से अधिक प्यारा होता है सो राजा दशरथ ने पुत्र को तो छोड़ दिया, लेकिन वचनों को नहीं छोड़ा, और बड़ों की बड़ाई समझी, जिससे बात रहे वही काम है, चाहे सर्वस्व चला जाय। गिरधर कविरायजी कहते हैं कि राजा दशरथ ऐसे हुए कि जिन्होंने पुत्र और प्राण दोनों को त्याग दिया, परन्तु वचनों को नहीं जाने दिया॥ १॥

साईं········देखा।

शब्दार्थ—व्यवहार=बर्ताव। लेखा=हिसाब। बेग़रज़ी=बेमतलब को। प्रीति=मुहब्बत। विरला=कोई।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—हे स्वामी! इस संसार में सब मतलब का व्यवहार है जब तक पैसा पास है तब तक उसके यार हैं और साथ ही साथ रहते हैं, लेकिन जब पैसा पास नहीं रहता तब यार मुँह से भी नहीं बोलते हैं। गिरधर कविराय कहते हैं कि संसार का यही हिसाब है कि बेमतलब प्रीति करते हुए हमने कोई भी नहीं देखा है॥ २॥

झूँठा·······कागद झूँठा।

शब्दार्थ—झूँठा=झूँठ बोलने वाला। ऋण=क़र्ज़। ऊपजै=पैदा होता है।

(पृष्ठ १३८)

ऊँच-नीच=भला-बुरा। धावे=दौड़ते हैं। रुक्का=अपना, काग़ज़। कागद=कागज़, स्टाम्प।

गद्य—सरल है।

भावार्थ—झूठा आदमी मीठी बातें कहकर क़र्ज़ (ऋण) उधार ले जाते हैं और लेते हुए बड़ा आनन्द पैदा होता है, परन्तु लेकर दिया नहीं जाता है। लेके दिया नहीं जाता है और भला बुरा बताने लगता है। यह उधार का क़ायदा है कि माँगते समय सामने दौड़ते हैं। गिरधर कविराय कहते हैं कि वह आदमी जान बूझकर मन में अप्रसन्न रहता है, मगर जब बहुत दिन होजाते हैं तब कहता है कि तुम्हारा काग़ज़ झूठा है॥३॥

साईं .... चूको साईं।

शब्दार्थ—समौ=(सं० भा०) समय, अवसर। यथाशक्ति=सामर्थ्यभर। उनमान=अनुसार, मुताबिक़। पौरि=दरवाज़ा, द्वार। प्रमान=निश्चय। असमौ=कुअवसर। अङ्क=गोद। कण्ठ=हृदय।

गद्य—साईं यथाशक्ति उनमान समौ न चूकिये को जाने तेरी पौरि प्रमान को आइहै, तेरी पौरि प्रमान समौ असमौ तकि आवै ताको तू मन खोलि अङ्क भर कण्ठ लगावै। गिरधर कविराय कह यामें सबै शोध आई साईं शीतल जल, फल, फूल समौ जिन चूको।

भावार्थ—हे स्वामी अपनी सामर्थ्य के अनुसार समय पर नहीं चूकना चाहिए, क्योंकि कौन जानता है कि तेरे द्वार का निश्चय कर कौन आजाय। तेरे द्वार का निश्चय कर मौक़ा और बेमौक़ा देखकर आजावे तो उसको तू दिल खोल कर गोद भर कर हृदय से लगाले। गिरधर कविराय कहते हैं कि इसी में सब बन जाती है कि शीतल जल और फल फूल से समय पर मत चूकिए॥४॥

साईं ये.........आवे साईं।

शब्दार्थ—विरुद्धिये=बैर करिये। वनिता=(सं० जा०) स्त्री। पौरिया=(सं० जा०) द्वारपाल, ड्योढ़ीवान्। वैद=(सं० जा०) वैद्य।

गद्य—साईं! गुरु, पण्डित, कवि, यार, बेटा, वनिता, पौरिया, यज्ञ करावनहार, राज-मंत्री, विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई जो होई ये न विरुद्धिये। गिरधर कविराय यह कह युगन ते चलि आई। साईं इन तेरह सों तरह दिये बनि आवे।

पद्यार्थ—हे स्वामी! गुरु, पण्डित, कवि, मित्र, बेटा, स्त्री, द्वारपाल, यज्ञ कराने वाला, राज्य का मंत्री, ब्राह्मण, पड़ोसी, वैद्य, खुद को रसोई बनाने वाला रसोइया जो होय, उन से शत्रुता न करनी चाहिए। गिरधर कविराय कहते हैं कि ये हमेशा से चली आई है कि इन तेरह मनुष्यों से तरह देने से ही बनती है ॥८॥

जाकी.........धरती जाकी।

शब्दार्थ—धरती=(सं० जा०) ज़मीन। अपंग=बिना पैर का।

(पृष्ठ १३६)

दिलासा=(सं० मा०) धीरज।

गद्य—जाकी धन धरती हरी ताहि संग न लीजै। जो संग राखेही बनै तौ अपंग करि राखु। तौ अपंग करि राखु सुन कीजै फेरि फरकै। कपट रूप बतराय ताहिको मन हर लीजै। गिरधर कविराय कह ताकी खुटक नहिं जैहै। कोटि दिलासा देउ जाकी धन धरती लई।

पद्यार्थ— जिसकी धन धरती छीन ली है उसको अपने साथ न रक्खो और यदि संग रखना ही पड़े तो उसे अपने

अधीन रक्खो और ऐसा कार्य न करो जिस से वह फड़क उठे, और कपट की बातें बनाकर उसका मन हर लेना चाहिए। गिरधर कविराय कहते हैं कि उसके मन की खुटक नहीं जायगी चाहे उसे तुम कितनी ही दिलासा क्यों न दो, जिसको कि तुमने धन और धरती ले ली है ॥६॥

बिना·········बिना विचारे।

शब्दार्थ—विचारे = सोचे, समझे। पाछे = पीछे। चैन= (सं० भा०) आराम। सन्मान=(सं० भा०) आदर।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—बिना समझे जो कार्य करता है वह अन्त को पछताता है। काम तो अपना बिगाड़ता है और फिर संसार में हँसी होती है। संसार में हँसी होती है और चित्त को आराम नहीं मिलता है, और मन को खाना, पीना, आदर और राग-रंग कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। गिरधर कविराय कहते हैं कि कष्ट कुछ टालने से नहीं टलता है। वह हृदय में खटकता ही रहता है, जिसको कि बिना समझ कर किया है ॥७॥

भावार्थ—इसलिए हमको चाहिए कि किसी कार्य को करने से पहले उसे भली प्रकार विचार लें।

साईं अपने·········नहीं साईं।

शब्दार्थ—दुर्जन=(सं० भा०) दुष्ट। सीरे=शान्त। चतुरन= (सं० भा०) होशियारों। करतूती=(सं० भा०) कार्य, काम।

गद्य—साईं कोय अपने चित्त की भूल न कहिये। तब लग मन में राखिये जब लग कारज होय। जब लग कारज होय भूल कबहूँ नहि कहिये। दुर्जन तातो होय आप सीरे ह्वै रहिये। गिरधर कविराय कह बात चतुरन के ताईं। करतूती कह आई आप नहिं कहिये।

पद्यार्थ—हे स्वामी ! कोई अपने हृदय की बात किसी से भूलकर भी न कहे और उस समय तक हृदय में रक्खे जबतक कार्य हो। जबतक कार्य हो कभी भूल कर भी न कहे। यदि दुष्ट क्रोधित हो तो आप को शान्त हो जाना चाहिए। गिरधर कविराय कहते हैं कि यह बात चतुर आदमियों के लिए है, कर्त्तव्य स्वयं कह देता है आप को न कहना चाहिए ॥८॥

साईं अपने भ्रात·······बाज्यो साईं।

शब्दार्थ—भ्रात=(सं० जा०) भाई। त्रास=(सं० भा०) दुःख, कष्ट। लंकेश=(सं० वि०) (लंक+ईश=स्वामी) रावण। गति=(सं० भा०) दशा। लंकपति=लङ्का का राजा।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—हे स्वामी ! अपने भाई को कभी दुःख न देना चाहिए और उसे आँखों से दूर न जाने दे और उसे सदा अपने समीप रक्खे और न उसे कभी कष्ट दे। लंका के राजा रावण ने अपने भाई विभीषण को दुःख दिया था उसकी हालत सुन लीजिये। गिरधर कविराय कहते हैं कि वह (विभीषण) रामचंद्रजी से जाकर मिलगया और लङ्का का राज्य पाकर लङ्का का स्वामी कहलाने लगा ॥९॥

नैया······· आवै नैया।

शब्दार्थ—नैया=(सं० जा०) नाव, नौका। उदण्ड=(विशे०) तेज़, कठिन। मँझधारहि=बीच धार में।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—नाव तो मेरी छोटीसी है और पत्थरों के बोझ से भरी हुई है और नदी में चारों ओर से भँवर उठते हैं और मलाह मतवाला है तथा नाव बीच धार में आ गई है। कठिन आँधी चल रही है तिसपर भी पानी बरस रहा है। गिरधर

कविराय कहते हैं कि हे प्रभो! आप ही मेरी नाव को खेने वाले हैं अतः दया करके डाँड़ उठाइए जिस से मेरी नाव किनारे पर आजाय ॥ १० ॥

भावार्थ—कवि ने इस कुण्डलिया में संसार को नदी, अवस्था (उम्र) को नाव, पापों को पत्थर, विषय भोग को भँवर, मन को मतवाला मल्लाह, तरुणाई समाप्त होने के समय को मँझधार, तृष्णा को आँधी, काम क्रोधादि को पानी बरसने की तुलना दी है। इन आपदाओं में फँसकर ईश्वर को मल्लाह और उसकी दया को बल्ली नियत कर यह प्रार्थना की है कि मेरी नाव (उम्र को) इस संसार से पार कर दीजिये।

उरझी नाव.........उरझी।

शब्दार्थ—उरझी=फँस गई। कुठौर=बुरी जगह। दीनबन्धु=(दीन=गरीब+बन्धु=भाई), ईश्वर, परमेश्वर। करिया=(सं० जा०) मल्लाह। नाउ=नाव। प्रचण्ड=(विशे०) तेज़। ताउर=बुखार, बेहोशी।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—मेरी नाव बुरी जगह में फँस गई है और भँवरों के बीच आगई है—हे प्रभो! आप के बिना मेरी कौन सहायता कर सकता है। मेरी नाव बिना मल्लाह के बह रही है, आँधी बड़ी तेज़ उठी देख कर मुझे बुखार सा आगया है। गिरधर कविराय कहते हैं कि हे नाथ! आप के बिना कब कहाँ किसकी नैया पार हुई है इसलिए मैं विनती करता हूँ कि मेरी नाव विपत्ति में फँसी हुई है (मुझे संसार-सागर से मुक्त कर) ॥११॥

भावार्थ—इस कुण्डलिया में कवि ने संसार को कुठौर बताया है, संसार के मायामोह को भँवर बताकर ईश्वर से प्रार्थना की है कि मेरी उम्र बिना भजन के बीत गई है और संसार

के बन्धन से मुक्त नहीं हो सकता हूँ अतः मुझे भक्ति दान देकर स्वर्ग का अधिकारी बनाइये।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—पहली और नवीं कुण्डलियों में किस कथा की ओर संकेत है?

उत्तर—पहली कुण्डलिया में यह कथा है कि राजा दशरथ की छोटी रानी कैकेयी ने दो वचन माँगे थे जिनमें रामचन्द्र को १४ वर्ष का वनवास और भरत को राजगद्दी। राजा दशरथ ने अपने प्यारे पुत्र रामचन्द्र और लक्ष्मण को वनोवास दे दिया और अपने प्राणों को भी त्याग दिया लेकिन वचनों को नहीं त्यागा।

नवीं कुण्डलिया में यह कथा है कि जब रावण सीताजी को चुरा ले गया था उस समय विभीषण ने उसे समझाया था कि सीताजी को लौटा दो मगर रावण ने मानना तो अलग रहा बल्कि उसको मार कर निकाल दिया फिर विभीषण रामचन्द्रजी से जाकर मिल गया, रामचन्द्रजी ने रावण को युद्ध में मार दिया और विभीषण को लङ्का का राजा बनाया।

प्र० (२)—दसवीं और ग्यारहवीं कुण्डलियों का भावार्थ बताओ।

उत्तर—ईश्वर के बिना संसार के दुःखों से बचाने वाला कोई नहीं है।

प्र० (३)—पंगु, उद्दण्ड, प्रचण्ड, परिहरि, खुटक, तरह देना—इनको अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

उत्तर—रेलगाड़ियों की अधिकता के कारण मनुष्य पंगु हो गये हैं।

मोहनलाल स्वभाव का बड़ा उद्दण्ड है।

तारीख़ २८ को बड़ी प्रचण्ड आँधी आई थी ।
हे दीनबन्धो ! आपको परिहरि किसको आराम मिला है ।
हरिकृष्ण के मन में वह दिन बुरी तरह खटक रहा है ।
सज्जन पुरुष अपने कर्मचारियों की बातों पर तरह देते हैं ।

२७—मुद्रण-कला ।

(पृष्ठ १४१)

मुद्रण=छापा । कला=हुनर, विद्या । मुद्रण-कला=छापे की विद्या, छापे का कार्य ।

आविष्कार=ईजाद, किसी नई चीज़ को बनाना । उपकार=(सं० भा०) भलाई । कष्ट=(सं० भा०) दुःख । व्यय=(सं० भा०) ख़र्च । मुद्रित=छापी । अभाव=कमी, न मिलना । अत्यधिक=(विशे०) अधिक, बहुत । बाहुल्य=अधिकता, बहुतायत । व्यक्ति=(सं० जा०) मनुष्य । सुलभ=(सं० भा०) आसान, सहज । सहायता=(सं० भा०) मदद । अतएव=इसलिए । खोज =(सं० भा०) तलाश । चिरऋणी=बहुत समय का ऋणी बहुत कर्ज़दार ।

इतिहास=(सं० जा०) तवारीख़, जीवनी । लोप= गुप्त । आश्चर्य=(सं० भा०) अचरज । रक्षा=हिफ़ाज़त ।

(पृष्ठ १४२)

साधारण=(विशे०) मामूली । प्रत्येक=हर एक । पृथक् पृथक्=अलग अलग । टाइप=यह इङ्गलिश का शब्द है यानी छापने के अक्षर । प्रतियाँ=कापियाँ, पुस्तकें । प्रचलित=जारी । विशेष=(विशे०) अन्य, ख़ास । लेग=यह इङ्गलिश का शब्द है

(litho) मानी पत्थर की छपाई। हेण्ड प्रेस=यह भी इङ्गलिश का शब्द है माने हाथ का प्रेस।

(पृष्ठ १४३)

आकर्षित=खींचा हुआ। प्राचीन=(विशे०) पुराने। प्रतिकूल=(सं० भा०) विरुद्ध, खिलाफ़। प्रत्युत=बल्कि। अत्याचार=(सं० भा०) अन्याय, ज़ुल्म। स्थिर=ठहरी हुई। स्थित=ठहरा हुआ। चेष्टा=(सं० भा०) इच्छा। नियम=क़ानून। अटल=(विशे०) जो टल न सके। अनिवार्य=(क्रि० विशे०) आवश्यक, ज़रूरी। विजय=(सं० भा०) जीत। समर्थन=पुष्टि करना, हाँ में हाँ करना। तथ्य=सत्य। अकस्मात्=यकायक, दैवात्। परिणाम=नतीजा, फल। निर्धारित=निश्चय। समस्त=(विशे०) तमाम, सब। प्रवृत्ति = लगन, झुकाव। महत्वपूर्ण = (विशे०) बड़प्पन से भरे हुए। आविष्कर्ता=निकालने वाला, नवीन खोज करने वाला। लोकोक्ति=कहावत। प्रसिद्ध=मशहूर, विख्यात।

(पृष्ठ १४४)

संचालन = (विशे०) चलाना। शक्ति = (सं० भा०) ताक़त, बल। ध्यानपूर्वक=ग़ौर से। अन्धों के हाथ बटेर लग गई=बिना परिश्रम के लाभ होगया। महोदयों=नामवरों, सज्जनों। प्रकृति=क़ुदरत, स्वभाव। सूक्ष्म= (विशे०) बारीक, बहुत छोटा। अवलोकन=(सं० भा०) दृष्टि, नज़र, देखना। निष्कर्ष=तात्पर्य, निश्चय, सिद्धान्त।

(पृष्ठ १४५)

ठप्पे=खुदे हुए नक़्श। सफलता=(सं० भा०) कामयाबी। शताब्दी=(शत =सौ+ अब्द=वर्ष+ई) सौवर्ष, सदी। निर्माता=बनाने वाला। हताश=नाउम्मेद, निराश। भाग्यवश=दैवयोग से। सहस्र=हज़ार, दस सौ। अनुमान=अन्दाज़ा। त्रुटिपूर्ण=ग़लतियों से भरा हुआ।

कुशाग्र=तेज़, तीव्र। स्वामी =मालिक। तत्पर=लगा हुआ।

(पृष्ठ १३६)

उन्नत=ऊँचा। प्रतिज्ञा=(सं० भा०) प्रण, वायदा। सम्मिलित=शामिल। चकित=दंग, हैरान। सन्देह=शक। शासक=प्रबन्धक, हाकिम।

कम्पोज़िंग=यह इङ्गलिश का शब्द (Composing) **है माने** अक्षर मिलाना, चुनना। प्रिंटिंग=(यह इङ्गलिश का शब्द है) (Printing) छापना। नवीन यन्त्रों=नई कलों, नई मशीनों।

(पृष्ठ १४७)

व्यवसाय=उद्यम, व्यापार। शिक्षा=सीखना।

(पृष्ठ १४८)

अंश=भाग। प्रभाव=असर। हर्ष=(सं० भा०) आनन्द। उद्देश=(सं० भा०) मतलब। अनुभव=(सं० भा०) ज्ञान, तजरिबा। झंझट=(सं० भा०) झगड़ा, बखेड़ा। विरोध= सं० भा०) झगड़ा। उन्नति=(सं० भा०) तरक्की। विस्मय=(सं० भा०) आश्चर्य, अचरज।

(पृष्ठ १४६)

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—मुद्रण-कला कितने प्रकार की होती है? उनका वर्णन लिखो। उनके आविष्कार का भी संक्षिप्त इतिहास बताओ।

उत्तर—मुद्रण-कला दो प्रकार की होती है। (१) लेथोग्राफी—एक विशेष प्रकार के पत्थर पर स्याही विशेषसे लिखकर मुद्रण-यन्त्र से लाखों प्रतियाँ छापी जाती हैं। उर्दू की किताबें प्रायः इसी रीति से छपती हैं। (२) प्रिंटिंग—

इस में अक्षरों को जोड़ कर फिर मुद्रण-यन्त्र द्वारा प्रतियाँ छाप ली जाती हैं।

एक हज़ार वर्ष पूर्व चीन देश के निवासियों ने लकड़ी पर अक्षर खोदकर छापने की रीति निकाली थी। १२वीं सदी में इसका प्रचार यूरोप में हुआ। स्ट्रास-वर्ग के ग्रटेनवर्ग ने लकड़ी के अक्षर अलग अलग बनाये। मगर फ़ोस्ट के नौकर ने सीसे के अक्षर ढालने में सफलता प्राप्त की।

लेथोग्राफ़ी—म्यूनिख नगर का सेंडफेल्डर सस्ती छपाई करने के विचार में रहता था, इसने मोम, साबुन और काजल की स्याही बनाकर ताँबे पर लिखा। सूखने पर शोरे के तेज़ाब से भी नहीं छूटी। ताँबा महँगा होने के कारण दूसरी चीज़ की खोज में रहने लगा, अचानक पत्थर मिल गया जो चिकनाई और स्याही को पी लेता था। पत्थर पर लिखे हुए अक्षरों पर तेज़ाब डाला मगर स्याही पर कुछ असर न हुआ। बाद को तेज़ाब की जगह पानी काम में लाने लगे। इस प्रकार लेथोग्राफ़ी की उन्नति हुई।

प्र० (२)—बड़े बड़े आविष्कारों के विषय में कौन दो बातें विशेष उल्लेखनीय हैं? क्या ये मुद्रण-कला के आविष्कार में भी पाई जाती हैं? यदि हाँ, तो किस प्रकार?

उत्तर—संसार के बड़े बड़े आविष्कारों के इतिहास में दो बातें होती हैं। एक तो यह कि किसी विद्वान् को कोई नई बात ज्ञात होती है जो प्राचीन विचारों के प्रतिकूल होती है तब लोग विश्वास नहीं करते हैं और आविष्कार करने वाले पर अत्याचार करते हैं। दूसरी बात यह है कि नवीन तथ्य मनुष्यों को यों ही नहीं सूझ गये और उन

से इतने बड़े बड़े परिणाम अचानक ही नहीं निकल आये।

ये दोनों बातें मुद्रण-कला के आविष्कार में भी पाई जाती हैं, जैसे, फ्रोम्ट साहब को जादूगर बताया और शहर के शासक ने उनके घर की तलाशी ली।

प्र० (३)—"अत्यधिक" में कौन सन्धि है? कला, संचालन, बाहुल्य, निष्कर्ष, अनिवार्य्य, अवलोकन, त्रुटिपूर्ण, विस्मय—इन को अपने वाक्यों में प्रयोग करो। "अन्धे के हाथ बटेर" का क्या अर्थ है?

उत्तर—(अति+अधिक) ह्रस्व संधि है।

आज कल भारत में शिल्प कला की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।

इस कार्य के सञ्चालन में अधिक धन की आवश्यकता है।

अलीगढ़ में ताले बाहुल्य रूप में तय्यार किये जाते हैं।

उद्योग करने से लोग महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं।

मेरा सभा में जाना अनिवार्य्य है।

मैंने इस पुस्तक का बहुत अवलोकन किया है।

अभी आपका इस प्रश्न का उत्तर बहुत त्रुटिपूर्ण है। आपको देखकर बड़ा विस्मय हो रहा है।

अन्धे के हाथ बटेर लग गई अर्थात् बिना परिश्रम के लाभ हो गया।

२८—वृन्द कवि के दोहे।

(पृष्ठ १४६)

सबै .... बुझाय ।

शब्दार्थ—सहायक=(सं० जा०) मददगार, सहायता देने वाले। सबल=(सं० जा०) बलवान्। पवन=(सं० भा०) हवा।

गद्य—सबल के सबै सहायक निबल (का) कोई सहायक न पवन आगि को जगावत दीपहि बुझाय देत।

पद्यार्थ—बलवान् की सब सहायता करते हैं निर्बल का कोई सहायक नहीं होता है। जैसे, हवा आग को तो प्रचण्ड (तेज़) कर देती है परन्तु दीपक को बुझा देती है ॥१॥

कछु .... झकोर।

शब्दार्थ—अचल=(सं० जा०) (अ=नहीं+चल) पहाड़। तरु=(सं० जा०) वृक्ष, पेड़।

गद्य—सबल सों कछु नहिं बसाय निबल सों जोर करे। पवन अचल न चलै तरु झकोर उखारि डारत।

पद्यार्थ—बलवान् से तो कुछ वस नहीं चलता है और निर्बल पर बल दिखलाता है। जैसे, हवा पहाड़ को तो चला (हिला) भी नहीं सकती है, परन्तु वृक्षों को झकझोर कर उखाड़ कर फेंक देती है ॥२॥

नृप .... होय।

शब्दार्थ—नृप=(सं० जा०) राजा। प्रताप=(सं० भा०) तेज, ऐश्वर्य। दिनेश=सूर्य। तिमिर=(सं० भा०) अन्धेरा।

गद्य—नृप-प्रताप ते देश में कोय दुष्ट नहीं रहै। दिनेश को तेज प्रगटै तहाँ तिमिर नहि होय।

पद्यार्थ—राजा के ऐश्वर्य से देश में कोई दुष्ट नहीं रहता

है जैसे जहाँ पर सूर्य का तेज प्रकट होता है वहाँ पर फिर अँधेरा नहीं रहता है ॥ ३ ॥

हरै ……… जान।

शब्दार्थ—बान=(सं० भा०) आदत, टेव। तीखे=(विशे०) पैने, तेज़। कण्टक=(सं० आ०) काँटे।

गद्य—जाहि प्रेम की बान (वह) काहू दुख सों न डरै। भौंर तीखे कण्टक जान केतकी न छोड़ै।

भावार्थ—जिसको प्रेम की आदत होती है वह किसी दुख से नहीं डरता है। जैसे, भौंरा पैने (तेज़) काँटों को जान कर भी केतकी को नहीं छोड़ता है ॥ ४ ॥

पर ……… होय।

शब्दार्थ—औगुन=(सं० भा०) अवगुण, बुराई। दृष्टि=(सं० भा०) नज़र, निगाह। तरे=(अव्य०) नीचे, तले।

गद्य—सरल है।

भावार्थ—(मनुष्य) दूसरे के अवगुण (बुराई) तो देखता है परन्तु (उसे) अपनी बुराई नज़र नहीं आती है। जैसे, दीपक दूसरों पर प्रकाश डालता है मगर उसके नीचे अँधेरा ही होता है ॥ ५ ॥

(पृष्ठ १५०)

ठौर ……… साँप।

शब्दार्थ—ठौर=(सं० आ०) स्थान, जगह। कुटिल=(विशे०) टेढ़ा। गति=(सं० भा०) चाल। बाँबी= साँप का बिल।

गद्य—ठौर देखि के आप गति कुटिल सरल कीजिये। साँप बाहर टेढ़ो फिरत है, बाँबी सूधो (जात)।

भावार्थ—स्थान देख कर अपनी चाल टेढ़ी और सीधी कर लेना चाहिए (अवसरानुसार अपनी गति रखनी चाहिए)। जैसे साँप बाहर टेढ़ा फिरता है मगर बाँबी में सीधा जाता है ॥६॥

ताही········ डार।

शब्दार्थ—यतन=(सं० जा०) यत्न, उपाय। आर=(सं० भा०) सहारे, आड़।

गद्य—जाकी आर रहिये ताही को यतन करिये। कौन (है) डार पर बैठ के सोई डार काटै।

पद्यार्थ—जिस के सहारे रहे उसी का यत्न करे अर्थात् भलाई करे। जैसे, ऐसा कौन है जो जिस डाल पर बैठा हो और उसी को काटे अर्थात् ऐसा कोई नहीं है ॥७॥

उत्तम········तोय।

शब्दार्थ—उत्तम=(विशे०)अच्छे, सज्जन। जन=(सं० जा०) आदमी। अवगुन=(सं० जा०) अवगुण, बुराई। घन=बादल। उदधि=(सं० जा०) समुद्र, सागर। तोय=(सं० जा०) पानी।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—श्रेष्ठ पुरुषों से मिलते ही दोष भी गुण हो जाते हैं। जैसे, बादल के साथ समुद्र का खारी पानी मिल कर मीठा पानी होकर बरसता है ॥८॥

उद्यम·········पयोद

शब्दार्थ—उद्यम=(सं० भा०) मेहनत, रोज़गार। कबहुँ= कभी। मोद=(सं० भा०) खुशी। उनयो=उमड़ा हुआ। पयोद= बादल।

गद्य—पर आशा के मोद उद्यम कबहुँ न छोड़िये। उनयो पयोद देखि गागर कैसे फोरिये।

पद्यार्थ—दूसरे से लाभ होने की आशा की प्रसन्नता में अपना उद्यम (रोज़गार) कभी नहीं छोड़ना चाहिए। जैसे, उमड़ा हुआ बादल देखकर गागर क्यों कर फोड़ना चाहिए अर्थात् नहीं फोड़ना चाहिए ॥ ९ ॥

कहा···········होय

शब्दार्थ—प्रकृति=(सं० भा०) स्वभाव। सनेह=(सं० जा०) तेल।

गद्य—कोऊ कहा यतन करै कोय प्रकृति न बदलै। सदा सनेह में साने जीभ चिकनी न होय।

पद्यार्थ—कोई कितना ही उपाय क्यों न करे परन्तु कोई भी स्वभाव नहीं बदल सकता है। जैसे, सदा तेल में सने रहने पर भी जीभ चिकनी नहीं होती है ॥१०॥

आप·········होय।

शब्दार्थ—अकारज=(सं० भा०) बिगाड़। कुसंगति=बुरी संगति।

गद्य—कुसंगति साथ आपनो अकारज आप करत। मूरख अपने हाथ पाँव कुल्हाड़ा देत हैं।

पद्यार्थ—बुरी संगति में पड़ कर अपना बिगाड़ आप कर लेते हैं। जैसे, मूर्ख अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मार लेते हैं ॥११॥

भले बुरे·········माहि।

शब्दार्थ—एकसे=बराबर, समान। जौं लौं=जबतक। काक=(सं० जा०) कौआ। पिक=(सं० जा०) कोयल। माहि=में।

गद्य—भले बुरे सब एकसे (हैं) जौं लौं नाहि बोलत। बसंत ऋतु के माहिं काक पिक जान परत हैं।

पद्यार्थ—भले बुरे सब उस समय तक एकसे हैं जब तक कि वे बोलते नहीं हैं। जैसे, वसन्त ऋतु में कौआ और कोयल पहचाने जाते हैं ॥१२॥

नोट—कोयल और कौआ दोनों का रङ्ग एकसा होता है परन्तु कोयल केवल वसन्त ऋतु में बोलती है। जब उसका शब्द सुनते हैं तब ही मालूम करते हैं कि कौनसा कौआ है और कौनसा कोयल है।

दोषहि..........जौंक।

शब्दार्थ—दोषहि=बुराई को, अवगुण को। उमहै=प्रेमसे; इच्छा से। गहै=पकड़ता है। खल=(विशे०) दुष्ट। लोक=(सं० जा०) लोग, मनुष्य। रुधिर=(सं० जा०) लहू, रक्त। पय=(सं० जा०) दूध। पयोधर=(सं० जा०) थन।

गद्य—खल लोक दोषहि को उमहै गहै (पर) गुन न गहै। जोंक पयोधर लगी रुधिर पियै पय ना पियै।

पद्यार्थ—दुष्ट लोग बुराई को बड़े प्रेम से ग्रहण करते हैं परन्तु गुण को ग्रहण नहीं करते हैं। जैसे, जौंक थन से लगी हुई हो तो रक्त को पीती है परन्तु दूध को नहीं पीती है ॥१३॥

जाही..........पियास।

शब्दार्थ—आस=(सं० भा०) आशा, उम्मेद। सरवर=(सं० जा०) तालाब।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—जिस से कुछ प्राप्त हो उसी की आशा करनी चाहिए। जैसे, सूखे तालाब पर जाने से किसी की प्यास कैसे बुझ सकती है ॥१४॥

छोटे..........पायंदाज।

शब्दार्थ—नर=(सं० जा०) आदमी। शोभायुत=शोभायमान्। सिरताज=(सं० जा०) सरदार। चाँदनी=(सं० जा०) बिछौना, फ़र्श। पायंदाज=(सं० जा०) पाँव का बिछौना, पैर पोछने का कपड़ा।

गद्य—छोटे नर से सिरताज शोभायुत रहत हैं। जैसे पायंदाज चाँदनी निर्मल राखे।

पद्यार्थ—छोटे आदमियों से सरदारों की शोभा होती है। जैसे, पैर के पोंछने के कपड़े से चाँदनी साफ़ (स्वच्छ) रहती है ॥१५॥

(पृष्ठ [illegible])

प्रश्नोत्तर ।

प्र० १—अंतिम दो दोहों को शुद्ध गद्य में लिखो ।

उत्तर—ऊपर अर्थों के साथ लिखे हुए हैं ।

प्र० (२)—दिनेश, तिमिर, कण्टक, कुटिल, उदधि, पयोधर, सरवर—इन शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो । औगुन, उजेरो, बाँबी, सूधो, आर, डार, उनयो, यतन, मूरख, लोक—इन शब्दों के शुद्ध रूप लिखो ।

उत्तर—दिनेश से संसार प्रकाशित होता है ।

सूर्यदेव के अस्त होते ही तिमिर छा जाता है ।

गुलाब जैसे फूल में भी कण्टक मौजूद हैं ।

मोहन बड़ा कुटिल है ।

भारत पहले दूध का उदधि था ।

बच्चा उत्पन्न होने से पहले पयोधरों में ईश्वर दूध पैदा कर देता है ।

इस सरवर में पानी बहुत अधिक है ।

औगुन=अवगुण । उजेरा=उजेला । बाँबी=यह शुद्ध हिन्दी है। इसका संस्कृत रूप "वल्मीक" है । सूधो=सीधा । आर=आड़ । डार = डाल । उनयो = उमड़ा । यतन = यत्न । मूरख = मूर्ख । लोक=लोग ।

२९—महारानी कुन्ती की सज्जनता ।

(१)

(पृष्ठ [illegible])

दिल्ली=एक शहर का नाम है । यह भारतवर्ष की प्राचीन

काल में राजधानी थी और अब भी है। अवश्य=ज़रूर। प्रसिद्ध=(विशे०) मशहूर, विख्यात। प्राचीन=(विशे०) पुराना।

चचेरे भाई=(सं० जा०) चाचा के बेटे। ईर्ष्या=(सं० भा०) जलन, द्वेष। कष्ट=(सं० भा०) दुःख, तकलीफ़। वेश बदलकर=रूप छिपाकर।

(पृष्ठ १५२)

प्रातः काल=सुबह। नित्य=(अव्य०) रोज़। निर्वाह=गुज़ारा।

भयङ्कर=(विशे०) डरावना, ख़ौफ़नाक। राक्षस=(सं० जा०) असुर, निशाचर। ऊजड़=बरबाद। उपाय=(सं० भा०) यत्न।

सफलता=(सं० भा०) कामयाबी। ढूँढ़ने=तलाश करने। कष्ट=(सं० भा०) दुःख, तकलीफ़। बारी बारी से=क्रम से, एक एक। सुभीता=(सं० भा०) आसानी, सरलता। बेखटके=निडर।

२९—महारानी कुन्ती की सज्जनता।

(२)

(पृष्ठ १५३)

शेष=(विशे०) बाक़ी। भिक्षा=भीख। अकस्मात्=यकायक, अचानक। शब्द=(सं० भा०) आवाज़। रुदन=(सं० भा०) रोने। बिलबिला रहे हैँ=व्याकुल हो रहे हैँ, बिलख रहे हैँ।

हठ=(सं० भा०) ज़िद्द। स्वयं=खुद, आप। दुःख सागर=कष्टों का समुद्र, बहुत दुःख। निमग्न=डूबे हुए।

प्राणी=जीव। तड़प तड़प कर=तड़फड़ाकर।

(पृष्ठ १५४)

अतिथि=(सं० भा०) (अ+तिथि=तारीख़, दिन) जिसके आने

को तिथि न हो, मेहमान, पाहुना, आगन्तुक। कुटुम्बियों=(सं० जा०) खान्दान वालों, परिवार वालों।

सत्य=सच, सही। सहायता=(सं० भा०) मदद।

चित्त=(सं० भा०) मन, हृदय। स्वीकार=मंजूर।

वीरता=(सं० भा०) बहादुरी, पराक्रम। बखान=गुणगान। विश्वास=यक़ीन। धैर्य=(सं० भा०) धीरज।

२९—महारानी कुन्ती की सज्जनता।

(२)

महाबली=बहुत बलवान्। आज्ञा=(सं० भा०) हुक्म। राह=रास्ता, मार्ग। पराक्रमी=(विशे०) साहसी, योद्धा। युधिष्ठिर=(सं० व्यक्ति०) कुन्ती का ज्येष्ठ पुत्र, पाण्डवों का बड़ा भाई।

(पृष्ठ १५५)

समीप=(अव्यय) निकट, पास। वृत्तान्त=हाल, बयान। चिन्ता=(सं० भा०) सोच, फ़िक्र। उदासी=(सं० भा०) शोक। कुशल=मंगल, कल्याण।

उचित=योग्य। दृढ़=(विशे०) पक्का। परमेश्वर=ईश्वर।

(पृष्ठ १५६)

घायल=ज़ख़्मी। हर्ष=(सं० भा०) आनन्द। प्रशंसा=बड़ाई। प्रवीण=चतुर, होशियार। विक्रम = (सं० भा०) पराक्रम। ज्ञात=मालूम। चिन्तित=रंजीदा, दुखी। प्रहार= (सं० भा०) चोट, आघात। असुरों=दुष्ट, बुरे आचरण वाले। वध=मारना। युद्ध=(सं० भा०) लड़ाई। महाभारत=एक पुस्तक का नाम है जिसमें पाण्डवों और कौरवों के युद्ध का वर्णन है। रोमांचित=रोंगटे खड़े होना, पुलकित होना।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—महारानी कुन्ती अपने पाँचों पुत्रों को साथ लिये हुए ब्राह्मण की अतिथि क्यों हुई थी?

उत्तर—क्योंकि दुर्योधन अपने चचेरे भाई पाण्डवों से बड़ी ईर्षा रखता था। कौरवों के द्वारा कष्ट पाकर पाँचों पाण्डव अपनी माता कुन्ती को साथ लेकर वहाँ से चले गये वे भेष बदलकर घूमते फिरते इस ब्राह्मण के घर आकर अतिथि हुए।

प्र० (२)—ब्राह्मण पर कौनसी ऐसी विपत्ति आई थी कि उसके परिवार के सब लोग रो पीट रहे थे? महारानी कुन्ती ने उस विपत्ति से ब्राह्मण को कैसे बचाया?

उत्तर—उस नगर के निकट के जङ्गल में एक राक्षस रहता था वह आदमियों को जहाँ कहीं पाता खा लेता था मगर नगर निवासियों ने यह नियम राक्षस से मिलकर तय कर लिया था कि वारी वारी से राक्षस के पास एक आदमी आजाया करेगा अब के ब्राह्मण के घर की वारी थी इस कारण ब्राह्मण के सब घर वाले रोने पीटने लगे थे।

महारानी कुन्ती ने इस ब्राह्मण के बदले अपने सबसे बलवान् पुत्र भीमसेन को राक्षस के पास भेज कर उसके कष्ट को दूर किया। भीमसेन ने उस राक्षस को मारडाला और ब्राह्मण का ही दुःख दूर न किया बल्कि सारे नगर का कष्ट मिटा दिया।

३)—महारानी कुन्ती और युधिष्ठिर की बात चीत का सारांश लिखो।

उत्तर—जब युधिष्ठिर आदि भाई भिक्षा माँग कर लौटे तो कुन्ती ने भीमसेन को राक्षस के पास भेजने का सब हाल कह सुनाया यह सुनकर युधिष्ठिर बहुत चिंतित हुए और कहा कि भीमसेन को अकेला न भेजना चाहिए था तब महारानी कुन्ती ने कहा मैं उसके विक्रम को जानती हूँ, तुम चिन्ता न करो। जो दूसरों को सहायता करता है ईश्वर उसकी सहायता करता है। भीमसेन राक्षस को अवश्य मार आवेगा।

प्र० (४) महारानी कुन्ती के पुत्रों के नाम बताओ।

उत्तर—महारानी कुन्ती के पुत्रों के नाम क्रम से यह हैं:—
(१) युधिष्ठिर, (२) भीमसेन, (३) अर्जुन, (४) और माद्री से नकुल और (५) सहदेव।

(पृष्ठ १५७)

३०—सोने की थाली।

मठ चौक ·······चुनी।

शब्दार्थ—मठ=(सं० जा०) मन्दिर। चौक = आँगन। वाराणसी=(सं० व्य०) बनारस। अचरज=आश्चर्य से भरी हुई। शशिरूप=(शशि=चन्द्रमा+रूप) चन्द्रमा के से रूप वाली। अचानक=यकायक। नभ=आकाश। आकाश वाणी—वह शब्द जो आकाश से सुनाई दे मगर कहने वाला दिखाई न दे। सद्धर्मपालक=सच्चे धर्म का पालन करने वाला। भेंट=नज़र, अर्पण।

गद्य—वाराणसी के मठ चौक में एक दिन अचरज भरी शशिरूप स्वर्ण की थाली अचानक नभ से आगिरी। फिर

साथ ही मन्दिर में आकाशवाणी सुनो यह भेंट देवों की चुनी सद्धर्मपालक पायगा।

पद्यार्थ—बनारस के मन्दिर के चौक में एक दिन आश्चर्य से भरी हुई चन्द्रमा के से रूप वाली सोने की थाली अचानक आकाश से आगिरी और साथ ही मन्दिर में यह आकाश वाणी हुई कि यह भेंट जो देवताओं को चुनी हुई है सच्चे धर्म का पालन करने वाला ही व्यक्ति (मनुष्य) पायेगा ॥ १ ॥

आलोक········चलपड़े।

शब्दार्थ—आलोक=(सं० जा०) प्रकाश। दर्शक=(सं० भा०) देखने वाले। अनेकों=बहुत। हर्ष=(सं० भा०) खुशी, आनन्द। संवाद=ख़बर, सूचना।

गद्य—ख़बर आलोक सी भारतवर्ष में चहुँ ओर फैली अनेकों धर्म वाले दर्शक हर्ष में आने लगे। वहाँ निधनी, धनी, मूरख, गुणी, छोटे, बड़े, आये सुख नींद सोते साधु भी संवाद पाकर चल पड़े ॥२॥

पद्यार्थ—यह समाचार प्रकाश की तरह भारतवर्ष में चारों ओर फैल गया और धार्मिक दर्शक लोग आनन्द में आने लगे कङ्गाल, धनाढ्य, मूर्ख, गुणी और छोटे बड़े सब आने लगे और आनन्द की नींद में सोने वाले साधु भी इस समाचार को पाकर चल दिये ॥२॥

दौड़े········लेगई।

शब्दार्थ—निरी=(विशे०) केवल, सिर्फ़। कौतुक=तमाशा। विचरते=घूमते हुए। बाला=(सं० जा०) स्त्री। तृष्णा=लालच।

गद्य—कई धन के लिए, कोई निरी यश चाह में दौड़े कोई कौतुक भरे प्रकट राह में विचरते आये कई तन, बाल, बाला, भूमि छल के लिए भी पहुँचे। तृष्णा सभी को कुछ न कुछ आशा दिखाकर ले गई।

पद्यार्थ—कोई सज्जन तो धन के लिए, कोई केवल बड़ाई की इच्छा से वहाँ (बनारस) को दौड़े। कोई इस कौतुक को देखने के लिए राह में घूमते हुए आये। कितने ही शरीर बालक, स्त्री, भूमि को छलने के लिए भी पहुँचे, लालच सब को कुछ न कुछ आशा दिखला कर ले गया ॥३॥

अनुभव..........पल में हुई।

शब्दार्थ—अनुभव=तजरिबा, ज्ञान। निराशा=(सं० भा०) ना उम्मेदी। देनगी=भेंट, तोहफ़ा। चाव=शौक़। पल में=क्षण भर में।

गद्य—पुजारी ने स्वयं निराशा का अनुभव पाकर कहा कि जिसका महा पुण्य हो यह देनगी पा सकेगा तब दर्शकों में एक ने चाव से ज्यों थाली छुई त्यों वह पल में अँगुली के पास ही से राँग हुई।

पद्यार्थ—पुजारी ने स्वयं निराशा (ना उम्मेदी) का ज्ञान पाकर कहा कि जिसका बहुत अधिक पुण्य होगा वही इस देन (ईश्वरीय देन) को पा सकेगा। तब देखने वालों में से एक ने इच्छा से ज्यों हीं थाली छुई वैसे ही वह क्षण भर में अँगुली के पास ही से राँग की होगई ॥४॥

अवलोक.........भीति से।

शब्दार्थ—अवलोक=देखकर। कौतुक=(सं० भा०) कुतूहल, मेला। मद=(सं० भा०) घमंड। मिथ्या=(सं० भा०) झूठ। कलुष=(सं० भा०) पापी। कर=हाथ। परीक्षा=इम्तहान, जाँच। अघ=(सं० भा०) पाप। प्रकाशक=प्रकट होने से। भीति=डर, भय।

गद्य—यह नया कौतुक अवलोक सब मिथ्या मद, मोह घटा ज्योंहीं कलुष का कर हटा राँग का फिर सोना हुआ तो भी अनेकों ने अनेकों भाँति से परीक्षा की अघ की प्रकाशक भीति से सोन में कुछ भी न सकुचे।

पद्यार्थ—यह नवीन (नया) तमाशा देखकर सब झूँठा अहङ्कार और गर्व घट गया। ज्यों हीं पापी का हाथ हटा राँग का फिर सोना हो गया तब भी अनेकों ने बहुत तरह से जाँच की और पापों के प्रकट होने के भय से भी लोभ के कारण कुछ भी न शर्माये ॥५॥

(पृष्ठ १५८)

क्रमशः·········महा।

शब्दार्थ—क्रमशः=धीरे धीरे, क्रम पूर्वक। गूढ़=गुप्त। पातक=(सं० भा०) पाप। सु-वर्ण=(सु=अच्छे+वर्ण=अक्षर) सुन्दर अक्षर, विचित्र=(विशे०) अपूर्व, अनोखे। अघ=(सं० भा०) पाप। आवागवन=आना-जाना।

गद्य—क्रमशः सभी को निज गूढ़ पातक अचानक दिख गये। मन पर जन्मभर अघ के विचित्र सुवर्ण लिख गये बारह महीने तक यही आवागमन होता रहा पर एक भी ऐसा न निकला जिसका महा पुण्य हो।

पद्यार्थ—धीरे धीरे सब को अपने गुप्त पाप यकायक दिखाई दे गये और उनके हृदय पर जन्म भर के लिए पापों के विचित्र सुन्दर अक्षर लिख गये। एक वर्ष तक इसी प्रकार आवागमन होता रहा, मगर एक भी ऐसा न निकला जिस का महा पुण्य हो ॥ ६ ॥

विद्वान्·········यह जगी।

शब्दार्थ—कुलीन=अच्छे कुल का, श्रेष्ठ। तज=त्याग कर, छोड़कर। अभिमान=घमण्ड। अपमान=अनादर, बेइज़्ज़त। डगी=टली, हटी। प्रेरणा=आज्ञा, आदेश।

गद्य—विद्वान्, शूर, कुलीन, योगी आश तजि लज्जित फिरै, जैसे अभिमान में चढ़े वैसे अपमान में गिरे। जब कुछ

महीने थाली और भी निज थल से न डगी तब अचानक पुजारी के मन में यह प्रेरणा जगी।

पद्यार्थ—विद्वान् (पण्डित), योद्धा, सज्जन और योगी आशा को त्याग कर लज्जित होकर लौट दिये। जैसे वह अभिमान में बढ़ गये थे वैसा ही उन्हें अपमानित होना पड़ा जब कुछ महीने थाली और भी अपने स्थान से न हटी तब अचानक पुजारी के हृदय में यह बात आई॥ ७॥

सद्धर्म······लावें यहां।

शब्दार्थ—छल-छन्द=छल कपट, दग़ा, धोखा। कुविचार=(सं० भा०) बुरे विचार। अवकाश=फ़ुर्सत, मौक़ा। उपकार=भलाई। कर्त्तव्य=(सं० भा०) काम, फ़र्ज़।

गद्य—सद्धर्म पालक धन-यश का लोभ कभी नहीं करते। उनके हृदय में छल-छन्द के कुविचार नहीं भरते, उपकार के कर्त्तव्य से ऐसा अवकाश कहां है जो उन्हें हीरा जड़ी स्वर्ण थाली भी यहां लावें।

पद्यार्थ—जो सच्चे धर्म्म के पालन करने वाले हैं वे धन और यश (बड़ाई) का लालच कभी नहीं करते हैं और उनके हृदय में कपट के बुरे विचार नहीं आते हैं। भलाई के कार्य्य से ऐसा मौक़ा उनको कहां है जो उनको हीरा जड़ी हुई सोने की थाली यहां ले आवे॥ ८॥

यह सोच·······गई।

शब्दार्थ—निमन्त्रण=(सं० भा०) न्यौते। संवाद=(सं० भा०) समाचार, ख़बर। विख्यात=(विशे०) प्रसिद्ध, मशहूर। आ लसे=आगये। होड़=शर्त, देखा देखी।

गद्य—यह सोचकर पुजारी ने विनय से निमन्त्रण भेजे। संवाद पा कई विख्यात उपकारी जन आ लसे। मठद्वार पर जो

कई रोगी, दुःखी, कोढ़ी बसे थे, होड़ में उन पर बहुत सी स्वर्ण चाँदी फेंकी गई ।

पद्यार्थ—यह सोच कर पुजारी ने नम्रता पूर्वक न्यौते भेजे, तब समाचार पाकर कितने ही प्रसिद्ध परोपकारी मनुष्य वहाँ आ गये। मठ द्वार पर जितने भी रोगी, दुःखी और कोढ़ी पड़े हुए थे देखा देखी उनके ऊपर बहुत सोना चाँदी फेंका गया अर्थात् दिया गया ॥ ६ ॥

कौतुक········हुए ।

शब्दार्थ—विदित=प्रकट, ज़ाहिर ।

गद्य—ज्यों एक ने थाली छुई फिर पुराना कौतुक हुआ वह पहले राँग की हुई फिर मूल सोने की हुई इस भाँति सब विख्यात उपकारी दोषी विदित हुए। जिनके छूने से सोना राँग हो उन्हें सौ बार धिक है ।

पद्यार्थ—ज्योंहीं एक ने उस थाली को छुआ तो फिर वही पुराना तमाशा हुआ अर्थात् पहले वह थाली राँग की होगई फिर वह असली सोने की होगई। इस प्रकार सब प्रसिद्ध परोपकारी सज्जन दोषी प्रकट होगये जिनके छूने से सोना राँग हो जाय उनको सौ बार धिक्कार है ॥ १० ॥

(पृष्ठ १५६)

घटना········दान में ।

शब्दार्थ—विस्मित=(सं० भा०) आश्चर्य । करतब=काम । रसायन=कीमिया ।

गद्य—पुजारी फिर नई घटना लख हर्ष में विस्मित हुए, अब भारतवर्ष में कोई सत्य धर्मी नहीं रहा। दर्शक निराश में अभिमान में इधर बकने लगे स्वर्ग के इस दान में रसायन का करतब भरा है ।

पद्यार्थ—पुजारी फिर इस नई घटना को देखकर आनन्द में अचम्भित होगये और कहने लगे कि अब भारतवर्ष में कोई सच्चा धर्मात्मा नहीं रहा है। देखने वाले निराश होकर अभिमान में इधर उधर बकने लगे कि इस स्वर्ग में पुण्य में कीमिया का करतब भरा हुआ है॥ ११॥

बारह.........खलबली।

शब्दार्थ—धीरज=धैर्य्य। खलबली=(सं० भा०) घबड़ाहट।

गद्य—और भी विख्यात जन बारह महीने आये गये सब के संग में पुराने कौतुक फिर फिर नये हुए। जब तीसरा वर्ष बीता तब सकल आशा घट चली, धीरज गया, लज्जा बढ़ी फिर घर की खलबली मची।

पद्यार्थ—और भी बहुत से प्रसिद्ध मनुष्य सालभर तक आते रहे और सब के साथ में वही पुराने कौतुक (सोने का रांग और रांग का सोना) बार बार नये हुए। जब तीसरा वर्ष समाप्त हो गया तब तमाम आशाएँ घट गईं और धीरज जाता रहा। शर्म बढ़ने लगी। फिर सबको घर की घबड़ाहट होने लगी अर्थात् घर की चिन्ता होने लगी॥ १२॥

अन्तिम.........भर गया।

शब्दार्थ—कारागार=(सं० भा०) जेल, कैदखाना। अवलोक =देखकर।

गद्य—अन्तिम दिन अति दीन सा एक जन वहां आया जो तब तक कठिन कारागार में पिस रहा था रोगी, दुःखी कोढ़ी अवलोक नदी सी दया उमड़ी। प्रेम जल में नैन-तट डूबे, सब का हृदय प्रेम से भर गया।

पद्यार्थ—आखीरी दिन बहुत ही गरीब सा एक आदमी वहां आया जो कि अब तक कठिन जेल में कष्ट पा रहा था।

रोगी, दुःखी और कोढ़ियों को देख कर उसके हृदय में नदी के समान दया पैदा हुई और प्रेम जल (आँसुओं) से नेत्र डूब गये यह देख कर सबका हृदय दया से भर गया ॥ १३ ॥

सेवा.........लेयगा।

शब्दार्थ—उचित=(विशे०) योग्य। विधाता=ब्रह्मा, ईश्वर।

गद्य—उसने प्रेम से रोगियों की उचित सेवा कर कहा, हे भाइयो! तुम मठ पास भी महा दुःख सह रहे हो, पर जिस विधाता ने दुःख दिया है, वही सुख देयगा ऐसा दूसरा कौन है जो दीन की सुधि लेयगा।

पद्यार्थ—उसने प्रेम से रोगियों की योग्य सेवा करके कहा, हे भाइयो! तुम मठ के पास रहते हुए भी बहुत कष्ट उठा रहे हो, परन्तु जिस ईश्वर ने दुःख दिया है वही ईश्वर तुमको सुख भी देगा ऐसा दूसरा कौन है जो ग़रीबों की सुधि लेगा अर्थात् ईश्वर के सिवाय और कोई नहीं है ॥ १४ ॥

फिर.........मुझ को बना।

शब्दार्थ—निहोरा=एहसान, कृतज्ञता। लोचन=(सं० जा०) नेत्र, आँख। प्रार्थना= सं० भा०) विनती।

गद्य—जिस भगवान् ने उसे दुःख दिखाकर फिर सुख दिया था वह उसका निहोरा मानने प्रेम से मठ में गया उसने कर जोड़, लोचन मूँद हृदय से प्रार्थना की हे नाथ! मैं तेरी शरण हूँ मुझको निज दास बना।

पद्यार्थ—जिस भगवान् ने उसे दुःख दिखाकर फिर सुख दिया है वह उस (ईश्वर) का निहोरा (कृतज्ञता) स्वीकार करने के लिए प्रेम से मठ में गया उसने हाथ जोड़ कर नेत्र मूँद कर हृदय से प्रार्थना की हे नाथ! मैं तेरी शरण हूँ मुझे अपना सेवक बना लीजिये ॥ १५ ॥

(पृष्ठ १६०)

फिर.........दुःख सहूँ।

शब्दार्थ—दण्डवत=प्रणाम। प्रेम पूर्ण=प्रेम से भरा हुआ। अवस्था=(सं० भा०) हालत, दशा।

गद्य—फिर वह कुछ काल दण्डवत पर दण्डवत करता रहा। उसके हृदय का प्रेम पूरण कुछ नहीं कहा जाता है। मन चाहता था मैं यहीं ऐसी अवस्था में रहूँ इन रोगियों का कष्ट मेटूँ, आप उनका दुःख सहूँ।

पद्यार्थ—फिर उसने कुछ देर तक प्रणाम पर प्रणाम किये। उसके हृदय का पूर्ण प्रेम कुछ नहीं कहा जा सकता है। उसका मन यही चाहता था कि मैं यहाँ पर ऐसी ही दशा में रहूँ और इन रोगियों के दुःख को दूर करूँ और स्वयम् उनके कष्टों को सहन करूँ॥ १६॥

जब.........पास हो।

शब्दार्थ—विवश=लाचार। भाव=(सं० भा०) विचार।

गद्य—जब वह किसी के उठाने पर विवश हो जाने लगा तब फिर अचानक पुजारी के मन में यह भाव जगा अचरज नहीं यह दीन प्रभु का कोई गुप्त दास हो ज्यों कई धनी दिखते हैं मानो पास पैसा न हो।

पद्यार्थ—जब वह किसी के उठाने से लाचार होकर जाने लगा। तब फिर यकायक पुजारी के हृदय में यह विचार आया कि कुछ आश्चर्य नहीं है कि यह दीन भगवान् का कोई छिपा हुआ दास (भक्त) हो जैसे बहुत से धनाढ्य ऐसे प्रतीत होते हैं मानों उनके पास एक पैसा भी नहीं है॥ १७॥

यह.........शंका बड़ी।

शब्दार्थ—चकित=अचम्भा। शंका=सन्देह, डर।

गद्य—यह सोचकर पुजारी ने उसको वहीं लौटा लिया, फिर प्रेम से बोला प्रभु ने तुम्हें यह दान दिया है। वह स्वर्ण थाली भारी भीड़ के भीतर देख डरसा गया चकित होकर मन में बड़ी शंका हुई।

पद्यार्थ—यह सोचकर पुजारी ने उसको वहीं पर रोक लिया और प्रेम से बोला कि भगवान् ने यह दान तुमको दिया है वह उस सोने को थाली को भारी भीड़ के भीतर पड़ी हुई देखकर डरसा गया और वह आश्चर्य में पड़कर शंका करने लगा॥१८॥

उसको.........दानका।

शब्दार्थ—सखा=मित्र, दोस्त। लखा=देखा। अंश=भाग। आदर=(सं० भा०) सत्कार।

गद्य—उसको अचञ्चल देख फिर पुजारी बोला हे सखा! क्या तुमने भगवान् का दिया यह दान अब तक नहीं लखा। भगवान् की जो वस्तु है वह भगवान् का अंश है यह जान शंका त्याग तुम इस दान का आदर करो।

पद्यार्थ—उसको अटल देख कर फिर पुजारी ने कहा; हे मित्र! क्या आपने ईश्वर के दिये हुए इस दान को अब तक नहीं देखा है। ईश्वर की जो वस्तु है उस में ईश्वर का ही अंश होता है ऐसा जानकर सन्देह को त्यागकर आप इस दान का सत्कार कीजिये॥१०॥

थाली.........सामने।

शब्दार्थ—कलङ्की=(सं० भा०) दोषी। कोलाहल=(सं० भा०) शोर, कौतूहल। धर्मज्ञ=धर्म का जानने वाला, धर्मात्मा। काशीराज=काशी का राजा। सत्पात्र=अच्छा आदमी। पात्र=(सं० भा०) वर्तन (थाली)।

गद्य—झिझकते काँपते कलङ्की ने कर से थाली छुई कोलाहल मचगया जब उस में चौगुनी चमक हुई। संवाद पा धर्मज्ञ

काशीराज ने वहां आकर सबके सामने वह पात्र सत्पात्र हर्षित दिया ।

पद्यार्थ—झिझकते और काँपते हुए उस कलङ्की ने हाथ से स्पर्श की। बहुत कोलाहल (शोर) हुआ जबकि उस थाली में चौगुनी चमक होगई यह समाचार पाकर धर्मात्मा काशी के राजा ने वहाँ आकर सबके सामने वह वर्तन (थाली) उस योग्यपात्र को खुश होकर दी ॥२०॥

(पृष्ठ १६१)

पीछे.........कारागार में।

शब्दार्थ—सत्यवादी=(विशे०) सच बोलने वाला। कृषक= किसान। ग्रामपति=(सं० जा०) (ग्राम=गाँव+पति=स्वामी) ज़मींदार। अत्याचार=(सं० भा०) अन्याय, जुल्म।

गद्य—यह भेद पीछे खुला वह सत्यवादी जन कृषक था सदा अति प्रेम से हरि की कथा सुनता सुनाता था जब वह अत्याचार में ग्रामपति का साथी न हुआ तब नौमास चौगुने कठिन कारागार में कौटे।

पद्यार्थ—यह भेद पीछे मालूम हुआ कि वह सच बोलने वाला मनुष्य किसान था वह नित्य बहुत प्रेम से ईश्वर की कथा को सुनता था और सुनाता था। जब वह अन्याय में ज़मींदार का साथी न हुआ तो उस (ज़मींदार) ने नौ के चौगुने महीने (तीन साल) के लिए कठिन जेल में भिजवा दिया था तब उसे तीन साल कठिन जेल में रहना पड़ा था ॥२१॥

प्रश्नोत्तर

प्र० (१)—इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर—जो मनुष्य सच्चे हृदय से ईश्वर की भक्ति करते हैं और अपने धर्म और कर्तव्य का पालन करते हैं। वही

सत्पुरुष संसार में सन्मान पाते हैं चाहे वह ग़रीब हों चाहे अमीर, नीच जाति के हों अथवा कुलीन ख़ान्दान के हों।

प्र० (२)—शशि-रूप और सद्धर्मपालक में कौन समास हैं? आलोक, अवलोक, कलुष, अघ, प्रकाशक, आवागवन, प्रेरणा, विख्यात, विस्मृत शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो। विख्यात, विस्मृत, प्रकाशक शब्दों की व्युत्पत्ति बतलाओ।

उत्तर—शशि-रूप=कर्मधारय समास क्योंकि उपमेय और उपमा मिलकर कर्मधारय समास होता है। सद्धर्मपालक= तत्पुरुष समास क्योंकि सम्बन्ध और सम्बन्धवान् मिल-कर तत्पुरुष समास होता है।

यह समाचार आलोक की तरह संसार में फैल गया। मैं उसकी दशा को अवलोक कर अचम्भित हो गया वह बड़ा ही कलुष है। हिंसा करना बड़ा पाप है।

चक्रवर्त्ती अरिथमेटिक के प्रकाशक पी० सी० द्वादश श्रेणी ऐण्ड को हैं।

सच्चे परोपकारी मनुष्य आवागमन से मुक्त रहते हैं। पिता की प्रेरणा से रामचन्द्रजी वन को चले गये।

हिसाब में चक्रवर्त्ती अरिथमेटिक खूब विख्यात है मुझे आप की बात विस्मृत हो गई।

विख्यात=(वि=बहुत+ख्यात=प्रसिद्ध) यशस्वी।

विस्मृत=(वि=नहीं+स्मृ=याद रहना+त=प्रत्यय) भूलना।

प्रकाशक=(प्र=बहुत+काश=चमकना+क=करने वाला) प्रकाश करने वाला, रोशन करने वाला।

३१—मक्खियाँ।

विकट=(विशे०) भयानक। प्रशंसा=(सं० भा०) तारीफ़। विरला=कोई। स्पष्ट=(सं० भा०) साफ़। हानिकारक=हानि पहुँचाने वाली। मधुमक्खी=शहद की मक्खी। बुद्धि=अक्ल। बुद्धि हीन=बे अक्ल। वृत्तान्त=हाल। आनन्द दायक=आनन्द देने वाला।

(पृष्ठ १६२)

दुष्ट=(विशे०) खोटे। अध्ययन=पढ़ना। उत्पातों=झगड़ा उपद्रव। आवश्यक=ज़रूरी।

वंरन्तु=(विशे०) वर की। स्वागत=सत्कार, आदर। उपस्थित=मौजूद, हाज़िर। विशेषकर=ख़ास कर। ग्रीष्म=(सं० भा०) गर्मी। मान न मान मैं तेरा महमान=बिना पूछे ज़बरदस्ती किसी घर में घुस बैठना। कहावत=(सं० भा०) लोकोक्ति। चरितार्थ=ठीक करने हुए। दुग्ध=(सं० भा०) दूध। पान=पानी। स्वाद=(सं० भा०) ज़ायक़ा। अर्पण=भेट। अतिथि=(सं० भा०) महमान। दुतकार=फटकार। चिन्ता=(सं० भा०) रंज, फ़िक्र। भय=(सं० भा०) डर। अप्रिय=(विशे०) बुरा। दूषित=(विशे०) ख़राब, बिगड़ा हुआ।

निर्दोष=दोष रहित।

(पृष्ठ १६३)

यथार्थ में=वास्तव में। जननी=(सं० भा०) माता, पैदा करने वाली। गन्दी=ख़राब। वस्तुओं=(सं० भा०) चीज़ें। रुचि=(सं० भा०) इच्छा। कण=छोटे छोटे टुकड़े। युक्त=सहित। रोगियों=(सं० भा०) बीमारों। आलिच्छिन्न=(विशे०) (आल= नहीं+छिन्न=चाही हुई) ये चाही हुई। कीटाणुओं=(सं० भा०) छोटे छोटे कीड़े। चङ्गे=(विशे०) नीरोग, तन्दुरुस्त। रोग=

बीमारी। संक्रामक=(विशे०) घूमने वाले। स्वच्छ=(विशे०) साफ़। प्रबन्ध=बन्दोवस्त, इन्तज़ाम।

(पृष्ठ १६४)

आयु=(सं०भा०) उम्र, अवस्था। अवधि=(सं० भा०) समय। हिंसक=(विशे०) मारखाने वाले। चंगुल में=पंजे में। यमराज= मृत्यु के देवता। मादा=स्त्री मक्खी। दिनचर्या=दिनभर के काम। समाप्त=खतम। सामग्री=(सं० जा०) सामान। शीत= (विशे०) जाड़ा। प्रत्येक=हर एक। बृहत्प्रदर्शक=(सं० जा०) (बृहत्=बड़ा+दर्शक=देखने वाला) खुर्दबीन, एक यन्त्र जिस से छोटी चीज़ बड़ी दीखती है। उपरान्त=पीछे।

(पृष्ठ १६५)

तूफ़ान=आँधी। शरण=रक्षा, पनाह। रक्त=(सं० जा०) खून, लहू। विष=ज़हर। कदाचित=शायद। अनुचित=अयोग्य। मस्तक=माथा। अतिरिक्त=सिवाय। सदृश=समान, बराबर।

(पृष्ठ १६६)

तथापि=तो भी। अजीब=अनोखे, अपूर्व। स्वच्छ=साफ़। श्रृङ्गार=शोभा, सजाना। रुचि=चाह, इच्छा। अद्भुत =(विशे०) अपूर्व। शक्ति=(सं० भा०) ताक़त। सुगमता=(सं० भा०) आसानी, सरलता। अवलोकन=देखना।

(पृष्ठ १६७)

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—मक्खियाँ से क्या क्या हानियाँ हो सकती हैं? उनसे बचने का क्या उपाय है?

उत्तर—यह जीव सबसे भयङ्कर और अनेक रोगों की जननी है क्योंकि इनकी आदत गन्दी वस्तु पर बैठने की होती है और हमारे खाने पीने की वस्तुओं को खराब कर देती

है। ये बीमार आदमियों के पास से रोग के कीटाणुओं को लाकर नीरोग आदमी में रोग उत्पन्न कर देती हैं ऐसे ही कीड़ों से संक्रामक रोग एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य तक पहुँच जाते हैं। इनसे बचने का उपाय यह है कि खाने की वस्तुओं को ढक कर रखना चाहिए और घर जितना ही अधिक स्वच्छ हो उतना ही अच्छा है।

प्र० (२)—किसी मक्खी को देखकर उसका देह गठन बताओ।

उत्तर—हर मक्खी के एक लम्बी सूँड होती है। उसके दो पङ्ख होते हैं। उसकी गर्दन धागे के समान पतली और छोटी होती है। उसके छोटे और पतले पैर होते हैं।

प्र० (३)—मान न मान मैं तेरा मेहमान इसका क्या अर्थ है? विरला, उत्पात, अतिथि, चरितार्थ, अर्पण, अनिच्छित, संक्रामक, यमराज, दिनचर्या शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो। चरितार्थ और अनिच्छित शब्द कैसे बने ?

उत्तर—किसी के यहाँ ज़बरदस्ती आना।

कोई विरला ही मास्टर होगा जिसने चक्रवर्ती अर्थमेटिक न देखी हो।

बन्दर बड़ा उत्पात मचाते हैं।

भारतवासी पहिले अतिथि सेवा खूब करते थे।

यह कहावत तुम पर चरितार्थ होती है।

मैंने अपना जीवन देश के अर्पण कर दिया है।

तम्बाकू अनिच्छित वस्तु है।

यह मक्खियाँ संक्रामक रोगों की जड़ हैं।

मृत्यु के पश्चात् प्रत्येक मनुष्य को यमराज के सम्मुख जाना पड़ता है।

आपकी दिनचर्य्या क्या है ?

चरितार्थ=(चरित+अर्थ)। अनिच्छित=(अन्+इच्छित)।

३२—कबीर के दोहे।

जो .... तिरशूल।

शब्दार्थ—वाको=उसको। तिरशूल=(सं० जा०) तीन नोंक का काँटा।

गद्य—जो तोकूँ काँटा बुबे तू वाहि फूल बोइ तोकौं फूल के फूल हैं वाको तिरशूल है।

पद्यार्थ—जो तेरे लिए काँटा बोवे अर्थात् बुराई करे तू उस के लिए फूल बो, अर्थात् भलाई कर क्योंकि तेरे लिए तो फूल के फूल हैं और उसके लिए तीन नोंक का काँटा है॥ १॥

भावार्थ—जो जैसा करता है उसको वैसा ही फल मिलता है, अतः भलाई करना चाहिए।

(पृष्ठ १६८)

जिन .... बैठ।

शब्दार्थ—खोजा=ढूँढ़ा। पैठ=घुसकर। बौरी=पागल, बावली।

गद्य—गहरे पानी पैठ जिन खोजा तिन पाइयां हौं बौरी ढूँढ़न गई किनारे बैठ रही।

पद्यार्थ—गहरे पानी में घुसकर जिसने ढूँढ़ा उसको मिल गया मैं बावली ढूँढ़ने को गई मगर किनारे पर बैठी रही॥ २॥

भावार्थ—परिश्रम का फल मिलता है।

बालू .... चूप।

शब्दार्थ—करकरी=(वि०) किसकिसी। उज्ज्वल=साफ़।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—बालू के समान कोई किसकिसी और धूप के समान साफ़ कोई वस्तु नहीं है और जैसी मीठी चुप है ऐसी मीठी कोई वस्तु नहीं है ॥ ३॥

द्वार............जाइ।

शब्दार्थ—निवाजहीं=पालन करेगा। दर=दरवाज़ा।

गद्य—धनी का धका खाई। धनी के द्वार परि रहे जो दर छोड़ न जाइ धनी कबहुँ निवाजहीं।

पद्यार्थ—धनवान् के धक्के खाकर भी उसके दरवाज़े पर पड़ा रहना चाहिए क्योंकि अगर तुम दरवाज़ा छोड़ कर नहीं गये तो वह अवश्य तुम्हारी ख़बर लेगा ॥ ४॥

मेरा............मोर।

शब्दार्थ—तोर=तेरा। मोर=मेरा।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—मेरा मुझको कुछ नहीं है जो कुछ है सब तेरा ही है। फिर मुझे तेरा तुझ को देने में मेरा क्या लगता है अर्थात् कुछ नहीं ॥५॥

दुरबल............जाय।

शब्दार्थ—दुरबल=(सं० जा०) कमज़ोर। मोटी=बुरी। मुई=मरी। सार=(सं० जा०) लोहा। भसम=नष्ट।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—निर्बल को कभी नहीं सताना चाहिए, क्योंकि उसकी हाय बहुत बुरी होती है। जैसे, मरी हुई खाल की साँस से लोहा नष्ट हो जाता है ॥६॥

या............पैंठ।

शब्दार्थ—ऐंठ=(सं० मा०) घमण्ड, गुरूर, पैंठ=बाज़ार।

गद्य—या दुनिया में आइके तू ऐंठ छोड़ दे लेना है सो ले-इले पैंठ उठी जात है।

पद्यार्थ—इस संसार में आकर तू घमण्ड करना छोड़ दे और जो कुछ लेना है वह जल्दी ले ले वरना बाज़ार उठ जायगा अर्थात् तू मर जायगा ॥७॥

भावार्थ—जीवन क्षणिक है।

ऐसो............होय।

शब्दार्थ—बानी (सं० भा०) वाणी, बात। आपा=घमण्ड। औरन=दूसरों। शीतल=(सं० भा०) ठण्डा।

गद्य—मनका आपा खोय ऐसी बानी बोलिये औरन को शीतल करे आपौ शीतल होय।

पद्यार्थ—मन का घमण्ड दूर करके ऐसी बात करनी चाहिए जो दूसरों को शीतल (प्रसन्न) करे और आपको भी प्रसन्न करे ॥८॥

भावार्थ—सत्य और प्रिय बोलना चाहिए।

माटी............तोय।

शब्दार्थ—रूँधे=खूँदे।

गद्य—माटी कुम्हार सौं कहे तू मोहि क्या रूँधे इक दिन ऐसा होइगा मैं तोय रूँधूँगी।

पद्यार्थ—मिट्टी कुम्हार से कहती है कि तू मुझे क्या खूँदता है, एक दिन ऐसा भी आवेगा कि मैं तुझे खूँदूँगी ॥९॥

जहाँ............आप।

शब्दार्थ—दया=(सं० भा०) रहम। लोभ=(सं० भा०) लालच। क्रोध=(सं० भा०) ग़ुस्सा, रिस। आप=ईश्वर।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—जहां दया है वहाँ धर्म्म है जहाँ लालच है वहां पाप है और जिस जगह क्रोध है वहाँ मृत्यु है और जहाँ क्षमा है, वहाँ स्वयं ईश्वर मौजूद हैं ॥१०॥

सांचे ....हानि।

शब्दार्थ—मूरी=मूल, असल।

गद्य—अपने दिल में जानि सांचे सौदा कीजिये। सांचे हीरा पाइये झूठे मूरी हानि।

पद्यार्थ—अपने हृदय में जानकर सच्चा सौदा करना चाहिए क्योंकि सच्चे वाले हीरा (लाभ) पाते हैं मगर झूठ वाले असल को भी हानि उठाते हैं ॥११॥

(पृष्ठ १६६)

सांच........आप।

शब्दार्थ—तप=(सं० भा०) तपस्या। भीतर=(अन्य०) अन्दर (हृदय)। आप=ईश्वर।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—सत्य के बराबर तो कोई तपस्या नहीं है और झूठ के बराबर कोई पाप नहीं है। जिसके हृदय में सत्यता है उसके हृदय में आप ईश्वर मौजूद है ॥१२॥

सांचे........नसाइ।

शब्दार्थ—स्राप=(शाप) बद्दुआ। नसाइ=नाशैं।

गद्य-सरल है।

पद्यार्थ-सत्य बोलने वाले को कभी बद्दुआ (शाप) नहीं लगता है और न उसे काल खा सकता है। यदि सत्य बोलने वाला सदा सचाई पर चलता है तो उसका नष्ट क्या होता है अर्थात् कुछ नहीं ॥१३॥

शील रत्न........आन।

शब्दार्थ—सम्पदा=(सं० आ०) दौलत, धन।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—शीलता का रत्न सब से बड़ा है और यह सब रत्नों

की खानि है अर्थात् इसी से सब रत्न पैदा होते हैं तीनों लोकों की सम्पत्ति इस एक शील में भरी हुई है ॥१४॥

गोधन·········समान।

शब्दार्थ—गोधन=गाय का धन। गज=(सं० जा०) हाथी। वाजि=घोड़ा। संतोष=(सं० भा०) सब्र।

गद्य—गोधन, गजधन, वाजिधन, सब रत्न, धन खान जब संतोष धन आवै सब धन धूरि समान।

पद्यार्थ—गाय का धन, हाथी का धन, घोड़ों का धन सब रत्न और धन की खान जो ये हैं वह एक संतोष रूपी धन आने पर धूल के समान मालूम होने लगते हैं ॥१५॥

जहाँ·········आप।

शब्दार्थ—(आपा= सं० भा०) घमण्ड। आपदा=(सं० भा०) दुःख, आपत्ति। शोक=(सं० भा०) रंज। दृढ़ता=(सं० भा०) मज़बूती।

गद्य—सरल है।

पद्यार्थ—जहाँ घमण्ड है वहाँ पर आपत्ति है जहाँ रञ्ज है वहाँ पर पाप है जिस जगह दया है वहाँ पर दृढ़ता है और जहाँ पर क्षमा है वहाँ पर स्वयं ईश्वर मौजूद है।

प्रश्नोत्तर।

प्र० (१)—तिरसूल, चूप, साँप, भसम, बानी, स्राप शब्दों के शुद्ध रूप लिखो।

उत्तर—

शब्द	शुद्ध
तिरसूल	त्रिशूल।
चूप	चुप।
साँस	श्वास।
भसम	भस्म।
वानी	वाणी।
स्राप	शाप।

प्र० (३)—अन्तिम दोहे में आपा और आप शब्दों का क्या अर्थ है?

उत्तर—आपा = घमण्ड।
आप = ईश्वर।

३३—वर्षा और शरद।

अन्तर्गत कथा—जब सीता जी को रावण पञ्चवटी से चुरा कर लेगया था। तब रामचन्द्रजी सीताजी को ढूँढते हुये ऋष्यमूक पहाड़ पर पहुँचे तो वहाँ पर हनूमानजी द्वारा अग्नि को साक्षी देकर सुग्रीव से मित्रता हुई। रामचन्द्रजी ने बालिको मारकर सुग्रीव को किष्किन्धा पुरीका राज्य दिया और आप पहाड़ पर ही रहने लगे। उसी समय वर्षा ऋतु आगई। इस के समाप्त होते ही शरद् ऋतु आगई। उसका वर्णन रामायण में किया गया है।

वर्षा·········सुहाये।

शब्दार्थ—मेघ = (सं० ना०) बादल। नभ = आकाश। सुहाये=शोभायमान हुए।

गद्य—वर्षा काल मेघ नभ छाये गरजत परम सुहाये लागत।

पद्यार्थ—वर्षा ऋतु में बादल आकाश में छाये हुए गरजने में बहुत शोभायमान लगते हैं।

दामिनि·········नाहिं।

शब्दार्थ—दामिनि=(सं० ना०) बिजली। दमकि=चमकना। घन=(सं० ना०) बादल। यथा=जैसे। थिर=क़ायम।

गद्य—दामिनि घन माहीं दमकि रही यथा खल की प्रीति थिर नाहीं।

पद्यार्थ—बिजली बादलों में ऐसे चमक रही है जैसे, दुष्ट मनुष्य की प्रीति स्थिर नहीं रहती है।

वर्षहिं·······पाये।

शब्दार्थ—जलद=(सं० भा०) (जल+द=देने वाले) बादल। नियराये=पास आकर। नवहिं=नवते हैं। बुध=(सं० जा०) बुद्धिमान्।

गद्य—जलद भूमि नियराये वर्षहिं, यथा बुध विद्या पाये नवहिं।

पदार्थ—बादल पृथ्वी के निकट आकर बर्षते हैं। जैसे, बुद्धिमान् लोग विद्या को पाकर नवते हैं।

(पृष्ठ १७०)

बुन्द·······जैसे।

शब्दार्थ—अघात=(सं० भा०) चोट। गिरि=(सं० जा०) पहाड़। संत=(सं० जा०) साधु, सज्जन पुरुष।

गद्य—गिरि बुन्द अघात कैसे सहैं। जैसे, संत खल के वचन सह।

पदार्थ—पहाड़ बूंदों की चोट किस प्रकार सहते हैं। जैसे, सज्जन पुरुष दुष्ट मनुष्यों के वचनों को सहते हैं।

क्षुद्र·······बौराई।

शब्दार्थ—क्षुद्र=(विशे०) छोटी। बौराई=बावला होकर।

गद्य—क्षुद्र नदी भरि उतराई चलि। जस खल थोरेहि धन बौराई।

पदार्थ—छोटी नदियाँ भर कर इस प्रकार इतरा कर चलती हैं। जैसे, दुष्ट थोड़े धन को पाकर पागल हो जाता है।

भूमि·······लपटानी।

शब्दार्थ—भा=हुआ। डावर=(विशे०) मटमैला। माया=मोह, संसारी प्रेम।

गद्य—पानी भूमि परत डाबर भा। जिमि जीवहिं माया लपटानी।

पद्यार्थ—पानी पृथ्वी पर गिरते ही इस प्रकार से मैला हो जाता है। जैसे, प्राणी पैदा होते ही सांसारिक प्रेम (मोह) में फँस जाता है।

सिमिट.........आवा।

शब्दार्थ—सिमिट सिमिट=इकट्ठा होकर। सद् गुण=अच्छे गुण।

गद्य—जल सिमिट सिमिट तलावा भरहिं। जिमि सद् गुण सज्जन पहँ आवा।

पद्यार्थ—पानी इकट्ठा हो होकर तालाबों में इस प्रकार भर गया जिस प्रकार अच्छे गुण सत्पुरुषों पर आते हैं।

सरिता.........पाई।

शब्दार्थ—सरिता=(सं० जा०) नदी। जलनिधि=समुद्र। अचल=अटल।

गद्य—सरिता जल जल-निधि में जाई अचल होय जिमि हरिजन पाई।

पद्यार्थ—नदियों का पानी समुद्र में जाकर इस प्रकार अचल (स्थिर) हो जाता है। जैसे, ईश्वर भक्त ईश्वर को पाकर अचल हो जाता है।

हरित.........सद्ग्रन्थ।

शब्दार्थ—हरित=(विशे०) हरियाली। तृण=(सं० जा०) तिनका। संकुलित=भरी हुई। पंथ=(सं० जा०) रास्ता; मार्ग। विवाद=बहस। लुप्त=गायब, छिपना। सद्ग्रंथ=अच्छी पुस्तकें।

गद्य—भूमि हरित तृण संकुलित पंथ समझ नहिं परें। जिमि पाखण्ड विवाद तें सद्ग्रन्थ लुप्त होंहि।

पद्यार्थ—पृथ्वी हरे तिनकों से भरी हुई है जिस कारण से रास्ता दिखाई नहीं पड़ता है। जैसे, पाखण्डियों की बहस से अच्छे ग्रन्थ लुप्त हो जाते हैं।

दादुर .... समुदाई।

शब्दार्थ—दादुर=(सं० जा०) मेंढ़क। धुनि=(सं० भा०) शब्द। बटु=(सं० जा०) विद्यार्थी। समुदाई=झुण्ड।

गद्य—दादुर धुनि चहुँ ओर सुहाई जनु बटु समुदाई वेद पढ़हिं।

पद्यार्थ—मेंढ़कों का शब्द चारों ओर, ऐसा शोभायमान लग रहा है मानों विद्यार्थियों का समूह वेद पढ़ रहा हो।

नव .... विवेका।

शब्दार्थ—नव=(विशे०) नये। पल्लव=पत्ते। विटप=(सं०-जा०) वृक्ष, पेड़। विवेका=(सं० भा०) ज्ञान।

गद्य—अनेका विटप नव पल्लव भे। जस साधु के मन में विवेक होय।

पद्यार्थ—वहुत से वृक्ष नये पत्ते के ऐसे होगये हैं जैसे साधु के मन में ज्ञान पैदा होजाता है।

अर्क .... गयेऊ।

शब्दार्थ—अर्क=(सं० जा०) आक। पात=(सं० जा०) पत्ते। सुराज=अच्छा राज्य। उद्यम=रोज़गार, व्यापार।

गद्य—अर्क जवास बिन पात भयऊ जिमि सुराज खल उद्यम गयऊ।

पद्यार्थ—आक और जवासे बिना पत्तों के इस प्रकार हो गये। जैसे, अच्छे राज्य में दुष्ट मनुष्यों का रोज़गार मिट जाता है।

खोजत .... दूरी।

शब्दार्थ—पन्थ=(सं० जा०) रास्ता। धूरी=रेत।

गद्य—खोजत पंथ धूरी नहि मिलै। जिमि क्रोध धर्महिं दूरि करै।

पद्यार्थ—ढूँढ़ने से रास्ते में धूलि नहीं मिलती है। जैसे, क्रोध धर्म को दूर कर देता है।

सस ………जैसी।

शब्दार्थ—सस=(सं० जा०) अनाज। सम्पन्न=(विशे०) भरी हुई। महि=पृथ्वी उपकारी=(सं० जा०) भलाई करने वाला।

गद्य—महि सस सम्पन्न कैसी सोह। जैसी उपकारी की सम्पत्ति।

पद्यार्थ—पृथ्वी अनाज से भरी हुई किस प्रकार शोभायमान लग रही है। जैसे, उपकार करने वाले की सम्पत्ति शोभायमान लगती है।

निशि ………समाजा।

शब्दार्थ—निशि=(सं० भा०) रात। तम=(विशे०) अंधेरी। खद्योत= (सं० जा०) पटबीजना। बिराजा=(क्रि०) शोभायमान दम्भिन=(सं० जा०) पाखण्डी। जुरा=लगा। समाजा=सभा।

गद्य—तम निशि खद्योत बन बिराजा जनु दम्भिन कर समाजा जुरा।

पद्यार्थ—अंधेरी रात में पटबीजना (जुगनू) आकाश में कैसा अच्छा लगता है मानो पाखण्डियों की सभा लगी हुई हो।

महा वृष्टि ………नारी।

शब्दार्थ—वृष्टि=वर्षा। स्वतंत्र=(सं० भा०) आज़ाद। नारी=(सं० जा०) स्त्री।

गद्य—महा वृष्टि क्यारी फूटि चलि। जिमि स्वतन्त्र होइ नारी बिगरहि।

पद्यार्थ—अधिक वर्षा से क्यारी फूट कर ऐसे बहती है जैसे, स्वतन्त्र होकर स्त्री बिगड़ती है।

कृषी ········ माना।

शब्दार्थ—कृषी=खेती। चतुर (विशे०) होशियार। बुध=(सं० जा०) बुद्धिमान्। माना=अभिमान। तजहिं=छोड़ देते हैं।

गद्य—चतुर किसान। कृषी निरावहिं जिमि बुध मोह मद माना तजहिं।

पद्यार्थ—होशियार किसान खेती को इस प्रकार नराते हैं जैसे बुद्धिमान् लोग मोह, मद और अभिमान को त्याग देते हैं।

देखिय ········ पराहीं।

शब्दार्थ—चक्रवाक=(सं० जा०) चकवा पक्षी। खग=(सं० जा०) पक्षी। कलिहि=एक युग का नाम, कलियुग। पराहीं=दूर।

गद्य—चक्रवाक खग नाहीं देखिय जिमि कलिहि पाप धर्म पराहीं।

पद्यार्थ—चकवा पक्षी ऐसे नहीं दिखाई देता है जैसे कलि-युग को पाकर धर्म चला जाता है।

ऊसर ········ कामा।

शब्दार्थ—तृन=(सं० जा०) (तृण) घास। हिय=(सं० जा०) हृदय। कामा=(सं० भा०) विषयासक्ति।

गद्य—ऊसर बरसे तृन नहिं जामा, जिमि हरिजन हिय कामा न उपज।

पद्यार्थ—ऊसर भूमि में वर्षा होने पर भी घास ऐसे नहीं जमती है, जैसे भगवान् के भक्त के हृदय में विषयासक्ति पैदा नहीं होती है।

विविध ········ सुराजा।

शब्दार्थ—विविध=(विशे०) तरह तरह के। जन्तु=(सं० जा०) कीड़े-मकोड़े। संकुल=भरे हुए। महि=(सं० जा०)

पृथ्वी । भ्राजा=शोभायमान । सुराजा=(सं० जा०) (सु=अच्छा+राजा) अच्छा राजा ।

गद्य—महि विविध जन्तु संकुल भ्राजा, जिमि सुराजा पाइ प्रजा बढ़ैं ।

पदार्थ—पृथ्वी विभिन्न प्रकार के जीवों से भर कर इस प्रकार शोभित है, जिस प्रकार कि अच्छे राजा को पाकर प्रजा बढ़ती है और आनन्दित होती है ।

जहँ तहँ·········ज्ञाना ।

शब्दार्थ—पथिक=(सं० जा०) राहगीर, मुसाफ़िर । थकि=हारकर । ज्ञान=(सं० भा०) बुद्धि ।

गद्य—नाना पथिक जहँ तहँ थकि रहे जिमि इन्द्रियगण ज्ञाना उपजें ।

पदार्थ—बहुत से मुसाफ़िर जहाँ तहाँ थके हुए रह गये वैसे ज्ञान के पैदा होने से सब इन्द्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं ।

कबहुँ·········न साहिं ।

शब्दार्थ—प्रबल=(विशे०) प्रचंड, तेज़ । मारुत=(सं० जा०) हवा, पवन । मेघ=(सं० जा०) बादल । बिलाहिं= (क्रि० स०) छिप जाते हैं । नसाहिं=नष्ट होना ।

गद्य—कबहुँ प्रबल मारुत चल जहँ तहँ मेघ बिलाहिं जिमि कुल कपूत उपजें सम्पत्ति, धर्म नसाहिं ।

पदार्थ—कभी तेज़ हवा के चलने से जहाँ तहाँ बादल इस प्रकार छिप जाते हैं; जिस तरह कि कुल में कुपुत्र के पैदा होने से धर्म और धन दोनों नाश को प्राप्त हो जाते हैं ।

(पृष्ठ १७१)

कबहुँ·········कुसंग ।

शब्दार्थ—निविड़=(विशे०) घना, बहुत । तम=(सं० भा०) अँधेरा । पतंग=(सं० जा०) सूर्य्य ।

गद्य—कबहुँ दिवसमहँ निविड़तम कबहुँक पतङ्ग प्रगट जिमि सुसङ्ग कुसङ्ग पाप ज्ञान उपजै विनसै।

पद्यार्थ—कभी दिन में घोर अँधेरा हो जाता है कभी सूर्य निकल आता है जैसे अच्छी संगति को पाकर ज्ञान पैदा होता है और बुरी संगति को पाकर नष्ट हो जाता है।

वर्षा·······सुहाई।

शब्दार्थ—विगत=जाना, समाप्त होना। परम=(विशे०) बहुत। सुहाई=शोभायमान, सुन्दर।

गद्य—लक्ष्मण देखहु वर्षा विगत परम सुहाई शरद-ऋतु आई।

पद्यार्थ—श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी से कह रहे हैं कि हे लक्ष्मण देखो वर्षा-ऋतु के समाप्त होजाने पर बहुत ही सुन्दर शरद-ऋतु आई है।

फूले काँस·······बुढ़ाई।

शब्दार्थ—सकल=(विशे०) तमाम, समस्त। महि=पृथ्वी कृत=करती है। बुढ़ाई=बुढ़ापा।

गद्य—फूले काँस सकल महि छाई जनु वर्षा बुढ़ाई प्रगट कृत।

पद्यार्थ—फूले हुए काँस तमाम पृथ्वी पर छागये मानो वर्षा-ऋतु अपना बुढ़ापा प्रकट कर रही है।

उदित·······सन्तोषा।

शब्दार्थ—उदित=प्रकट होकर। अगस्त=एक तारे का नाम है। पंथ=रास्ता।

गद्य—अगस्त उदित पंथ जल सोखा जिमि संतोषा लोभहि सोखै।

पद्यार्थ—अगस्त तारे ने निकल कर रास्ते का पानी ऐसे सोख लिया है जिस प्रकार संतोष लोभ को दूर कर देता है।

सरिता ········ सोहा।

शब्दार्थ—सरिता=(सं० जा०) नदी। सर=(सं० जा०) तालाब। निर्मल=(विशे०) साफ़।

गद्य—सरिता सर निर्मल जल सोहा जस संत हृदय मद मोहा गत।

पद्यार्थ—नदी और तालाबों का स्वच्छ (साफ़) पानी कैसा सुन्दर लगता है जैसे सज्जन पुरुष का हृदय मद मोह के त्यागने पर लगता है।

रसरस ········ ज्ञानी।

शब्दार्थ—रस रस=धीरे धीरे। ममता=मोह। ज्ञानी=बुद्धिमान्।

गद्य—सरित सर पानी रस रस सूख जिमि ज्ञानी ममता त्याग करहिं।

पद्यार्थ—नदी और तालाबों का पानी धीरे धीरे सूख गया है जैसे बुद्धिमान् लोग मोह का त्याग देते हैं।

जानि ········ सुहाये।

शब्दार्थ—खंजन=(सं० जा०) एक पक्षी का नाम है। सुकृत=अच्छी करनी।

गद्य—शरद्-ऋतु जानि खंजन आये जिमि समय पाय सुकृत सुहाये।

पद्यार्थ—शरद् ऋतु को जानकर खञ्जन पक्षी आये जैसे समय पाकर अच्छे काम शोभा देते हैं।

पंक ········ करनी।

शब्दार्थ—पंक=कीचड़। रेणु=धूल। अस=ऐसे। निपुण=चतुर।

गद्य—न पङ्क, रेणु धरनी [illegible] नीति निपुण नृप की करनी।

पद्यार्थ—विना कीच और धूल के पृथ्वी ऐसी शोभायमान लगती है जैसे नीति में चतुर राजा की करनी।

जल..........हीना।

शब्दार्थ—संकोच=कमी होने से। विकल=(सं० भा०) व्याकुल। मीना=(सं० जा०) मछली।

गद्य—मीना जल संकोच विकल भये जिमि विविध कुटुम्बी धन हीना (होत)।

पद्यार्थ—मछली पानी कम होने से कैसी व्याकुल होती है जैसे अधिक कुटुम्ब वाला धन के न होने से होता है।

विन घन..........आशा।

शब्दार्थ—घन=बादल। हरिजन=ईश्वर का भक्त। परिहरि= छोड़कर।

गद्य—विन घन निर्मल अकाशा सोह जिमि हरिजन सब आशा परिहरि।

पद्यार्थ—विना बादलों के स्वच्छ आकाश कैसा शोभायमान लगता है जैसे ईश्वर के भक्त सब आशाओं को छोड़कर शोभा पाते हैँ।

कहुँ..........मोरी।

शब्दार्थ—वृष्टि=वर्षा।

गद्य—कहुँ कहुँ शारदी थोरी वृष्टि, जिमि कोउ एक मोरी भक्ति पाव।

पद्यार्थ—कहीँ कहीँ पर शरद ऋतु मैँ थोड़ी वर्षा हो जाती है जैसे कोई एक ही मेरी भक्ति को पाता है।

चले..........चारि।

शब्दार्थ—नृप=(सं० जा०) राजा। तापस=(सं० भा०) तपस्वी, संन्यासी। बणिक=(सं० जा०) बनिया, वैश्य, व्यापार करने वाले। भिखार=(सं० जा०) भिक्षा माँगने वाले, [illegible]री।

आश्रम=अवस्था, आश्रम चार हैं। (१) ब्रह्मचर्य्य, (२) गृहस्थ (३) वानप्रस्थ, (४) संन्यास।

गद्य—नृप, तापस वणिक भिखार नगर तजि हरषि चले जिमि जन हरि भक्तिहि पाइ चार आश्रमो तजहिं।

पदार्थ—राजा, योगी, वणिक और भिखारी ख़ुशी से नगर को छोड़कर चले। जैसे कि मनुष्य हरिभक्ति को प्राप्त होकर चारों आश्रमों के बन्धनों से छूट जाता है।

सुखी·········बाधा।

शब्दार्थ—नीर=पानी। अगाध=बहुत गहरा।

गद्य—मीन सुखी जहँ अगाधा नीर जिमि हरि शरण एकौ न बाधा।

पदार्थ—जहाँ अगाध जल भरा हुआ है, वहाँ मछली को सुख है, कि जैसे कि हरि की शरण में पहुँचकर (मनुष्य को) एक भी विघ्न बाधा नहीं रहती।

फूले·········जैसे।

शब्दार्थ—निर्गुन=निराकार।

गद्य—सर फूले कमल सोह कैसे, जैसे निर्गुन ब्रह्म सगुन भये।

पदार्थ—तालाबों में फूले हुए कमल कैसे शोभित हो रहे हैं। जैसे कि, निर्गुण ब्रह्म सगुनता को प्राप्त हुआ।

गुंजत·········रूपा।

शब्दार्थ—मधुकर=भौंरा। निकर=झुगड। अनूपा=अनोखा। रव=शब्द।

गद्य—मधुकर निकर अनूपा गुंजत। नाना रूपा सुन्दर खग रव।

पदार्थ—भौंरे बड़े सुन्दर गुंज रहे हैं। उसी प्रकार अनेक पक्षी भी सुन्दर शब्द बोल रहे हैं।